मिलन

"तूने बारह सौ देकर अपने बेटे की बहू खरीदी है, न कि अपने लिए जोरू।" धन्तो ने भी ससुर का सारा डर उतारकर कहा।

"जोरू तो तुम्हें मैं ही बनाकर रखूंगा, जब तक लड़का जवान नहीं हो जाता।"

लालची गरीब बाप और कामुक ससुर की यातनाएं सहती हुई एक ग्रामीण युवती की दर्दभरी कहानी।

पंजाबी के अत्यंत लोकप्रिय उपन्यासकार जसवंत-सिंह कंवल के प्रसिद्ध उपन्यास 'हाणी' का हिन्दी अनुवाद पहली बार पॉकेट बुक में प्रस्तुत।

विपरीत परिस्थितियों से जूझती हुई
एक ग्रामीण युवती की मार्मिक कहानी

-८ पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटि
० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

सिलन

जसवंतसिंह कंवल

मिलन

उपन्यास

प्रथम संस्करण : १६७६ ई०
अमित मुद्रणालय, शाहदरा, दिल्ली-११००३२ में मुद्रित
१२ प्वाइंट मोनो टाइप

© जसवंतसिंह कंवल, १६७६

यह पुस्तक प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना हिन्दी में किसी भी अन्य आकार-प्रकार तथा जिल्द में व्यापारिक ढंग से न तो बेची जा सकती है और न ही किराये पर चढ़ाई जा सकती है। इसी शर्त के साथ इस पुस्तक का विक्रय किया जा रहा है।

MILAN

SINGH KANWAL

मिलन

बैसाख के अन्तिम दिनों में गर्मी बहुत तेजी से बढ़ रही थी। सारी फसल खलिहानों में जमा हो चुकी थी और साहसी लोगों ने अनाज गाहने तक का सारा काम पूरा कर लिया था। वहां की हरियाली घास को जानवरों ने खेत खाली होने पर ही चुग लिया था। दूर तक खेतों में सिवाय सरसों की जड़ों के और कुछ दिखाई नहीं देता था। ये जड़ें भी सम्पन्न सरदारों के खेतों में ही रह गई थीं, क्योंकि उनको जलाने के लिए इनकी आवश्यकता नहीं थी। खुश्क खेतों में बगूले चक्कर काट-काटकर उड़ रहे थे। इन सरसों को कमीन जल्दी-जल्दी तोड़कर जलाने के लिए ईंधन इकट्ठा कर रहे थे। सूखा, बिना कांटों तथा तेल का अंश बच रहने के कारण, यह बढ़िया ईंधन समझा जाता है। तापी धीवरी के लिए यह ईंधन जिंदगी का बुनियादी सहारा था, जो भट्ठी में जलकर शर्बती गेहूं, आटा, रोटी, मीठी नींद और जीवन के लिए हिल्लोर बन जाता था।

तापी और उसकी जवान हो रही अकेली लड़की धन्तो, इस दुपहरी में इन जड़ों का गट्ठर बना रही थीं। मां-बेटी दोनों को नित्य यह हड्डियों को तोड़ने वाला काम करना पड़ता था। इसके बाद ही वे घर पर रोटी का प्रबन्ध करतीं। कटाई शुरू होने से लेकर अब तक मुर्गे की बांग सुनकर उठतीं। धन्तो चूल्हे पर आग जलाती और उसकी मां जीर्ण, गर्भवती भैंस और पिछले साल की कटिया को कुट्टी डालती और फिर उनका गोहर बाहर अंधेरे में ही थाप आती। इस बीच धन्तो चाय बनाकर अपने बापू किशने के सिरहाने को तरफ रख देती, जो जर्जर शरीर को समेटता हुआ, अफीम वाली डिबिया टटोलता। उसके बाल बिखरे होते और जम्हाइयां लेते हुए

वह दलित की मोमी मूड़ में बात लेता। बाद का मुंह भर
बार उसको दरअसल छोटा-सा बहुत दिखाई देने लगता। बोझे
के बाद बड़ा था जाने के कारण वह एक नये स्वर्ग में पा
पुरपुरी के साथ आकर वह अपनी बात कर पुरहा हो गया
अपने दुख के बातें करने लगता।

उधर दोनों मां-बेटी बांध के पूरे की ओर यदि रात की
गोरी अभी होगी, तब बाग के गांव जाकर दिन निकलने से
खेतों में पहुंच जातीं और बालियां चुनना आरम्भ कर देतीं। इ
सूरज चढ़ जाने के बाद तक वे सेत-मेंत बालियां चुनतीं
और पसीने होने पर वे घर वापस आ जातीं। घर पर बालें
दबाने में व्यस्त हो जातीं और ताशी ओढ़नी पर पैर औंधे द
किसान मोल दे जाता तो आग की गठरी में आता, नहीं तो
ब्राह्मण के यहां समाधि लगा देता। उसका वास्तविक नाम ताशी
उसके दिखने का कद लम्बा होने के कारण उसका नाम धीर
दिया था। शरीर और स्वभाव से मिलता एक बड़ी का नाम
अवश्य देते हैं, और बहुत बार गरीबों और कमीनों के नाम
नाम टूटकर अधूरे रह जाते हैं, जैसे ताशी को किसीने ताश
नहीं कहा था। ताशी भैंस और कटिया को नहलाकर बाहर
ले, नीम की छाया के नीचे बांध देती, यदि किसान थोड़ी-बहुत
दे आया होता, तो झाड़कर उनको डाल देती, जिसको अधि
पंचायत का साढ़ ही खा जाता था।

दूसरे फेरे के लिए वे दोनों रस्सी और दुसांगी उठाकर
लेने के लिए खेतों में वापस चली जातीं। शाम को धन्तो मट्ठी व
और उसकी मां बालियां चुनने के लिए एक ओर थककर लग
रात को दोनों मिलकर रसोई तैयार करतीं। कभी-कभी रो
खानी दूभर हो जाती, जब किसला बांहें उठा-उठा फोसा व
धूरता और शराबी बनकर गालियां निकालता। ये गालियां तो
रोज की बातें हो गई थीं। अभी तो भगवान की दया थी कि
पीट बन्द हो चुकी थी। ताशी में यद्यपि फीले से शारीरिक श
अधिक थी, फिर भी उसने एक भारतीय आज्ञाकारी पत्नी के स
कभी फीले पर सामने से हाथ नहीं उठाया था। परन्तु अचान

दिन न सहन हो पाया। उसने साहसी लड़कियों की भांति

को चुनौती दी, "बापू ! यदि मां को अब मारा, तो तू भी अपने किए का फल पाएगा।" बेटी को इस प्रकार मुंह पर बोलते देख फीला डर गया, क्योंकि शरीर से कमजोर होने के कारण वह जबरदस्ती नहीं पीट सकता था। लेकिन तापी की भांति लड़की भी उसके मन से उतर गई। सिवाय नदी और अपने चन्द लंगोटिया यारों के उसकी असली दुनिया बहुत छोटी हो गई थी। इस प्रकार मां-बेटी की घर में ज़िन्दगी मुर्झाई और ऊबड़-खाबड़ मार्गों पर ठोकर खाती व्यतीत हो रही थी। फिर भी आसमानी धूप उनको जला न सकी, धूल जीवन की गति में थोड़ा-सा भी अन्तर न डाल सके; परन्तु यही धूप रात को बुखार बन जाती और धूल आत्मा को बींध देते।

दुःख जीवन का गला घोंट देने के बावजूद भी उसको मार नहीं सके। मेहनत दुःखों के मुंह पर थप्पड़ मारती है और उनसे जीवन की रक्षा कर, उसको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। वह जीवन के विकृत मुंह को चूमकर उसको ऐसी शक्ति देती है जो समय से पूर्व आई मृत्यु को परास्त कर सके। तापी ने अथाह परिश्रम से एक पौधा सींचा था और अब वह चाहती थी कि उसकी शीतल छाया में कुछ सुख की सांस ले सके, जो कि उसके भाग्य में नहीं था। फिराने के नशे में मौत जैसी सलकी हुंकार रही थी और तापी के नदी में जिन्दगी की वास्तविक सुगन्धी महक रही थी। वह जहां तक सम्भव होता, धन्तो को तंग न होने देती और उसका हर प्रकार से ख्याल रखती; परन्तु इसके विपरीत धन्तो समझती थी कि मेरी मां ने सारी उम्र नरक भोगा है, मैं उसको कुछ तो आराम पहुंचाऊं। मां-बेटी में परस्पर सहेलियों जैसा प्यार एवं सहानुभूति और भले पिता तथा सुशील पुत्र जैसा सुन्दर सहयोग बना हुआ था।

दाहिनी तरफ से रेल के इंजन ने विसल दी, बड़ोदास गांव से स्टेशन थोड़ी ही दूरी पर था। तापी ने सिर उठाकर सूर्य की तरफ देखा—दोपहर जवानी के रौंक में जल उठी थी। लगभग इसी समय वे घर को लौट जाती थीं। तापी ने धन्तो की ओर देखा और धन्तो ने तापी की ओर, जैसे दोनों ने कहने वाली बात को समझ लिया हो।

"रास्ते वाले नल से पानी न पी आएं ?" चलने से पूर्व तापी को प्यास महसूस हुई।

"हाँ, प्यास तो मुझे भी लगी है।" धन्तो ने हाथ वाली व को ढेरी पर रखते हुए कहा।

ये शीशम के नीचे लगे हुए नल की ओर चल पड़ीं, जो (अभागे सरदार ने पुण्य के लिए मार्ग में यात्रियों के लिए लगवा छो था। तापी ने हाथ में शिवजी के त्रिशूल की भांति दुमांगी पक हुई थी। दोनों ने शीशम के पेड़ के नीचे थोड़ी देर आराम किय गाड़ी कोलाहल करती पास से गुजर गई। धन्तो को छीवियों वह प्यारो याद आ गई, जो गतवर्ष गाड़ी के नीचे आकर कट थी। प्यारो यद्यपि धन्तो की सहेली नहीं थी, फिर भी वह उस दुःखों से भली भांति परिचित थी। प्यारो का नाम भी किसी दिन ही रखा गया था, क्योंकि उसे लाड़ और प्यार किसी ओर प्राप्त नहीं हुआ था। उसकी छोटी उम्र में ही मां मर गई और ब ने घर बेचकर उसका विवाह कर दिया था; परन्तु ससुराल ज पर भगवान जाने उसका हर प्राणी क्यों बैरी हो गया! स्वामी अ अल्पायु का था और ननद-सास ने मिलकर उस मातृहीन प्यारो यह बुरा हाल किया कि दो वर्ष के पश्चात् ही प्रतिदिन की मार पीट से बचने के लिए उसने गाड़ी के नीचे सिर दे दिया। धन्तो प्यारो को गाड़ी से कटी स्वयं अपनी आंखों से देखा था। उस कटी बाईं बांह में अभी तक सुहाग की दो चूड़ियां टूटने से बच थीं और जो बिलकुल मकेद हो चुकी थीं। धन्तो प्यारो की मौत बहुत रोई थी। अब भी उसको याद करके उसका मन भर आता उसने मन ही मन अपनी मां की ओर देखा। फिर उसे लगा कि उसकी मां जीवित है या उसकी रक्षा प्रत्येक दुःख और कठिना से करेगी। तापी ने मुंह धोया और शान्ति से पानी पिया। उसे देखने से प्रतीत होता था, जैसे वह चालीस वर्ष की आयु में भी बी युवती हो।

"धन्तो! जल्दी पानी पी ले, फिर चलें।" तापी ने मन (बैठे ही बैठे पुकारा।

धन्तो उठकर नल के नीचे आ गई। पानी पीने के बाद उसने अपने मुंह पर छींटे मारे और चुनरी के हल्के अंगूरी आंचल से अप चेहरे को रगड़कर पोंछा। तापी ने देखा कि उसकी लड़की का रं कहीं भी ऐसा नहीं रहा, बल्कि गेहूं की भांति अब उसके चेहरे पर झलक रही थी। अब उसके बचपन के दाग भी भर गए थे। धन्तो

को छोटी आयु में जब माता निकली तो तापी ने बड़ी मिन्नत से उसको देवी से वापस मांगा था। जब तक धन्तो को पूर्ण आराम न आया, तापी गर्दभ को मातारानी के वाहनस्वरूप नित्य जौ डालती रही। उसको धन्तो पर बहुत गर्व था, जैसे वह उसको जन्म देने वाली ही नहीं, बल्कि जीवन देने वाली देवी भी है। वह अपने मस्तिष्क में कितनी तरह की उम्मीदों को जवान होते और धन्तो को जिंदगी के सारे सुखों से भरपूर देखकर ही कल्पना में मुस्करा उठती। कम से कम वह अपने हृदय में यह दृढ़ निश्चय कर चुकी थी कि वह अपनी बेटी को बुरी जिंदगी में नहीं पड़ने देगी। तापी अठारह वर्ष की थी, जब उसको चौंतीस के विधुर किशने के साथ बलात् बांध दिया गया था। तापी के बाप ने उससे पैसे लिए थे, इसी धौंस के कारण ही तापी का किशने के सम्मुख सारी उम्र सर नहीं उठा था।

"मां! कारा आ रहा है।" धन्तो ने राह पर आते एक राही को पहचानकर स्वाभाविक रूप से कहा।

"अरे, यह मुआ इतनी दोपहरी में कहां से ?" तापी ने माथे पर हाथ रखकर देखते हुए कहा, "न जाने कहां से लपाता-बुझाता आ रहा है! यह तो मरकर भी भूत बनेगा।"

धन्तो की बरबस हंसी छूट गई।

कारा, जिसका वास्तविक नाम करतारा था, किशने से अपनी पगड़ी बदलकर भाई बना था। यहां गांव से उसका गांव पमाल लगभग दो मील दूर था, किंतु अकेला होने के कारण वह अपने यार किशने के पास देर-सवेर चला आता। आयु में वह अपने यार से भी चार-पांच वर्ष बड़ा था, लेकिन उसने तापी का देवर बनने के संघर्ष को अभी छोड़ा नहीं था। उसकी यह तीव्र अभिलाषा थी कि तापी उसको एक बार देवर कह दे, वह उसपर अपनी जाट वाली सारी शान निछावर कर देगा। यद्यपि उसकी जाट वाली शान थी ही नहीं, क्योंकि उसकी मां को एक जाट अमावस के मेले से खिसकाकर ले आया था और कारा उस समय उसकी गोद में था। अब यह कोई नहीं जानता था कि कारा वास्तव में जाट का लौंडा था, परन्तु कारा स्वयं को जाट ही समझता था। छोटी आयु में उसको 'हरामी' या अन्य कोई गाली निकालकर बुलाया जाता था और बड़ा होने पर भी गांव में उसका कोई ढंग का दोस्त न बन सका था। जवान होने तक वह इस हरामी वातावरण से तंग आ गया और फौज में

भर्ती हो गया। फौजी वर्दी में भी उसको किसीने हंसकर न बुलाया था और न ही किसी युवती से उसने आंख मिलाने का सा किया। जब तक मिल्कियत की जमीन न हो, विवाह का नाम नहीं लिया जा सकता था। मन में उकताया हुआ, वह कई-कई छुट्टी में भी गांव नहीं आता था। फौजी नौकरी के बीच ही उस मां और बाप थोड़े-बहुत दिनों के अन्तर से इस संसार से चल ब थे। उनकी मौत से उसको रत्ती-भर अफसोस न हुआ। शायद उस पुराने बीमार मन ने आसानी से सांस ली हो कि शायद हो सक है कि इस 'हरामी' वाली लानत से अब वह मुक्त हो जाए; लेकि यह लानत ऐसी थी जो उनकी मौत के बाद भी मरना नहीं चाह थी। वह फौजी नौकरी पूरी कर, पेन्शन लेकर घर वापस आ गया उसने कई सम्बन्धियों की आवश्यकताओं को पूरा किया, कई लोगों के काम भी आया, फिर भी उसको आंट मानने के लिए कोई तैया न हुआ और न ही दिल से उसे अपना भाई समझा। उसने हर कद पर सोचा था, यह दुनिया कितनी निर्दयी है—पाषाण-हृदय लोग, जिनपर न तो प्रार्थना का असर पड़ता है और न ही सेवा का। फिर वह पक्का ढीठ हो गया। उसके दिल और दिमाग ने सब बातों को स्वीकार करना ही छोड़ दिया। उसके मन में कभी-कभी प्रतिकार की भावना जाग उठती और कमजोर दिल से भी वह अपने विरोधी वातावरण पर जवाबी हमले आरम्भ कर देता।

कारा सिंह के का हृदय से बहुत कृतज्ञ था, जिसको उसने उसके प्यार की ठाट्ठेदारी के आधार पर अपना दोस्त बनाया था, और शराब के नशे में ही उन्होंने अपने साफे बदल लिए थे। फिर कारे ने दोस्ती के इन कच्चे धागों को अपने सद्‌व्यवहार से रेशम की पक्की डोरी बना दिया था। आज वह अपने ऊपर गर्व कर सकता था कि उसके पास दोस्त है, मां-जाया भाई तथा सारी जैसी भौजाई है।

जब कारा ताबी के पास शीशम के नीचे आया, तभी ताबी उसको अपना जेठ समझकर थोड़ा घूम गई और थोड़ी घूंघट से ओट कर ली। बस, इतनी बात से ही कारे का दिल जलकर राख हो गया। जला-भुना तो वह पहले से ही रहता था। उसने किसी प्रकार की चोट खाने से पूर्व हमदर्दी बतानी ही ठीक समझी और बोला, "एक ही मेरी भाभी है, क्यों दोपहर में धुआं झोंकती है? उस काटे बाजी जगह क्यों ढूंढ़ा?"

कारे ने जब सिर से पगड़ी उतारी, अन्दर से चांद निकल आई। उसकी दाढ़ी एक मुट्ठी और दो उंगल लम्बी थी, वह भी ठोड़ी पर ही, जिसमें काला बाल मुश्किल से ही रह गया था। ब्याह की बात सुनकर अन्तो जलाने की लकड़ियां चुनने लगी और तापी ने क्रोध दबाते हुए कहा, "तुम्हें जेठजी, बीस बार कहा है, सौंकिया के सामने ब्याह की बात मत छेड़ा करो।"

"बस, तू 'जेठजी' कहने से न मानी! अब लड़की चाचा कहने पर राजी है, तुझे क्या एतराज है?"

"तुझे मालूम है, तेरा सिर कैसे गंजा हुआ है?" तापी घूंघट में हलका-सा मुस्करा पड़ी।

"देख, सौ गुरु की, तू एक ही भाभी है, जूते मार चाहे फूल, मैं तेरा हाथ नहीं रोकूंगा। साहब का हुक्म था, अपने बड़े के सामने अटेन्शन रहो।" कारा अटेन्शन होने की तैयारी में था।

"फिर तू पहले उलटी बातें क्यों करता है!" तापी थोड़ी नरम पड़ गई।

"फिर तू सीधी भी समझे!" कारे ने जानकर एक ठण्डी सांस ली। "भगवान सबका है, लेकिन साला मेरा ही नहीं।"

"तुझे अपनी दाढ़ी तो नहीं दिखाई देती होगी!" तापी भीतर ही भीतर मुस्करा रही थी।

"तू मुंह से फूट तो सही, दाढ़ी मिनटों में काली हो सकती है।"

"अगर मैं दुसांगी तेरे गले में फंसा दूं, तो सांस लेना मुश्किल होगा। या तो मुझे मत बुलाया कर, नहीं तो सीधी नीयत से बात किया कर।" तापी ने घूंघट से उसे घूरा।

"मेरी नीयत भाने से बुरी है?" कारा कहने से बाज न आया, जबकि वह जानता था कि तापी उसका नाम लेने से खीझ उठेगी।

"खड़ा तो रह डूब मरे, तुझे गोली लगे, जहान से जाता रहे!" तापी गुस्से में उठकर खड़ी हो गई और उसने दुसांगी उठा ली।

"जहान से तो हमने जाना ही है।" कारे ने पगड़ी उठाकर उसी प्रकार अपने गंजे सिर पर रख ली और बिना घर गए ही लौट गया।

तापी को पहली बार ही गुस्सा नहीं आया था; परन्तु जब भी कारा अकेला मिलता, बात बनाने से बाज न आता और हमेशा बात गाली-गलौच पर ही आकर टूटती थी। ठुमक-ठुमक जाते कारे को देखकर तापी से हंसी न रोकी जा सकी।

२

उसी सप्ताह बृहस्पतिवार को ख्वाजे के लिए बलि देनी थी
पहर तक माना भी आ गया। माना किशने की बुआ का लड़का
के कारण किशने का भाई था। वह चार वर्ष का था जब उसक
मर गई, और वह छोटी अवस्था से ही अपने मामा अर्थात् किश
बाप के पास अपनी ननिहाल में पला। शरीर से हृष्ट-पुष्ट होन
कारण उसका बचपन से ही कीले पर दबाव बना था रहा
कीला अयोग्य था और अपनी गलतियों के कारण एक-दो बार
माने से पिट भी चुका था। माने ने घर पर हमेशा तापी की हिमा
की थी और तापी के लिए वह ससुराल में एक ही हमदर्द था, जिस
वह अपना दु:ख-सुख बतला सकती थी। यह बात किशने
अन्दर से चुभती थी, लेकिन वह कर कुछ नहीं सकता था। मा
समझता था कि यह घर तापी की बरकत और मिहनत से ही च
रहा है। मैली नजरें उसको मैले रूप में ही देखती थीं। जब किश
के बाप की मौत हुई थी, माना घर में सबसे अधिक रोया था। व
समझता था कि मामे की वजह से ही रिश्तेदारी थी, परन्तु उस समय
तापी ने ही उसको सहारा दिया और आज तक वही धैर्य परस्प
सम्बन्धों की साझेदारी चलाता आ रहा था। कोई भी दिन-त्योहार
मनाना होता, माने को उसके गांव गालब सन्देशा भेजा जाता।
अपनी कबीलेदारी बड़ी हो जाने के बाद भी वह कभी न रुकता।

बकरा बनाने और बढ़ने तक का सारा काम उसने अपने हाथों
से ही किया। घर में शराबी और अफीमी किशना एक तरह इस नेक
काम के लिए अयोग्य ही समझा जाता था, चाहे वह औरों को
कितनी ही ईमानदारी दिखाता। भोग के लिए पहली कड़छी ख्वाजे
के लिए कुएं में डाली गई, जहां पर कभी किशना और उसके बड़े-बड़े
जाट सरदार पानी भरा करते थे। अब वह कुआं प्रयोग न होने के
कारण टूट-फूट गया था। अब लगभग सभी घरों में हाथ वाले नल
लग चुके थे और किशने का पानी भरने का काम समाप्त हो चुका
था। ख्वाजे की भेंट के बाद बकरा लोगों में बंटना आरम्भ हो गया।
किशने ने भी कमण्डलु भर लिया और अपने यार जगने पंडित के
आगे रख दिया। ऐसे स्वर्ण अवसर पर कारा कभी गैरहाजिर नहीं
हुआ था।

"कारिया ! देख ले, हमारा धर्म भ्रष्ट करने के लिए फीले ने शिवजी की गद्दी पर मांस ला रखा है।" जगना दिल से बेहद प्रसन्न था और मसालेदार खुशबू सूंघकर उसके मुंह में पानी भर गया था।

"अरे पंडितजी, यह मांस थोड़ा है, यह तो हुआ महाप्रसाद—शिव का विशेष खाजा।" कारे के मुंह से लार टपक रही थी।

"साला शिवजी का, खाता है कि तेरी जगह कुत्ते जीमें ? कैसे नखरे कर रहा है !" फीले ने आगे बढ़कर कमण्डलु जा पकड़ा।

"रुको-रुको, क्या करते हो ? इस तरह भोलेनाथ नाराज हो जाएंगे। देवता को भेंट चढ़ाकर, उसको वापस ले जाना घोर पाप है—सर्वनाश हो जाएगा।" बायें हाथ से जगने ने फीले की बांह पकड़ ली। उसका दायां हाथ जनेऊ पर उलझा हुआ था। फीला भी उसका दिल देख रहा था।

"पंडितजी, यह सूखा मांस कैसे अन्दर पहुंचेगा ?" कारे ने जल्दी ही शराब की नई मांग सामने रख दी, जो मांग पुरानी भी थी और सभीके मन की भी थी। "सां'ब कहा करता था, मीट का शराब से मेल है।"

"भाई करतारसिंह, तू है तो लुट्टस पैसा, लेकिन बात लाख रुपये की करता है। भोलेनाथ की भी दया सोमरस के बिना नहीं प्राप्त होगी।" जगना बिना पिए, पियक्कड़ों की तरह सिर हिला रहा था।

"शिवजी महाराज को तो एक-आध घूंट से ही प्रसन्न करेगा, मगर उसके मोटे भगत को पूरे बोतल के बिना तृप्ति नहीं होगी।" फीले के साथ कारे की भी हंसी निकल गई।

"भोलेनाथ को भोग लगाकर उसके ब्राह्मण को प्यासा मार दोगे ? तुम्हारी बलि सफल हो भी !"

"कमण्डलु मुंह तक भरकर महाप्रसाद तुमको ला दिया है, आगे तुम्हारा काम जाने।" फीला इतना कहकर स्वयं को बरी समझने लगा।

"कारिया ! फीला तो भाग लिया।" पंडित ने चुस्ती से कारे को टटोलना चाहा।

"पंडितजी, अब पास दमड़ी नहीं। हां, जब पेन्शन आएगी, तुम्हें भी पता है, खतम नहीं होगी।"

जगना स्वयं को फंसा देख चतुरता से काम लेने लगा; जैसा वह पहले भी लिया करता था। वह यारों में बहुत कम मार खाता था। ऐसे अवसरों पर वह कारे या फीके को ताड़ लिया करता था।

"अब कारे, तू भी उल्लू है। खुशी का दिन हो फीके के यहां और पिलाएं हम! ऐसा भी कोई बेवकूफ होगा?"

"बात तो पंडित, तुम्हारी ठीक है।" कारा बात के चक्कर में जगने की हिमायत कर गया, लेकिन वह दिल से फीके को बचाना चाहता था।

"भइया, मेरे वश की बात नहीं, मेरा क्यों घर पर झगड़ा करवाते हो?" फीका एक तरह से हथियार फेंक रहा था।

फीके की बात जगने ने छूटते ही पकड़ ली, "पहले तेरे पास कौन-सा धन पड़ा था! जिन्दा रहे तेरी नारी—गर्मी-सर्दी उधार वापस करने वाली।" ब्राह्मण खरी चुस्ती दिखा रहा था। 'अबे ओ कारे, जरा बढ़िया मसालेदार ले आ। जीभ पर लगते ही लो की तरह चढ़े।"

कारा चार रुपये लेकर देसी शराब लेने के लिए भाग लिया। बेशक जगना ऐबी दुकानदार था, परन्तु पैसे दर्ज करने में पूर्ण चतुर था। उसने झट बही खोली और मुण्डी में 'चार' डाल दिया। हिसाब में वह बनियों की तरह हेरा-फेरी में पूर्णतया निपुण था। उसकी दुकान पर ग्राहक भी ऐसे ही आते थे, जिनको कोई अन्य दुकानदार सहन न कर पाता था। उसका एक इकलौता लड़का था जो गांव से बाहर कहीं खाता-कमाता था और जिसकी जगने को कोई फिक्र न थी। अब घर में केवल पंडित और पंडिताइन ही थे। पंडिताइन यज-मानी भी कर लेती थी, परन्तु जगने को इसमें कोई रुचि नहीं थी। उसे ब्राह्मणत्व एक तरह से भूल चुका था। वह अपनी बुरी आदत के कारण यारों से भी बेईमानी करने पर विवश था, जो नशे की झोंक में उसे बुरी तरह तोड़ती थी। धीरे-धीरे उसकी आत्मा रोगी हो गई।

जगना शिवजी का भगत था। भोलेनाथ के स्मरण में लगाई समाधि के लिए, बहुत पहले एक साधु भांग भेंट कर गया था। युवा अवस्था से चलकर वह नशा शराब, अफीम और गांजे तक पहुंच गया था। निस्सन्देह वह शरीर की तरफ से छंटाक-सा था, परन्तु हर प्रकार से तीखा और चुस्त था। पचपन वर्ष की आयु तक वह

त्येक नशे में निपुण हो गया। दुकान भी उसने अपने नशे को पूरा रने के लिए ही खोली थी। जब खाने-पीने का समय आता, वह कान बन्द करके पीछे के सहन में आ जाता। ये दुकान और सहन सने किराये पर ले रखे थे, परन्तु उसका अपना घर गाव के दूसरी ोर था।

किशना, जो पक्की तरह से फीला बन चुका था, कब का खाट डालकर सहन में आ पड़ा था। धूप कोठे की आधी दीवार तक रह गई थी और वह बातों-बातों में छज्जे तक चढ़ती आ रही थी। फीला कभी जाटों का कुआ लगाने में बढ़िया कारीगर समझा जाता था। कुआं लगाने वाला कार्य बुद्धि के साथ शक्ति भी मांगता था, जो फीले के पास पहले भी कम थी। काम के ज़ोर में वह साथियों के कहने-सुनने पर अफ़ीम खा लेता, जिसको खाने के बाद बल आ जाता। पकी उम्र में उसका दूसरा विवाह हुआ था। उस समय उसको अफ़ीम की पूरी तरह आदत नहीं पड़ी थी, परन्तु सुन्दर नारी को जवान दिखाई देने के लिए भी वह अफ़ीम का प्रयोग करता रहा। धीरे-धीरे उसकी यह आदत बढ़ती गई और अफ़ीम ने फीले को परास्त कर उसे अपना मुरीद बना लिया। समय-समय पर वह अन्य नशों द्वारा भी अपनी आवश्यकता पूरी कर लेता था।

"कारा तो कहीं जाकर मर गया।"

जगने की आवाज़ ने फीले को सचेत कर दिया। जगने के लिए महबूब के देर कर देने वाली अवस्था पैदा हो गई थी।

"अबे, मुझे कभी तो ज़िन्दा समझ लिया करो!" कारा झट तख्तपोश की ओट [illegible] निकल आया। "भगवान ने तो मारने में कसर नहीं उठा रखी।" वह यारों की यारी में स्वाद उधार ले-लेकर ज़िन्दगी को धोखा नहीं तो लारा अवश्य दे रहा था। उसने फेंट [illegible] बोतल निकालकर छलकाई।

"तू बेटा, युग-युग जीयेगा। जिसपर भोलेनाथ का हाथ हो, उसका कौन बाल बांका कर सकता है!" बोतल देखकर जगने के मुंह पर सुर्खी आ गई थी। पीने के लिए सारा सामान तैयार था। ब्राह्मण ने गुरु की हैसियत से सबसे पहले घूट भरा और धरती को सुरा की बूंदों से नमस्कार करते हुए कहा, "ओ३म्⋯!" जगने ने गिलास मुंह से लगाया और गट-गट करके उसे खाली कर दिया।

"साला! पाखंड भी करता है!" फीला कहने से बाज न आया।

उसने अपना जाम भरा और झट डकार लिया।

"शिवजी का नाम लेने से पाप कम होते हैं और वैकुण्ठ के [illegible] खुलते हैं।" जगना ने साफा उतारकर रख दिया और लम्बी [illegible] को उंगली पर लपेटने लगा। दूसरे हाथ से वह कमण्डलु में [illegible] ढूंढ रहा था।

"अरे, चाहे वैकुण्ठ में जा बैठना, पर हमारी तरह का मूर्ख तुम्हें वहां भी नहीं मिलना।" कारे ने ब्राह्मण के सिर पर एक [illegible] सा हाथ जमाते हुए कहा। जगने ने अपनी बारी खतम कर [illegible] कारे के आगे रख दी।

"सालो, सौ नरक ढूंढ लो, मुझ जैसा गुरु भी तुम्हें [illegible] मिलना।" जगने ने गिलास सीने पर मारा।

"तू अपने को ब्राह्मण कहता है! जब हमने नरक से बोतल [illegible] काई तो देख लेना, तेरे वैकुण्ठ वाले मधुमक्खियों की तरह [illegible] नाप-नापकर गिरेंगे।" नशा कारे की नस-नस में समा गया था।

"तुम्हें नरक में कौन पीने देगा?"

"और क्या स्वर्ग में पीने देंगे, जहां आप नाम ही जपता है!" फीसे ने कमण्डलु जगने के सामने से हटा लिया।

सूर्य कभी का छिप चुका था। गुरुद्वारे के गजर के साथ मन्दिर का शंख भी बोल पड़ा। जगने ने 'शिव ओ३म्, शिव ओ३म्' और कारे ने 'वाहे गुरु, सतनाम' पुकारा। उनको शराब और मौत की डकारें आ रही थीं तथा वे अपनी श्रद्धा के अनुसार पवित्र होने का [illegible] यत्न कर रहे थे। फीसा चुपचाप उनकी करतूत देखता रहा। पीते खाते और मच्छें हांकते उन्होंने काफी अन्धेरा कर दिया। उन्होंने घूंट घूंट में दो बोतलें खाली कर दी थीं। माना भी फीसे को [illegible] गया। कारे ने कमण्डलु खाली करके पूछा, "भाई मानसिंह! [illegible] शराब और है?"

"वह तो सभी बांट दिया था।" माना इनकी महफिल खत्म करना चाहता था।

"मैंने तो एक-आध घूंट चखी है, बाकी वह जाने…।" कारे [illegible] बात भी पूरी न हुई।

"मुझे कमण्डलु का जाने वालों का पेट दिखाई देता है।" [illegible] की बात पर सबको हंसी आ गई।

"भाई, तू भी पी।" कारे ने माने को बांह पकड़कर खींचा।

कारे

"नहीं, तुम उठो और खाना खा लो।"

"नहीं भाई, तेरे दिल में गुस्सा है।" कारे को अपने अन्दर का मारता था।

माना समझता तो सब कुछ था, किन्तु कारे को शराबी जानकर र गया। फीले ने उसको हाथ का इशारा करते हुए कहा, "तू ानू ! हम अभी आते हैं।"

माना चला गया। उसके जाने के बाद कारा माने की काटने बातें फीले को बतलाने लगा। क्रोध फीले के अन्दर पहले से ही उसको बाहर लाने के लिए कारे ने खोद-खोदकर मार्ग बना । जब वे जगने की दुकान से उठकर अपने घर के दरवाज़े पर कारे ने शराबी फीले की बांह पकड़कर रोक लिया। अन्दर और माना इन दोनों के सम्बन्ध में बातें कर रहे थे।

"अच्छे-अच्छे रिश्ते मेरे हाथ में हैं, तुम लड़की को कुएं में मत देना।" माना लापी को समझा रहा था।

"तेरा भाई तो चुप ही रहता है। यह कारा-हत्यारा बातें बनाने ज नहीं आता।"

"मैं भी भाई के मुंह को देखता हूं। इस कारे ने हड्डियां मुझसे ुड़वानी हैं।"

"ले भइया, मैं तो जाता हूं।" कारे का एकदम नशा हिरन या। "मेरे से अब हड्डियां नहीं तुड़वाई जातीं। पहले पता होता स तरह पगड़ी बदलकर भाई न बनते।" पगड़ी बदलने वाली कारे ने जानकर फीले के गुस्से में आग लगाने के लिए कही थी। फीले के भीतर जल रही अग्नि में घृत पड़ गया। वह कारे का खींचकर अन्दर ले गया और घुसते ही बोल पड़ा, "यह घर तेरे से मे आता है कि मेरे ?"

"तू ऐसी बातें करेगा तो मैं जाता हूं।" कारे ने स्वयं को सच्चा ाते हुए कहा।

"नहीं, मैं तुझे नहीं जाने दूंगा।" फीला एक तरह से उबल पड़ा।

माना फीले की गुस्सैली आवाज़ फौरन ताड़ गया। उसने धीरज ाम लेना ठीक समझा। "क्या मैं इस घर को अपना घर नहीं झ सकता ?"

"नहीं।" फीले के मुंह से स्वाभाविक ही निकल गया; परन्तु दिल से यह बिलकुल नहीं कहना चाहता था।

माना जानता था कि फीला ऐसी बात नहीं [illegible] सकता। अवश्य कारे ने कुछ सिखाया है। फिर भी उसने दूर की सोच बात को टाल दिया। "तू तो शराबियों वाली बात करता है।"

पन्तो अभी सोई नहीं थी। तीखी और गर्म बातें सुनकर खाट पर उठ बैठी। नानी के हृदय में फीले का 'नहीं' शब्द तरह गड़ गया। उसने हमके से गुस्से में कहा, "रोटी खानी लोगों को तमाशा ही दिखाना है?" उसने रोटी पहले ही पर थी और अब थाली फीने की खाट पर रख दी।

फीले ने थाली उठा ली और कारे के पकड़ते-पकड़ते मारी। "मैंने रोटी नहीं खानी, सूअर की बच्ची! जब तक मेरे को भाई नहीं समझते।"

"मैं तेरा भाई नहीं लगता?" इस बार माने को भी गुस्सा गया।

"नहीं, तू तो और भी कुछ लगता है।" मालूम नहीं कैसे आज कैसी चढ़ गई थी! माने के साथ तापी और पन्तो भी थीं।

माने का गुस्सा तन्दूर की तरह जल उठा। उसके दिल आवाज आई कि इन दोनों की पिटाई करके यहां से चला जा। अपनी चतुरता के बल पर इस बीच बोल पड़ा, "भइया! [illegible] शराबी है, तुम ही चुप कर जाओ।"

"देख रे, भइया के कुछ लगते! तू बाज आ जा। यह बता, हमारे साथ रिश्तेदारी काहे की है?" माने ने कारे पर सीधा किया।

कारे के जवाब देने से पहले फीला बोल पड़ा, "यह मेरा बदलने के कारण भाई लगता है।"

"इसे आज ढंग से ही भाई बना लूं।" माने ने कोने में डुगांग उठा ली। कारा डुगांग देखकर तुरन्त बाहर भाग लि तापी ने माने को रोकने की कोशिश की, लेकिन वह रुका उसने गली में आकर देखा, कारा कहीं नहीं था और गली अन्धे भरी [illegible] थी। जब कारा गांव से बाहर आया तो उसका रोना [illegible] गया। वह सोच रहा था कि मैंने जिसको भी अपना भाई बनाने प्रयत्न किया, वही मेरे मुंह पर थूक गया। जी करता है कि पैदा करने वाला मिल जाए, तो मैं भी उसके मुंह पर थूक दूं। [illegible]

स जीने में क्या पड़ा है ! और वह सबेरे तक रोते-रोते ही गया।

घर में फीले ने शोर डाल रखा था।

"मेरे भाई को मार डाला, उसे घर से बाहर निकाल दिया ! रह ! मेरा साफा-बदल भाई !" फिर उसने रोना शुरू कर दिया, "मैं मर जाऊंगा, तुम सबको आग लगाकर फूंक दूंगा। लोगो ! सुन लो, इन्होंने मिलकर आज रात को मुझे भी निकाल देना है।"

"करता है चुप कि नहीं ?" माने ने दुसांग फीले के सीने पर रख दी। फीला एकदम डरकर बेहोश हो गया। ऐसा लगता था कि दुसांग थोड़ा-बहुत दबा देने से वह मर जाएगा।

जब वह चुप हो गया, माने ने जाने के लिए चहर उठा ली।

"तू भी पागल हो गया है !" तापी बिलकुल घबरा गई थी।

"बाबा !" बन्तो भी रो पड़ी।

"बस बेटी, ठीक है।" माने ने लम्बी सांस ली और भारी मन से लड़की के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "भाई ने मुझे इस प्रकार पहले नहीं कहा था।"

"इसने अपने को बड़ा समझकर कह लिया था। तुम ही जाने दो।" तापी उसकी मिन्नत कर रही थी।

फीला खाट पर पड़ा चुपचाप सब कुछ देखता जा रहा था। उसके मन की गुस्सैली अवस्था अब मन का भार हलका कर शांत हो चुकी थी। वह महसूस कर रहा था कि उसने ठीक नहीं किया, किन्तु वह मुंह से कुछ नहीं बोला। वह यह अवश्य चाहता था कि कम से कम माना जाए नहीं। हां, अगर वह उठकर बांह पकड़ लेता तो शायद माना रुक जाता, लेकिन फीले से तो उठा तक नहीं जाता था और वह अन्तिम समय तक भी न बोल सका; परन्तु माना तापी को राह से हटाते आगे चल पड़ा।

फीले को फिर रोना आ गया। तापी ने खाट पर गिरते हुए कहा, "कराजा पीर ! तूने हमारे साथ क्या ऐसा ही करना था !"

३

जैसे ही बन्तो ने अपनी सहेली बीरो को घास की गठरी उठाए हुए देखा, उसके घावों में लाल गुलाब महक उठे। पल-भर के लिए वह भुनते हुए चनों पर हाथी फेरती भूल गई। मुफ्त चनों का मुंह

फाड़-फाड़कर बाहर आ रही थी। उसने आती बीरो की तरफ
ऊंचा किया और जलते चनों को दलने लगी। बीरो पास आ
रुक गई। धन्तो ने दाने भट्ठी से बाहर निकालते हुए कहा, "
बीरो ! तू मर ही जाए, ऐसी निर्मोही !"

"मुझे घास बेच आने दे, फिर तेरी खबर लूंगी।" बीरो तो
रोकते चली गई और साथ ही हाथ हिलाकर तसल्ली देती गई।

बीरो गांव के कमेरों की लड़की थी। एक-आध साल ही अभी
बड़ी होगी। पक्का काला रंग, मोटी काली आंखें, जंगली हिरन
तरह तीखे-काटते नक्श, जिनमें जवानी का पूर्ण आकर्षण भरा
था। ऐसे ही आकर्षण से मोहित होकर धन्तो ने जी० टी० रोड
शीशम के नीचे बीरो को रोक लिया था। उसने लकड़ियों की गठ
नीचे रखकर और घास पर बैठते लम्बी सांस लेते हुए कहा।
'हाय ! अगर मैं लड़का होती तो तेरी बहारें अवश्य लूटता,
पेम क्यों न काटनी पड़ती।' धन्तो ने इतना कहते हुए बीरो
बलात् अपने वक्ष से लगा लिया था।

बीरो के आकर्षक सौंदर्य के सम्बन्ध में यह एक लड़की के
की मरहम थी, परन्तु लड़कों का हाल बताते समय तो भगवान
शायद दांत जुड़ जाते। चाहे कमेरों के सारे लौंडे बीरो के
पीछे चक्कर लगाते घूमते रहते थे और जाट छोकरे उसके रंग,
तथा यौवन पर बनाए गीतों को गुनाते फिरते, लेकिन किसी
को उसकी चुन्नी तक छूने का तो क्या, उसके मार्ग में पड़ने का
साहस न हुआ, क्योंकि वे सभी जानते थे कि वह एक लड़की ही न
बल्कि विष-भरी नागिन भी है, जिसका काटा पानी नहीं मांगता
निस्सन्देह कुंवारी जवानी का खजाना कब का लुट जाता यदि
मामों की पहरेदार न होती। पिछले वर्ष से बीरो का मन
रंग वाले एक जाट लड़के भामे की ओर आकर्षित होता जा रहा
जिसका पूरा नाम भामसिंह था। यह जाट लड़का पिछले
नाजायज बन्दूक रखने के कारण छः महीने की जेल काट आया
यह सजा उसने कमीनेदार बनेरे के कारण काटी थी। इस बात
गांव का प्रत्येक बच्चा तक जानता था। बीरो की दृष्टि में
गांव में सभी पुरुषों से वीर, दूसरों के दुख-दर्द सहने वाला
था। पुलिस की मार से वह रत्ती-भर नहीं घबराया था। कमेदार
बन्दूक बनेरे की क्या है वाकि कायर नहीं

दो सो भाड़ लिया जाए और उसको सजा भी कटवा दी जाए; न्तु अन्तिम समय तक लामा कहता रहा, 'बन्दूक मेरी है, मुझे हे जो मर्जी सजा दो।'

यही कारण था कि सत्य के लिए कष्ट सहने वाला लामा बीरो मन में समा गया था। और जब वह जेल से छूटकर आया, बीरो उसीके कुएं पर घास खोदना आरम्भ कर दिया था। कैद से ूटने के बाद लामे में भी जाट वाली बू जाग पड़ी थी। जब कभी ामा बीरो को स्वाभाविक ही देखता, उसे वह बहुत ही मीठा-मीठा गता, जैसे वह स्वयं ही गन्ने की पोरी की तरह रस से भरती आ ही हो। उनकी शर्माती निगाहों में साहस का समावेश होता और लकें पूरी खुलकर एक-दूसरे में प्रवेश करने की प्रतीक्षा करतीं। ब वे परस्पर हंस भी लिया करते थे और अवसर मिलने पर एक-आध बात भी कर लिया करते।

घन्तो ने चार-पांच जनों के दाने भूने थे कि बीरो घास की चपन्नी खरी करके आ गई और घन्तो के सामने आकर बैठ गई।

"अब भौंक, तब क्या कहती थी?" बीरो आते ही बरस पड़ी।

घन्तो ने हाथ का इशारा किया कि बुढ़िया को जाने दे। उसके सिवा अब भट्ठी पर और कोई नहीं था। घन्तो ने छांट-संवारकर दाने बुढ़िया की झोली में डाल दिए। वह दाने लेकर थोड़ी दूर ही गई थी कि घन्तो से रहा न गया।

"अरी, लामे के कुएं का अब तो पीछा छोड़ दे!"

"अगर जलती है तो तू आना शुरू कर दे। मैं छोड़ देती हूं।" बीरो दूसरी तरफ मुंह करके हंसने लगी। घन्तो ने बीरो की पसली में हाथ की लकड़ी चुभो दी।

"अरी ओ चालाक, ठहर!"

"क्यों, यह पसन्द नहीं?"

"मेरी छोड़। तू जो आगे ही आगे बढ़ती जाती है, कहीं तुझे किसी कुएं में छलांग न मारनी पड़े।" घन्तो को चोट का उचित उत्तर सूझा नहीं था और वह छोटी होती हुई भी अकलमन्द बनने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही थी।

"कुएं पर मैं क्यों छलांग मारूंगी?" बीरो ने [illegible] विश्वास से अपना मुंह फेर लिया। "मुझे अगर किसी पापी ने धक्का भी

दिया तो उस कुएं के पानी ने कोमल रेत बन जाना है।" इस
स्वाद में बीरो की आंखें बंद हो गईं। उसको अपने प्यार में
और कुएं के पानी में कितना भरोसा जाग पड़ा था। उसे मृत्यु
भय नहीं रहा था, बल्कि चतुर्दिक जीवन ही जीवन उल्लसित
आता था।

बीरो को धन्तो से बातें करते देख पड़ोसी लड़का मट्ठी
घर से दाने भुनाने के लिए ले आया। बाहरी टीप-टाप से
भला दिखाई देता था, परन्तु उसका हृदय आंखों में आया
था, जिसे बीरो अनपढ़ होते हुए भी पढ़ गई और उठती हुई
"कल इकट्ठी बाहर चलेंगी।"

"तू थोड़ा समय तो और बैठ।"

"नहीं बहन, अभी जाकर रोटी पकानी है।" बीरो ने
जाते नाक का सुड़ाका मारा और मुंह एक तरफ करके
बेचारा लड़का माथे पर भृकुटी तानकर रह गया।

४

किसी जाट के खेत के एक ओर फीले और कारे ने
ढेर लगा लिया। फीला गड़बड़ के अगले दिन ही कारे को
लाया था। अन्धा क्या चाहे, दो आंखें। कारे की अन्दर
को यदि समझ लिया जाता तो वह थोड़े-बहुत मान-सम्मान
मान जाने वाला व्यक्ति था, जो उसे प्रयत्न करने के बाद
प्राप्त हुआ था। दुःख और क्रोध की अवस्था में उसे यह
सूझ हुआ था कि अब वह कैसे फीले के घर जा सकेगा।
आकर जैसे ही बांह पकड़ी, उसकी दुनिया मानो फिर
उसने समझा था कि उसे धर्म का भाई नहीं, बल्कि भगवान
लाया है।

सुबह-शाम चाहने के लिए उन्होंने जाटों के नये-नये
थे। हाथ का धन किसी काली ओर चल रहा था। उस
नहीं दे सकता था, जिसका स्वयं का काम हलका होता
की दौड़-धूप के बाद उन्होंने उठाकर गेहूं का ढेर
। दांव करने और गेहूं अलग करने में पानी ने
ने ही काम किया था।

"देख भाई कारे, भला कितने दाने हो जाएंगे तेरे विचार
?" फीले ने ढेर पर नज़र घुमाते हुए कहा ।

"मेरे विचार में बारह मन होंगे ।" उसने मिट्टी वाले हाथ
इते हुए कहा ।

"यदि पन्द्रह मन हो जाते तो जगने का उधार उतर जाता
र बाकी पांच मन बच जाता ।"

इन बातों को सुनकर तापी को ऐसा महसूस हुआ, जैसे दुसांग
के सिर में बजकर फट गई है । 'अगर ये दाने जगने ने ही
ा ले जाने थे तो हम मां-बेटी ने क्यों इतनी जान-तोड़ मेहनत
?' निस्सन्देह गेहूं की पांच-छः गांठें फीले ने कटाई के दिनों में
ाने वाले जाटों के यहां से इकट्ठी की थीं; परन्तु तापी और
ो की मेहनत के सम्मुख ये 'नहीं' के बराबर थीं । तापी ने
ते-डरते पूछ ही लिया, "गेहूं जगने को उठवाने हैं ?"

"क्यों, उसके पैसे नहीं देने ?" फीले ने गुस्सैली आंखें तापी
चेहरे पर गाड़ दीं ।

तापी का हृदय रो पड़ा, किन्तु उसके आंसू अन्दर के सेंक ने
ी पी लिए । तापी ने घर की आवश्यकता के लिए कभी भी जगने
डित से एक पाई भी उधार नहीं ली थी । उसने एक ठण्डी सांस
ींचते हुए आंखें बंद कर लीं । जब बाह्य पीड़ा से औरत की
ांखें बन्द हो जाती हैं, तभी अंदर ही अंदर जीवन-आशा की गर्दन
ोच ली जाती है, जो शताब्दियों से अत्याचार करते आए मर्द ने
भी नहीं देखी, कभी नहीं समझी । उसी समय तापी स्वयं को और
पनी बेटी की घोर तपस्या खेत में ही छोड़कर विचलित मन से
र लौट आई । कारे से तापी की दुखी अवस्था सहन न हो पाई,
रन्तु वह कर कुछ नहीं सकता था । उसने अपनी तीन मास के पैता-
ीस रुपये पेन्शन भी फीले से नहीं छिपाई थी । वास्तव में इन रुपयों
कारण फीला उसको छोड़ना नहीं चाहता था । कारे को तापी से
सच्चे अर्थों में सहानुभूति थी, जो उसे अनाड़ी होने के कारण जतानी
नहीं आई थी । तापी के लिए वह एक नाकारा और निखट्टू व्यक्ति
था; क्योंकि वह समझती थी कि उसकी वजह से फीले के प्रत्येक
ऐब में बढ़ोतरी होती थी ।

"तू भइया, खर्च थोड़ा करा कर ।" कारे ने फीले को स्वाभा-
विक रूप से सलाह दी ।

 10920

"देख भाई कारे, भला कितने दाने हो पाएंगे तेरे विचार
" फीले ने ढेर पर नजर घुमाते हुए कहा ।
"मेरे विचार में बारह मन होंगे ।" उसने मिट्टी वाले हाथ
ते हुए कहा ।
"यदि पन्द्रह मन हो जाते तो जगने का उधार उतर जाता
बाकी पांच मन बच जाता ।"
इन बातों को सुनकर तापी को ऐसा महसूस हुआ, जैसे दुर्भाग
के सिर में बजकर फट गई है । 'अगर ये दाने जगने ने ही
ले जाने थे तो हम मां-बेटी ने क्यों इतनी जान-तोड़ मेहनत
?' निस्सन्देह गेहूं की पांच-छः गांठें फीले ने कटाई के दिनों में
ने वाले जाटों के यहां से इकट्ठी की थीं; परन्तु तापी और
ो की मेहनत के सम्मुख ये 'नहीं' के बराबर थीं । तापी ने
े-डरते पूछ ही लिया, "गेहूं जगने को उठवाने हैं ?"
"क्यों, उसके पैसे नहीं देने ?" फीले ने गुस्सैली आंखें तापी
चेहरे पर गाड़ दीं ।
तापी का हृदय रो पड़ा, किन्तु उसके आंसू अन्दर के सैंक में
पी लिए । तापी ने घर की आवश्यकता के लिए कभी भी जगने
से एक-पाई भी उधार नहीं ली थी । उसने एक ठण्डी सांस
भरते हुए आंखें बंद कर लीं । जब बाह्य पीड़ा से औरत की
खें बन्द हो जाती हैं, तभी अंदर ही अंदर जीवन-आशा की गर्दन
ोच ली जाती है, जो शताब्दियों से अत्याचार करते आए मर्द ने
भी नहीं देखी, कभी नहीं समझी । उसी समय तापी स्वयं को और
नी बेटी की घोर तपस्या खेत में ही छोड़कर विचलित मन से
लौट आई । कारे से तापी की दुखी अवस्था सहन न हो पाई,
न्तु वह कर कुछ नहीं सकता था । उसने अपनी तीन मास के पैंता-
ीस रुपये पेन्शन भी फीले से नहीं छिपाई थी । वास्तव में इन रुपयों
कारण फीला उसको छोड़ना नहीं चाहता था । कारे को तापी से
च्चे अर्थों में सहानुभूति थी, जो उसे अनाड़ी होने के कारण जतानी
हीं आई थी । तापी के लिए वह एक नाकारा और निखट्टू व्यक्ति
ा; क्योंकि वह समझती थी कि उसकी वजह से फीले के प्रत्येक
न में बढ़ोतरी होती थी ।
"तू भइया, खर्च थोड़ा करा कर ।" कारे ने फीले को स्वाभा-
विक रूप से सलाह दी ।

 10920

"खर्च तो कुछ करता ही नहीं। नशा छोड़ [illegible] जान बांधी। खर्च जो होता है, वह भी तेरे सामने ही होता है। तू ही बता, ए बढ़ती खर्च कौन-सा है ?" फौले ने अपनी तरफ से सफाई पेश की जिसको कारा किसी प्रकार भी नहीं काट सकता था।

कारे ने भी सिर हिलाकर हामी भरी कि तू भी ठीक कह है। कारा अफीम चाहे नहीं खाता था, लेकिन शराब आदि की ले में स्वयं को गुनाहगार समझता था। इसीलिए तापी की दृष्टि एक घृणित मनुष्य था। उसका जहां तक वश चलता, वह फौले नशे से हटाने का प्रयत्न करता, परन्तु उसकी चलती ही कितनी थी वह इस तीव्र वेग को रोकने में असमर्थ था। इसके विपरीत कर्भ कभी हल्की वस्तुएं भी तेज प्रवाह की ओर मुड़ जाया करती। कारा हवा के रुख की ओर मुड़ जाने वाली एक कमजोर टहनी थी तूफान को रोकने की शक्ति वह कहां से लाता!

घर पहुंचने पर तापी के रुके आंसू चन्तो को देखकर छलक पड़े, लेकिन उसने जल्दी उन्हें कांपते हाथों से पोंछ लिया। चन्तो मां का दुःख सहन न कर पाई और उसको झकझोर कर बोली "मां! क्या बात है?"

"तेरा बापू सारा ढेर जगने को उठवाने वाला है।"

"हूं; अभी जगना तराजू और दुसेरी उठाए हुए आ रहा था।"

"हां, मुझे भी रास्ते में मिला था।"

"अच्छा मां, तू घर बैठ, मैं देखती हूं उस मुए को।"

इतना कहकर चन्तो मां से हाथ छुड़ा, खेत की ओर सरपट भाग ली।

उसके पहुंचने से पूर्व जगना ढाई मन की दो बोरियां तुलवा बैठा था। वह जाते ही गेहूं के ढेर पर बैठ गई।

"चाचा! आज तराजू और दुसेरी उठाकर घर ले जा। हम दाना-दाना करके इसने चुना है।" चन्तो हांफ रही थी।

अनाज तुलना बंद हो गया। जगना हैरान होकर फौले की तरफ देखने लगा, जैसे पूछ रहा हो कि क्या सलाह है।

फौला लड़की की ओर गहरी निगाहों से देख रहा था। वह सोच रहा था कि इसको पीटूं या न पीटूं। परन्तु चन्तो को उस की कोई परवाह नहीं थी।

"क्यों, मुफ्त की कमाई के ख्वाब देख लिए! चार नहीं चा

लौंडिया को सिखाकर भेज दिया।" फीलें ने पता नहीं किसको सम्बोधित होकर कहा था। उस समय फीलें की बात की हामी भरने का साहस दोनों में न था। फिर उसने धन्तो को रोब के साथ कहा, "लड़की, एक तरफ हो जा!"

"नहीं होती।" धन्तो दृढ़ता से अड़ गई, "हम साल-भर क्या खाएंगे?"

कारा मटके की भांति गुम था और कुछ भी न बोला। उस समय उसकी तरफ से बोलने से हालत पतली पड़ती थी।

"लड़की! दाने तो भट्ठी के खाते-खाते खतम नहीं होंगे।" जगने ने समझाने और डराने वाले दोनों पक्षों से काम लिया, "मैं दाने क्या करूंगा, मुझे तो नांवा चाहिए। लाओ, डालो मेरी झोली में।" उसने अपने कन्धे का तौलिया बिछा दिया।

"या तो लौंडिया, दाने तोल लेने दे, नहीं तो घर लिखवा दूंगा।" फीलें ने धन्तो पर भरपूर वार किया; परन्तु उसमें इतना साहस नहीं था कि वह उसको पकड़कर अनाज के ढेर से अलग कर दे।

"जो मर्जी हो कर लो, पर दाने नहीं तोलने दूंगी।" धन्तो चाहे जवान हो चुकी थी, लेकिन पैसे उधार लेने-देने के मामले में अभी अबोध थी। इसी कारण उसने अपने बापू की धमकी की कोई परवाह नहीं की।

जगना धन्तो को बहुतेरा समझाता रहा, परन्तु लड़की ने उसकी एक न मानी। हारकर उसने अपनी तराजू और दुसेरी उठा ली और चलते समय गेहूं की दो बोरियां भी लेता गया। धन्तो जगने को खेत से भगाकर बहुत खुश थी। मन ही मन उसने पंडित को कई गालियां दे डालीं। वह अभी उस खुशी को मना ही रही थी कि उसकी मां ऊपर से आ गई। फीलें ने तापी को बहुत गालियां दीं और साथ ही घर लिखा देने की धमकी भी उसने दे डाली।

"धन्तो! तुझे अपने बापू के सामने जवाब नहीं देना था।" तापी उदास और दुखी थी।

"क्यों?"

"हम पहले भी भट्ठी जलाकर गुजारा करती हैं, अब भी दुःख-सुख में कर लेतीं। जो तेरे बापू ने घर लिखा दिया, फिर बता, कहां रहेंगे? उसका क्या है, वह तो किसी गुरुद्वारे में जा पड़ेगा।" तापी ने आने वाली अनहोनी को अनजान धन्तो के सम्मुख रखा।

धन्नो मां की खरी-खरी बातों को सोचने लगी—अंत
ही हो जाता हो; परन्तु वह जीनी खुशी को अब हारना नहीं च
थी। "तू गेहूं उठाकर घर से चलने वाली बात कर। फिर देखें
होता है।"

तापी ने एक पल सोचते हुए कहा, "दाने घर से चलते
पर्दे में जगने को तोल देंगे।"

"मैंने एक भी दाना जगने को नहीं देना। मैं तो यह पांव
भी न उठवाने देती। यह तो बापू के मुंह की शर्म थी।"

अन्त में मां-बेटी अनाज को थोड़ा-थोड़ा करके तीन फेरों में
ले गईं।

५

जेठ और असाढ़ इस बार इतने तपे थे कि लोगों को धर्मों
लिखी कयामत की आग याद आ गई। बूढ़े किसानों का यह मत
कि जितने ये मास तपेंगे, उतनी वर्षा अधिक आएगी। सावन
फसल भरकर लगेगी और असाढ़ में बीज डालने की आशा
जाएगी। हुआ भी बड़ों के अनुमान के अनुसार ही। असाढ़ के अन्ति
पक्ष में दो बारिशें मूसलाधार पड़ गईं। पहली बौछार से धरती
होश तभी आया, जब उसने दो घण्टों में सारा पानी पी लिया। दूसरी
वर्षा में जाटों ने बाजरा, मोठ, मक्का और चरी आदि बो दी।

सावन के महीने के मध्य में एक बार वर्षा में बाढ़-सी आ गई।
तीन दिन लगातार मेह बरसता रहा था। यदि पानी एक क्षण
लिए रुकता तो थोड़ी देर बाद दुगुने वेग से आ जाता। पानी
बहाव से रेल की लाइन तक बह गई और कई स्थानों पर जी० टी०
रोड टूट गई। ऐसी भयंकर वर्षा में कच्चे मकान वालों पर क्या
गुजरी, यह तो उनमें रहने वाले ही जान सकते हैं। गांव के कमेरों
तथा मजदूरों के मुहल्ले का बुरा हाल था—पानी बलात् उतर
चढ़ आया था। बड़े साहस के साथ लोगों ने पानी को बांधकर
रोका; लेकिन ऊपर के कहर को कैसे रोकते, जो हर प्रकार की
मनौती के बाद भी नहीं माना था। वर्षा की इस प्रलय ने कमेरों के
लगभग आधे मकान गिरा दिए। बीरो का बाप जाटों से हिस्से की
आधी खेती लिया करता था, उस बेचारे का कोठा भी अपने साथियों

के साथ बह गया। तीसरी शाम को पहाड़ की तरफ से बादल ऊंचा हो गया। लोगों के लिए एक प्रकार से रहमत का नूर फूटा था। जब बूंदें थोड़ी थम गईं, तब बीरो चाय के लिए दूध लेने दुकान की तरफ चल दी। बीरो उसने सिर पर ओढ़ रखी थी और जमीन में पैर गड़ाती चल रही थी। वह डरती थी कि कहीं फिसलकर गिर न जाए। उसने धन्तो को सिर पर एक खाट और उसपर सामान रखे, घुटनों पानी में बढ़ते हुए देखा। यद्यपि सबपर मुसीबत भारी थी, किन्तु बेपरवाह उम्र के कारण बीरो धन्तो को देखकर हंसी न रोक सकी तथा बोली, "क्यों, मिल गई हम भाइयों-सब ?"

"तू तो भगवान से मिली हुई है, बराबर किए बिना कब मानती है, लेकिन मज़ा तब आए जब पक्के मकान भी गिराकर दिखा दे।" धन्तो फिसलने से कठिनता से बची। उसकी कुरती भीगकर शरीर से चिपक गई थी।

"बहन ! पक्के मकान वालों का तो भगवान रक्षक है। वे सिरहाने बांह दिए सोते रहते हैं। यह अनहोनी तो हम गरीबों को ही मारने आई है।" उस समय बीरो की नीयत बिगड़ गई। "अरी, ढक ले, ढक ले इन ललकारों को, कोई छेड़ेगा सरसों का रखवारा। अगर किसीने इस तरह देख लिया तो लेकर पानी में घुस जाएगा।"

"तू अपना बचाव कर। हमारा क्या है गरीबों का—न चोर आए न कुत्ता भौंके !"

"वाह ! क्या कहने बेचारी के !" बीरो ने बन्द मुट्ठी उसकी ओर बढ़ाकर खोल दी।

"क्या सचमुच तुम्हारी छत बह गई ?" धन्तो ने मजाक से हटते हुए पूछा।

"अरी, क्या कहूं बहन ! नये सिरे से भगवान ने पाकिस्तानी बना दिया है।"

"हमने साधों के डेरे पर सामान रखा है।" धन्तो बोली।

"तेरी ही पहुंच सही, गरीबों को भी कोई डेरा दिलवा दे।"

"अरी, डेरों की कमी है तुम्हें ?" झट कुछ याद करते हुए धन्तो ने कहा, 'तेरे मां-बाप नहीं आएंगे, नहीं तो जगह बहुत बढ़िया है।"

"कौन-सी ?"

"लाभे के कुएं वाला घर।" इतना कह धन्तो जल्दी-जल्दी चल पड़ी।

"इस प्रकार भागने से बात नहीं बनेगी।" बीरो ने अभी ही कहा था कि धन्तो का पैर फिसल गया
के बल पानी में गिर पड़ी। बीरो ने जल्दी
"क्यों ?" उसका भाव था, चोट तो कहीं अधिक नहीं लगी। के बावजूद धन्तो की हंसी न रुक सकी। बीरो ने
"दिल के छोटे आदमियों को भगवान ऐसे ही मारता है।"

"अरी, मेरे सिर पर बहुत लगी है।"...
थी।

"क्या बात है, बहादुर बन ! अभी तो कोई
है।"

"तुझे अब भी हंसी सूझ रही है !"

"लौंडिया, तू बातें फिर कर लेना।" फीला
से आ रहा था। "बारिश तो फिर से आ रही है।"

बीरो दुकान की ओर मुड़ गई और धन्तो डेरे की ओर

इस कठिन घड़ी में फीले की मदद के लिए कारा भी
पड़ता आ गया था। वह उसका पता करने
उसने वही देखा, जिसका उसको भय था। वह भी उनके
कोने पर लग गया। फीले के सामान को ठीक जगह
को भी देखने गया। उसकी दुकान गिरी तो नहीं थी, लेकिन
से हालत गिरने से भी बदतर हो गई थी। सारा
था। खांड-गुड़ तो मानो गारा ही बन गए थे।
था जो ठीक हालत में रह गया था।

"कैसे हो पंडितजी ?" कारे ने हालचाल पूछा।

"करतारसिंया ! शिवजी भगवान के कोप का पता
चलता—हम मनुष्य क्या जानें !" अगना अपनी
भी अधिक दुखी हो रहा था। "अब यह घाटा कब पूरा होगा ?"

"नमक तो रोए, पत्थर क्यों रोए !" फीले ने
दी।

"ओ फीले, तू अपने हाथ से कमाए तो तुझे पता चल जा
औरत कमा लाती है, तू खा छोड़ता है।"

"अबे ब्राह्मण, तूने काम करना है या बातें ही बनानी हैं
फीले को अगने की बातें चुभ गई थीं।

"तू तो नमक-पत्थर की परख करता है, काम थोड़ा ही

"सा'ब कहता था, जब मुसीबत पड़े घबराओ मत, नहीं तो मुसी-
[बत] दुगुनी-चौगुनी हो जाती है।" कारे ने मौके की बात करते [हुए]
[फ]ते की बांहें ऊपर कीं।

"महाराज! यह गुड़-मारा तो हमें ही तोलेंगे।" फीले ने खराब
[हु]ए गुड़ की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"घाटा भी तो किसी न किसी तरह पूरा करना है। तू नहीं कोई
[औ]र सही!" जगना मूंछों में हंस रहा था।

"मेरी मानो, सारे सामान को खराब दुकान में डाल लो, सारा
[सा]ल मौज करेंगे।" कारे ने दोबारा पते की बात कही।

"अबे कारे, ब्राह्मण का धन खाकर नरक में जाना चाहता है?"

"वाह पंडितजी, हम तेरा खाएं तो नरक में जाएं और तू
[ह]मारा खाए तो स्वर्ग में! क्यों, सही बात है न?" फीले का चेहरा
[ला]ल हो गया था।

"साला भैंसा कहीं का!"

"शास्त्रों में यही लिखा है, मेरे बाप की क्या बात है!" जगना
[इ]तना कहकर मुस्करा पड़ा।

"कारे, इसके साथ फिर दो-दो हाथ कर लेंगे, पहले उन शास्त्रों
से निपट लें।"

*उन्होंने थोड़े समय में ही बचने का सारा सामान ठीक-ठाक
करवा दिया।*

तीन-चार दिनों के बाद गांव की दुर्दशा देखने एक सरकारी
अफसर आया। वह पंचों को लेकर सारा गांव घूमा। जिसका पूरा
घर ढह गया था, सरकार की ओर से उसे एक सौ रुपये देना तय
हुआ। फीले के सारे घर में केवल रसोई ही गिरने से रह गई थी,
इसलिए उसे पचास रुपये वाले पीड़ितों में दर्ज किया गया।

घर का गिरना सुन माना भी पता करने आया। उसने ऐसी
विपत्ति में गुस्सा रखना ठीक न समझा। घर गिरा देखकर उसे
बड़ा दुःख हुआ। वह सोचने लगा कि इनका बनेगा क्या? पूंजी
इनके पास पहले ही नहीं, यदि मैं पहले से ही घर-गिरस्ती का
दबाया हुआ न होता तो इस विपत्ति में थोड़ी-बहुत सहायता अवश्य
करता। माने के आने के एक दिन पहले यह ढिंढोरा पिट गया था
कि सरकार मकान बनाने के लिए कर्ज दे रही है। कर्जा अर्द्ध-वार्षिक

किस्तों में पूरा होगा और पहले साल कोई किस्त नहीं दे
जगने के पास आवश्यकतानुसार जगह थी और इस
प्रकार के कर्ज़ की जरूरत थी ही नहीं। उसकी कोठरी
पर होने के कारण सुरक्षित थी। दोनों ने फीले
लेकर घर बनाने की सलाह दी। जगने के पास घर हो
गिरवी पड़ा हुआ था। उसने
भी वापस मिल जाएगा। फीला दूरदर्शी तो था नहीं, उसने
कर्ज़ की मिलती रकम को लेने का निश्चय कर लिया।
सलाह के लिए माने से भी पूछ लिया। चाहे वह माने से
बात नहीं करता था, लेकिन मुसीबत में पूछने आए हुए
न पूछना! फीले का उससे बातों ही बातों में झगड़ा हुआ था,
हृदय से उससे दूर नहीं था।

"मानू, सरकार से कर्ज़ा लेकर घर बना लें?" फीले ने
सीधे किए ही पूछा।

माने ने सोचते हुए उत्तर के स्थान पर प्रश्न किया, "
लेकर घर में नींद आ जाएगी?"

फीले को इस प्रकार के प्रश्न की बिल्कुल आशा नहीं
उसका ख्याल था कि माना कर्ज़ की इस ईश्वर-प्रदत्त
सौभाग्य समझेगा।

"भइया, करनी तूने अपने मन की है।" माने ने गम्भीरता
अपनी राय दे दी, "कर्ज़ का भार तो हिम्मत वालों की कमर
देता है। तू किस्त वापस कैसे करेगा?"

फीला वास्तव में सोच में पड़ गया। माने की राय उसको
गई।

"अच्छा, अब मैं चलता हूं। जैसी राय हो, खबर कर देना
अगर मैं न आ सका, तो काजंकियां गांव से मोदन को भेज दूंगा
वह घर बनवाकर ही आएगा।" माने ने घर बनवाने की
कहा।

"मोदन, तेरी साली का लड़का?" तापी ने स्वाभाविक ही
लिया।

"हां, वही। मन लगाने में वह मुझसे भी अधिक चतुर हो
" ने अपने शागिर्द पर गर्व करते हुए कहा।

पीकर माम मामी गाड़ी से वापस चला गया।

उसकी गैरहाज़िरी में जगने ने घुमाव-फिराव वाली बातें करके फीले को कर्ज लेने के लिए तैयार कर लिया। फीले ने भी निश्चय कर लिया कि एक बार कर्ज लेकर घर को पक्का बनवा लो, बाद में देखा जाएगा। आते बरस न जाने किस राजा की प्रजा बन जाएं और शायद सरकार गरीबों से कर्जा वापस ही न ले। उसके पास जगना और कारा दो ज़ामिन थे। उसने पटवारी, नम्बरदार और सरपंच से तसदीक कराके कर्जा-फार्म तहसील में दाखिल कर दिया। फार्म तो उसने दाखिल कर दिया, लेकिन उसका काम नहीं बना। वह दूसरे-तीसरे दिन जाता और निराश होकर वापस मुड़ आता। अन्त में जगने ने उसको मार्ग बताया कि रिश्वत दिए बिना रुपया नहीं मिल सकता। फीले के लिए यह बात समझना कठिन था कि कर्जा लेते समय भी रिश्वत देनी पड़ती है। जगने ने एक क्लर्क से बात की और रिश्वत में माथा खाकर, फीले को पांच सौ रुपये दिलवा दिए।

६

जिस दिन मोदन बड़ोवाल आया, उसी दिन फीले के नये घर की नींव रखी जानी थी। उसने सबसे पहले कारे को गारे में फावड़ा पकड़े देखा। वह बड़ोवाल पहली बार ही आया था और गली के मोड़ से उसने तीसरी बार घर का पता पूछा था। उसने एक हाथ ऊंचा करके सत श्री अकाल बुलाई, क्योंकि दूसरे हाथ में उसने एक पुरानी साइकल पकड़ी हुई थी। उसने साइकल को एक कोने में खड़ा कर दिया। तापी को उसने 'अम्माजी' कहकर सिर नवाया। तापी ने उसको प्यार करते हुए, बैठने के लिए खाट बिछा दी और उसकी मां की कुशल-क्षेम पूछी। तत्पश्चात् चूल्हे पर चाय रख दी। मोदन औरतों की तरफ पीठ करके बैठ गया और कारे की कार-गुज़ारियां देखने लगा।

कारा गारे में घुस तो गया, परन्तु अब पछता रहा था कि वह इस काम में क्यों पड़ा। इससे ईंटें पकड़वाना कहीं अधिक आसान था। अगर वह फावड़ा मिट्टी में गाड़ता तो उससे निकाला न जाता। उसकी टांगें भी सूज गई थीं। यह सब होने पर भी वह तापी की नज़रों में अपनी जगह बनाना चाहता था जो विधाता ने इस जन्म में उसके लिए नहीं बनाई थी। वह बुरी तरह हांफ रहा था।

मोदन ने आते ही माने के बताए हुलिये के अनुसार
पहचान लिया। माने ने उसको कई तरफ से होशियार क
था कि अगर तुमने काम करना है तो किसी प्रकार का उला
आना चाहिए। मोदन अपनी मां के स्वभाव के अनुरूप शौ
की शागिर्दी में चतुर और काम की लगन में माहिर हो
चौड़े सीने और दोहरे बदन में वह खूब फबता था। पिछले
महीने में उसको बाईसवां साल लगा था। वह पहली दृष्टि में
न लगता था, परन्तु जैसे-जैसे उसे कोई कार्यरत देखता तो
हलका पीला रंग मीठी दिलचस्पी बन जाता और बातें करते
उसके शरीर की बनावट एक जादूभरा आकर्षण पैदा कर दे
वास्तव में उसकी सेहत अच्छी थी जो देखने वालों को प्रभावित
लेती।

पन्नो नये आए अतिथि को चोर नज़रों से देख रही थी।
हवां साल पार करती कोई युवती भला घर में किसी जवान म
को आंखें फाड़-फाड़कर कैसे देख सकती है। उसपर कुंवारी,
आने वाला मर्द कोई जवान हो। वह इस सारे समय के बीच
ताड़ रही थी कि मोदन उसकी तरफ देखता है कि नहीं। मोदन
एक क्षण पन्नो को देखा तो अवश्य, परन्तु उससे चोरी। फिर उस
अपना ध्यान काम में लगाए रखा। उस समय उसने अपनी दृष्टि
उठाई। वे नीची निगाहें तापी की नज़रों में एक मूल्यवान
बन गईं।

चाय पी लेने के बाद उसने अपना आकर्षक तहमद और कमीज़
रसोई वाली खूंटी पर लटका दिए। साथ ही उसने नारंगी रंग का
साफा टांग दिया। उसकी बनियान पर सीने की ओर दो मोर
हुए थे। जब पन्नो की दृष्टि उसके भरे बाजुओं और सीने के मोरों
पर पड़ी एक क्षण के लिए उसकी आंखें बन्द [illegible] गईं और एक
को छोड़ दिया। उसने पिछले जाड़ों
से। उसे ऐसा प्रतीत हुआ,
हुए हैं।
है।" मोदन की आवाज़ ने
तारे की तरह

ंदा करते हुए कहा, "मुझे फिर 'बाबा' मत कहना।"

"क्यों बाबा ?"

"फिर 'बाबा' ! जड़ ही उखाड़ दी !"

"क्यों, अब क्या कोई तेरी झोली भरने आएंगे ?" कारीगर तारे ने कारे को चोट मारी। वह नींव पर बैठा गारा मांग रहा था।

"हम तो अब भी उम्मीदवारों में हैं। कोई आए ही नहीं तो हमारा क्या दोष !" सारे सहन में हंसी बिखर गई।

मोदन ने मन में सोचा, दिन अच्छे निकल जाएंगे। सफलता के लिए जहां बल, तेजी और चतुरता की आवश्यकता होती है, वहां दिलचस्पी कम महत्त्व नहीं रखती। फीले ने नींव रखते समय तारे के सामने गुड़ की थाली ला रखी। उसने सबको थोड़ा-थोड़ा बांट दिया और अपना हिस्सा रखकर थाली लौटा दी।

"चाची, तू चाय वाला भगोना ऊपर रख।" तारे ने चाची को ऊंची आवाज़ में कहा। फिर उसने काम करने वालों की तरफ देखा, 'तुम भइया, अब ढीले मत पड़ो। गारे वाले जवान, गारा !" उसने करनी ईंटों पर बजाई।

"ऐसे मांग रहा है, जैसे खाना हो।" कारा कहने से बाज न आया और हंसी का फव्वारा एक बार फिर फूट निकला।

"हूंहूं ! तुझे भी साहुल लगाने की जरूरत है !" तारे से ठीक उत्तर न बन सका।

"मिस्तरीजी !" मोदन ने तारे का ध्यान अपनी ओर खींचा। "तुम इन दोनों को ईंटों पर लगा दो। मैं गारा भी बनाऊंगा और तसला भी नींव पर लाऊंगा।"

"प्यारे ! गारा तुमसे दिया नहीं जाएगा। यह तो मर्दों का काम है।" मिस्तरी ने एक प्रकार से मोदन को डराना चाहा।

"गारे की बात छोड़ो हम उस जाति के हैं, जिसके सामने मुसीबतें भी खेल बन जाती हैं।"

मोदन की इस बात से फीला भी तन गया।

"अच्छा, देखेंगे कि तिलों में कितना तेल है।"

"मिस्तरीजी, तुम्हारी दया चाहिए। काम से बन्दा नहीं घबराता।"

... रूप से पड़ी थी, परन्तु चूल्हे के

ताग आप् कौशल्या अम्मी ने समझा कि वह बात भी फिर ही की गई है। वह बहुत देर से मोहन की बातों में अपना कान लगाए हुए थी। उसने आँखें बन्द करके दफ्तर की ओर सांस खींची, जैसे उसे कोई घुटन-सी महसूस हो रही हो।

"अम्मी, कीड़ा बज रहा है।"

मगर उसकी माँ उसको सचेत न करती तो हो सकता था कि वह जुलेखा की तरह अपना हाथ काट लेती। उसने जल्दी से करछी रखकर, पतीले में कलछी घी और हल्दी का मसाला उसमें डाल दिया। घी और मसाले की सुगन्ध से मोहन की नासिका में जलन पैदा होने लगी। एक मुस्कान के साथ एक रेखा-सी लाली उसके मुंह पर घूम गई। एक सिहरन उसके पांव के तलवों तक उतर गई। मोहन की सौरभ, गर्व और मस्तमस्ती का एक गम्भीर प्रभाव उसपर पड़ रहा था।

मोहन ने गारे वाला तसला तारे के सामने रखते हुए पूछा, "मिस्तरीजी, दिन में कितनी ईंटें लगा दोगे?"

"ईंटें!" तारे ने एक क्षण काम रोककर कनी ईंट पर बजाई। "अगर मैं करने पर आ जाऊं तो सुबह तक ताजमहल बना दूं।" उसको अपनी हिम्मत पर बहुत गर्व था।

"मगर आप अपनी करनी पर न आएं तो तिनका तक नहीं तोड़ोगे।" तारे ने ढेर में से ईंट उठाते हुए व्यंग्य किया।

"जैसा लून-पानी दोगे, वैसा ही काम लोगे। सब समझता।" तारे ने तसला खाली करके मोहन के आगे फेंक दिया। "ला और गारा ला।"

"कच्चे धागों के सौदे, दिल रख। मौसम मेह का है, अब कर जल्दी डाल दे।"

"फीलखाना! यह दीवार तो आज ही पूरी हुई देखना।" तारे के अन्दर एक फुर्ती जाग पड़ी थी। "अन्दाजा अधिक है, परन्तु सामान मुझे कम नजर आता है। ईंटें भी कम नजर आ रही हैं। सीमेंट सारा खिड़कियों और लेंटरों में लग जाएगा। जालियां और टाइलें भी अभी लानी हैं।"

"कोई बात नहीं, धीरे-धीरे सब कुछ आ ।" तारे ने लाल हाथों को देखा जो ईंटों ने काट दिए तो दोनों बीमारियां

ोदन पसन्द है, जो गारा कम नहीं होने देता। दो होने पर भी ईंट
कड़ा नहीं सकते।" तारा साहुल लगाकर दीवार एक सतह में
रने लगा। जैसे ही मोदन खाली होता, नींव पर ईंटों का ढेर लगा
ता। वह अकेला सारे काम खींच रहा था। उसके काम पर सारे
ोग प्रसन्न थे, लेकिन तारी को लड़का सोने की खान दिखाई देता
ा।

घर बनाने के दिनों में धन्तो को भट्ठी तपाने की फुर्संत ही नहीं
मिलती थी। अब तो उसको चूल्हे-चौके के काम से ही फुर्संत नहीं
मिलती थी। वैसे भी भैंस ब्याह गई थी, उसकी सेवा करनी पड़ती
ौर अन्य बातों का भी ख्याल करना पड़ता। अगर उसे बीच में
मय मिलता तो गारे के लिए उसे पानी लाना पड़ता। एक दिन
ब वह शाम को पानी ला रही थी—तब उसे मार्ग में घड़ेर और
ुर्गी उठाए बीरो मिल गई।

"खुशी से पैर उठा-उठाकर दिखा, मुझे मालूम है कि घड़ा
ठाकर भी तेरा पैर जमीन पर नहीं लगता।" बीरो सामने पड़ते
ी धन्तो पर बरस पड़ी।

"क्यों, सब कुशल तो है?" धन्तो के दिल की धड़कन तेज हो
ई थी।

"वह तोता कहां से पकड़ा है?"

"कौन-सा तोता?" धन्तो एकदम संभलकर सचेत हो गई।

"जो हर सुबह चूरी मांगता है।" बीरो धन्तो के साथ-साथ
मती आ रही थी।

"क्या लाभे की बात कर रही हो?" धन्तो जानबूझकर पुच्छी
नी हुई थी।

"अरी, लाभे की नहीं, बल्कि उसकी जो गारे में उल्लू बनाके
रखा हुआ है।" बीरो ने दांत निकालते हुए धन्तो को आंख मार
दी।

"अच्छा! आ परे, वह तो चाचे की साली का लड़का है।"
धन्तो उसको सही बताते हुए भी दिल की धड़कन छिपा गई।

"अच्छा! तू भी अपना घर बसाने के लिए लड़का पसन्द कर
ले।" बीरो की मांग बन आई थी।

धन्तो ने पानी का घड़ा गारे में डाल दिया, और मोदन ने नई
मिट्टी मिलानी शुरू कर दी। बीरो धन्तो के पास भैंस की खातिर

[illegible] पर बैठ गई। मोहन को देखकर बीरो को [illegible]
[illegible] उस दिन [illegible] की दोनों [illegible] के [illegible]
[illegible] और [illegible] पर [illegible]
थी। [illegible] बीरो को कोई [illegible] नहीं थी।

"[illegible] दिखाऊँ ?" बीरो ने
[illegible] और धन्नो के [illegible] मिट्टी का एक रो[illegible]
[illegible]। मोहन ने [illegible] निकालती बीरो को पहुँचे से ही [illegible]
था, और वह [illegible] भी उसने [illegible] चमत्कार समझा,
धन्नो ने [illegible] किसी से ऐसी कोई हरकत नहीं की थी। उस[illegible]
रह भी और उसको कुछ भी समझने का अवसर नहीं दिया।
मोहन की खामोशी देखकर बीरो को बहुत आश्चर्य हुआ। उस[illegible]
[illegible] हुए धन्नो को इस प्रकार कहा जिससे मोहन भी सु[illegible]
"बस, बहुत ही भोला है। जितना मार डालेगी, सब ही [illegible]
लेगा।"

"क्यों मोहती है, कमजात !" धन्नो आगे होकर उसके [illegible]
हाथ रख रही थी। साथ ही धमकी दे रही थी, "अरी दुष्ट, [illegible]
जा ! क्यों चोटी खिंचवाती है मुझसे !"

मोहन ने धन्नो की कोई बात नहीं सुनी थी, लेकिन बी[illegible]
बात कलेजे में छुरी की तरह लगी। उसने नारे से निकलकर, [illegible]
झाड़ने के बहाने, फावड़ा जमीन पर मारा। साथ ही सावधा[illegible]
एक रोड़ा भी बीरो के पैरों में फेंक मारा और धीरे से [illegible]
"पहले रोड़े से बात नहीं बनी थी।"

"जा बहन ! यह उर्दू की सभी जमायतें पास है। देखने में [illegible]
मानुष दीखता है, लेकिन अन्दर से घुन्ना है।"

"अरी परे मर बीरो ! अरी, क्यों तेरी जबान पर ताला [illegible]
लगता ?" धन्नो ने उसको बाहर धक्का दे दिया।

"अरी, देख तो लेने दे !" बीरो नखरे से पड़कर खड़ी [illegible]

"तू कृपा करके घर से निकल, नहीं तो कोई गुल खिला देगी[illegible]

"माल तेरा खरा है। सहज पकने दे, फिर खा लेना।" बीर[illegible]
उल्टा खुर्पा अपने हाथ पर मारा और एक बार मोहन को नजरें [illegible]
देखा।

"बैरन, चली जा।" धन्नो घड़ा [illegible] गई
को मजबूरन उसके साथ आना पड़ा,

ाम बाहर निकाल दी, जिसको तारे ने अचानक देख लिया। उसने
दों पर कर्नी बजाते हुए गला साफ किया। बीरो ने बेपरवाही से
ह घुमा लिया। वह इतनी निडर और निस्संकोच थी कि ऐसे
जों [illegible] उसकी जूती को भी चिन्ता नहीं थी।
अब मोदन ने गारे वाला तसला तारे के बराबर दीवार पर
ा, [illegible] भूरी मूंछों के बीच से मुस्करा पड़ा और आगे-पीछे की
ह लेता हुआ बोला, "क्यों, कमेरन पसन्द है? जाटों के लौंडों के
[illegible] इसकी आंखें दो-चार हैं।"
"तूने मकान बनाना है कि मैं साइकल उठाऊं?" मोदन चार
े दिनों में तारे के साथ अच्छी तरह खुल गया था।
"तू जाएगा तो काम मारों ने भी नहीं करना। यह रही कर्नी।"
ारे ने कर्नी छोड़ दी, जो गंजे कारे की चांद पर बजती-बजती रह
ई।
कारा नीचे से एक तरह से चीख पड़ा, "तुम्हारा बेड़ा गर्क हो!
हो तो कट गए थे।" उसने सीधा होकर कहा, "अरे शैतान,
ुल्हाड़ी से सीधे ही मार दे।"
"बाबा! पता नहीं चला, कब हाथ से छूट गई।" तारा हंसता
ा रहा था।
"बाबा मत कह, कर्नी चाहे दो बार मार ले।"
"तेरा तो एक बार में ओ३म् स्वाहा हो जाएगा।"
"अबे कच्छे वाले! साला, स्वाह करने को कितना तैयार
रहता है!" कारा भी सीधा हमला करने लगा।
"यह तुम्हें कच्छे वाला क्यों कहते हैं?" मोदन ने तारे से पूछा।
"जाटों ने सिक्खी छोड़ दी, हमने सम्हाल ली, और कच्छा कोई
ाप तो बन्या नहीं था।" तारे ने कर्नी मोदन को पकड़ा दी और
ाज से गारे को एकसार करने लगा।
कारे ने मोदन के कान में कुछ फूंक दिया। मोदन ने हंसकर
ारे से पूछा, "तारे, सिक्ख तो तू पूरा है, मगर चक्कर चमारों के
ुहल्ले के भी काटता है।"
"यारो! काम करना और रोटी खानी है। आज तुम्हारे पास
और कल कोई और आवाज लगाए तो वहां हाजिर।" तारे ने जान-
बूझकर बात को टालना चाहा।
"सुना [illegible] लाल जूते का नाप दिया है उनके मुहल्ले में?" कारा

पहले तो बाज न आया।

"लो बाबा, यह तो तेरे लिए ही तैयार किया जा रहा है।"
तारे ने कारे की जूठी उसीको वापस कर दी।

"मैंने तुझे कहा था कि 'बाबा' मत कहना।" कारे ने ईंट
फेंकते हुए कहा।

तारे ने ईंट पकड़कर दीवार पर रख दी।

"तू बात घुमावदार करता है बुड्ढे!" तारे ने एक और
कर दी।

"सा'ब कहता था कि अनाड़ी के साथ काम मत करना। दो
बात करता है—लड़कों को झूठा और सौंठों को बुड्ढा कहता है।"
कारे की बात सुनकर सबकी हंसी निकल गई।

"मोहन यार, मकान बहुत बनाए, लेकिन ऐसी चौंचें कहीं
नहीं।" तारे ने स्वाद लेते हुए कहा।

"तेरे साथ ही दिन कट गए नहीं तो अपना भी जी नहीं लगता।"
मोहन ने खाली तसला दीवार से हटा लिया।

"तेरा जी लगवाने के लिए तो यह बड़ी आंखों वाली भी
आरम्भ कर देगी।" तारे ने मोहन के कान में अपना मुंह लगा
कहा।

"अबे तारे, मेरे साथ भी घुमावदार बातें करनी शुरू कर दीं।
तेरे लिए यह अच्छी बात नहीं।" इतना कहकर मोहन गारे में
घुसा।

इस बीच धन्तो भी पानी का घड़ा लेकर आ गई। उसने घड़ा
उलटते पूछा, "भाई, और लाऊं कि बस?"

"बस।" मोहन के मुंह से अकस्मात् निकल गया।
तो कहना चाहता था कि बीरन, तू तो भाई न कह। भाई शब्द उस
दिल में शूल की तरह चुभ गया और एक पीड़ा नस-नस में
गई।

धन्तो ने साहस करके एक बार मोहन को भरी-पूरी आं
देखने का प्रयत्न किया, लेकिन उसकी आंखें मोहन के सम्मुख न
उठती थीं। धन्तो को मन ही मन बड़ा गुस्सा आया, लेकिन वह
कर सकती थी! आज बीरो की छेड़खानी से वह भीतर ही भीत
थी। वह उसका साहस बढ़ा गई थी। काम रह
व्यतीत होता रहा। वे

खामोश बने एक-दूसरे की दिल की धड़कनों को सुनते रहे, लेकिन दिल की बात कोई भी न कह सका।

७

बात बिलकुल वही हुई जो सारे मिस्तरी ने कही थी। काम छत तक भाकर सामान की कमी के कारण रुक गया। काम कई दिन तक चलते न देख मोदन आज्ञा लेकर अपने गांव जाने को तैयार हो गया। चलते समय फीले को पक्का वादा किया कि सन्देशा भेज देना, वह तुरन्त भा जाएगा। उस समय उसके मन की अवस्था बड़ी सोच-नीय थी। जब तापी ने प्यार के साथ उसके कन्धे को थपथपाया, धन्तो मां के पीछे बिलकुल पसीजी खड़ी थी। जब उन दोनों ने एक-दूसरे को देखा, सांस दोनों के गले में अटकी हुई थी। उसमें कोई सन्देशा था कि नहीं, दोनों के लिए समझना कठिन था। यह स्पष्ट ही उनके चेहरों से पढ़ा जा सकता था कि मानसिक पीड़ा से वे दुखी हैं; और कभी-कभी उठता कम्पन उनको निराश कर जाता। उस निस्तब्ध वातावरण में एक ऐसी व्यथा छिपी थी जो किसी प्रकार भी नहीं हटाई जा सकती थी।

सारा भी किसी और घर पर जा लगा। वह कारीगर आदमी था। कितने दिन और प्रतीक्षा करता! सबको इस चिन्ता ने घेर लिया था कि छत किस प्रकार बनेगी। रिश्वत देकर लिए सरकारी रुपये थे ही कितने, जो पहले ही अभावग्रस्त घर का भार उतारते! अन्त में दो दिन बीतने के बाद फीले की दृष्टि भैंस पर पड़ी। उसने उसे बेचने का निश्चय किया। तापी को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ। उसका विचार था कि भैंस का दूध बहुतेरा है, उसको आवश्यकता-नुसार बेचा जा सकता है। इस प्रकार घर की गुजर अच्छी तरह चल जाएगी। भैंस का भी खल और चने के छिलके से गुजारा होता रहेगा। यदि प्रत्येक कार्य मनुष्य की इच्छा के अनुरूप होता रहे फिर कोई गिला-शिकवा पैदा ही न हो।

फीला भैंस को तापी की सलाह के बिना बेच नहीं सकता था, क्योंकि वह तापी और धन्तो की मेहनत का फल थी। यद्यपि घर का वह हर प्रकार से स्वामी था, पर बेकारी और नशे की कमजोरी ने घर में उसकी स्वाभिमान वाली कोई बात नहीं रहने दी थी।

नशे में गाली देते समय चाहे वह कितनी बढ़ मार लेता, वास्तविकता यह थी कि वह निखट्टू हो चुका था, भी कहें तो कोई अन्याय न होगा। फीले ने आंखें धरती में डालते तापी से पूछा, "जो भैंस बेच दें तो सारे काम जाएं।"

"बेच दे।" तापी ने एक ठण्डी सांस ली, जैसे वह यह सुनने को तैयार बैठी थी। उसने जवाब पहले ही तैयार कर रखा वह समझती थी कि कर्जे पर कर्जा कौन देगा! जगने का अलग पड़ा है। और न सही, बैठने के लिए छत तो चाहिए। धन्तो की तरफ देखा जो छत से भी ऊंची हो चुकी थी। जब दाम न हों, हाथ भी बेकार हो जाएं तो छाती का प्यार लेकर बेटियां दुश्मन दिखाई देने लगती हैं।

खड़े पैर भैंस का पूरा मूल्य कौन देता है, जबकि वह एक म की हो और वह भी अति ज़रूरतमन्द की! खरीदने वाले व्याप ने चार दिन पीछे ही साढ़े तीन सौ की लेकर सवा चार सौ की दी। भैंस बिकने और उचित पैसे न मिलने पर तापी की कमर टूट गई। फीला झट ही छत का सामान ले आया। काम कम के कारण मोहन को न बुलाया गया। कड़िया लगाकर बल्लियों टाइल चिन दीं।

छत पड़ गई, पर टीप रह गई और खिड़कियों के दरवाजे भी लगने से रह गए। तारे की मेहनत के रुपये देकर रकम खत्म गई थी। भैंस भी घर के लिए बिक गई। हाथ की मेहनत अलग जिसमें मां-बेटी ने कुछ कमा लेना था। दोस्तों-सम्बन्धियों को तकलीफ दी, लेकिन मकान का चेहरा-मोहरा अब भी नहीं बना था। कैंप के चिरवाए तख्तों को पुश्ती लगाकर, दरवाजे खड़े कर दिए। कुत्ते-बिल्ली से बचाव के लिए तो कुछ इन्तजाम करना था क्योंकि दरवाजे लगने की आशा निकट भविष्य में नहीं थी। सारी खिड़कियों में तापी ने सीमेंट के खाली कट्टे लगा दिए। उन्होंने नये घर में सामान रखकर दीया जलाया। घर में प्रकाश था, धूप की सुगन्ध थी, परन्तु दिल में शान्ति नहीं थी। तापी और धन्तो को नये घर का चाव क्या होना था, फीले को भी पहली रात नींद बिलकुल न आई। भैंस बिना घर सूना हो गया था और कटिया कब भैंस

इसकी आशा किसको थी! मनुष्य अपनी मजबूरियों से

र ऊंचा करके सांस लेता है और उतनी ही देर जीता है जितनी
र तक वह संघर्ष कर सकता है। जीना मनुष्य के लिए एक प्रकार से
निवार्य है।

अब फीले को पहले जितनी अफीम से नशा नहीं होता था।

८

[illegible] माह और गुज़र गए। ये दो महीने सुख-शांति के साथ नहीं
ीते थे। तापी बेशक मुंह से कुछ नहीं कहती थी, लेकिन अन्दर के
ुख से वह बहुत विह्वल थी। वह समझती थी कि उम्र-भर का
हण मेरे पल्ले पड़ चुका है जो किसी तरह से पीछा नहीं छोड़
सकता। उसका उदास और कुम्हलाया चेहरा चन्तो को देखकर
ाल हो जाता।

इस बात का तापी को अच्छी प्रकार से विश्वास हो चुका था
कि फीले की अफीम छूटनी नहीं और न ही कर्ज़ा उतर सकता है।
फीला इस साल भी अफीम छुड़ाने की गोलियां खाकर देख चुका
था, जुलाब से अन्दर धो डाला था, लेकिन अफीम गले की फांसी बन
गई थी, जो एक बार नये जन्म के बिना नहीं टाली जा सकती थी।
तापी ने सारी बातों को भट्ठी का ईंधन बनाते हुए चन्तो के ब्याह
की बात को ही मुख्य बात बना लिया। अब वह कई बार फीले के
गले पड़ जाती और उससे बात केवल लड़की की शादी की ही
करती।

एक शाम फीले, कारे और जगने की चाण्डाल चौकड़ी फिर जुड़
बैठी। कारा अपने साथ गांव से ही बोतल लाया था।

फीला नशे के प्रवाह में घड़ी-भर के लिए मानसिक चिंता से दूर
हो गया। वह चाहता था कि इस मस्त घड़ी में भगवान भी उसको
आवाज़ न लगाए। नशीली अवस्था से ऊंचा स्वर्ग उसकी समझ में
नहीं आया था।

"कारे! तू कहेगा कि कैसी बात करता है, पर कहे बिना नहीं
रहा जाता।" जगने ने फीले की तरफ इशारा कर उसको चेतावनी
दी, "अब फीला पैसे लौटाने की बात नहीं करता। हमको हर रोज
पूछता है। यारी की शर्म में कुछ कह नहीं सकता।"

घर की सारी स्थिति का कारे को पता था। वह इस सम्बन्ध

मैं क्या कह सकता था ! लेकिन फीले का एकदम नशा उतर ग
उसने मन में जगने को गाली निकाल दी। कम से कम वह बढ़
था कि ऐसे अवसर पर लेने-देने की बात न उठाई जाए, प
जगने के लिए इससे उचित अवसर और कोई नहीं था।

"जब तेरी रकम को ब्याज लग रहा है, तुझे और क्या है ?" फीले को ठीक उत्तर न सूझा।

"हाथ जोड़ता हूं, मैं ब्याज नहीं मांगता। मेरी मूल वापस कर दे।" पंडित ने फीले के बचने के सारे मार्ग बन्द किए।

"अभी क्या बात है, कहीं भाग रहे हैं ? मिल जाएंगे। तो हेरा-फेरी के ही बनाए हुए हैं—नकद तो नहीं दिए।" का फीले की हमदर्दी में जगने को धैर्य रखने के लिए कहा।

"भाई, भोलेनाथ की सौगन्ध ! सब नकद ही समझो। साथ को आया है, कानी कौड़ी ब्याज नहीं लेते; लेकिन इस महीने व वापस कर दो।" पंडित ने एक प्रकार से फीले के चारों ओर डाल दिया।

"दो महीने की मोहलत दे दो।" कारा जगने के प्रभाव में गया।

"फीला कह दे, मुझे दो मास भी स्वीकार है।"

"कुछ तो भाग-दौड़ करेंगे। तेरा फंदा तो काटना ही है। फीला एक प्रकार से मान गया।

"देख यार, साल-भर पीछे पैसे लेने हैं, अब भी कमबख्त फंद कहता है।"

जगने को मालूम था कि जितनी देर फीला सरकारी कर्ज़ को वापस नहीं करता, वह मकान को कुछ नहीं कर सकता, और इसने लिया अब फीले के पास कुछ देने को नहीं बचा था। वह इस कारण भी जल्दी करता था कि किस्तों से पहले जो रुपये मिल गए तो मिल गए, फिर मिलने कठिन हो जाएंगे। उसको यह भी यकीन था कि किस्तें भी वापस नहीं होनी हैं और मकान एक दिन नीलाम होगा।

फीले से रुपये वापस करने का हर प्रकार का प्रयत्न किया, परंतु ड्योढ़े-सवाये ब्याज पर भी उसको रुपये न मिल सके। फीले की खातिर कारा भी सोच रहा था, किंतु बना दोनों से कुछ नहीं। अंत में कारे ने यार को कठिनाई में फंसा देख एक राह -उसने

धन्तो का रिश्ता सिधवां बेट गांव के एक विधुर भोले से करने की सलाह दी, जिसकी मर चुकी औरत के तीन बच्चे थे। वह घर का खाता-पीता चौधर था। कारे ने सलाह दी कि हम भोले से अमानत पर दो सौ रुपये ले लेंगे। जब पास होंगे तो लौटा देंगे। भोले के तीन बच्चे और बड़ी उम्र, इन नुक्सों के कारण फीले का जमीर किसी प्रकार भी राजी न हो सका। उसे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे वह अपनी इकलौती लड़की को फांसी दे रहा है।

तापी के घर दिन-रात यह लड़ाई चलती रहती थी कि माने को साथ लेकर लड़की के लिए घर देखे और फिर इस भार से मुक्त हों। माने से उसका कहने का तात्पर्य था कि वह मोदन को सबसे पहले प्राथमिकता देता। यह उसके अपने दिल की भी इच्छा थी। फीले को ज्यादा फिक्र जगने को वायदे के अनुसार रुपये वापस करने की थी। वह समझता था कि लड़की की तो दस दिन बाद भी सगाई की जा सकती थी। और जगने की तरफ से पचास रुपये ब्याज की भी छूट हो रही थी। जब फीले का किसी तरफ भी काम न बना तो उसको सिधवां बेट वाले सारे नुक्स छोटे दिखाई देने लगे और बाद में साधारण। कारे ने इससे पहले कहीं रिश्ता करवाया नहीं था और न ही उसको इन बातों का अनुभव था। उसको जीवन में विधुरता, बड़ी उम्र और सौतेले बच्चों जैसे दुःख का अनुभव भी कहां से मिलता! वह पैदा होते ही अकेला था। ब्याह-शादी के सम्बन्धों को न जानता था। यदि वह कुछ जानता था तो यही कि उससे उसके मित्र का भार हल्का होगा। यह भी हो सकता था कि भोला शादी पर चार पैसे लगाने के लिए भी तैयार हो जाए। फीले के लिए डूबते को तिनके का सहारा था। उसके पास कारे से बढ़कर हमदर्द यार कोई नहीं था जो उसकी कठिनाई में थोड़ी-बहुत सहायता करता। फीले को यह पता था कि यदि तापी और माने से यह सलाह की, तो वे किसी भी प्रकार से तैयार नहीं होंगे। अन्त वह और कारा एक दिन तय करके सिधवां चले गए। भोला चार साल से रंडवा था और उम्र में भी चौंतीस-पैंतीस साल से कम न था। उस समय फीले को यह एक अच्छा और नेक काम दिखाई देता था, लेकिन इसके परिणामों से फीला बेपरवाह और कारा अनजान था।

उन्होंने सिधवां में धन्तो का रिश्ता ही नहीं किया था, बल्कि

एक चोरी भी कर ली थी। यही कारण था कि महीना-भर [illegible]
इस सम्बन्ध की हवा भी नहीं लगने दी।

६

तापी हैरान थी कि जगने के रुपये कैसे लौटा दिए गए। उ[illegible]
इधर-उधर से पूछने का प्रयत्न तो किया, लेकिन हाथ कुछ न [illegible]
सका। अब जब-जब भी वह फीले के सम्मुख लड़की की शादी की ब[illegible]
मचाती, वह ठण्डा पड़ जाता। जैसे मन में विचार कर रहा हो [illegible]
इसको कैसे बताऊं। उसने इस सम्बन्ध में केवल चुप्पी साध र[illegible]
थी। तापी ने यह भी सोचा कि उसने पिछले दिनों अफीम के [illegible]
दाने भी नहीं बेचे। न अब वह मुझे तंग ही करता है। उसको ख्या[illegible]
आया कि पिछले दिनों वह और कारा रिश्ते के लिए भी जाते [illegible]
हैं। उसको बहुत शक अफीम और जगने के पैसे लौटाने से था।
सरकारी राशन कार्ड का अफीम से उसके दस रोज ही कटते थे,
बाकी वह बीस दिन इधर-उधर से नाजायज अफीम खाकर ही
गुजारता था।

सब कुछ सोचने के बाद तापी को ध्यान आया और वह खुर्पा
तथा चद्दर उठाकर चमाल के रास्ते पर चल पड़ी। धन्तो को वह
जाते समय कह गई थी कि वह कटिया के लिए घास लेने जा रही
है। फीला तभी घास के लिए जाता, जब तापी से अफीम के लिए
पैसे लेने होते। वह तो इसलिए गई थी कि यदि कारा मिला तो
वह सब कुछ बता देगा। औरत को चाहे कितनी अबला, बुद्धिहीन
समझा जाए, परन्तु जब वह अपनी करनी पर आ जाती है तो अच्छे-
अच्छे लुकमान को बुद्धू बना देती है। फिर बेचारे कारे में कौन-सी
शक्ति थी जो वह क्षण दो क्षण सामना करता, जबकि वह जीवन-
भर औरत की एक मुस्कान के लिए तरसता रहा था-!

तापी घास खोदते-खोदते निराश हो गई। एक झोली के स्थान
पर उसने एक गठरी बना ली, लेकिन कारा उसको कहीं दिखाई न
दिया। पहले तो रोज भाग आता था, आज पता नहीं क्या गोली
लग गई उसे! कहने पर कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता। वह कीकर
के नीचे घास में से मिट्टी निकालने लगी। इसी बीच कारा अपनी
मसीटता नजर आया। जीवन का प्रथम

तापी कारे को देखकर प्रसन्न हुई। कारे के निकट आ जाने पर भी तापी ने पूरा घूंघट न निकाला और न ही अपना मुंह दूसरी ओर घुमाया।

"भाभी! आगे न पीछे, हमारे ऊपर कैसे दया हो गई?"

"मैंने सोचा था कि इधर से मेरा भइया जो आएगा।"

"अगर भइया न कहे तो तेरा क्या बिगड़ता है?"

"तो तुझे क्या मिल जाएगा?" तापी आधे घूंघट में ही मुस्करा पड़ी।

"इससे अधिक क्या मिल सकता है कि सारा झगड़ा समाप्त हो जाएगा।" कारा एक तरह से पागल हो चुका था। उसके नेत्रों में जन्म-जन्म का प्यार एक अनोखी चमक से जाग पड़ा था।

तापी ने ठीक मौका समझकर चतुरता दिखाई।

"सच, मुझे तो आज पता चला है, लड़की का क्या कर आए?" उसने कारे को आगे से घेरने का प्रयत्न किया।

"लौंडिया अगर तेरी वहां राज न करे, तो मेरी दाढ़ी मूंड़ देना।" कारे ने तापी पर एक और अहसान लादते हुए कहा, "बैठ के लिखवा। तुझे पता नहीं?" कारा बात खुल जाने पर हैरान-सा हुआ। उसको तापी के पूछने पर विश्वास हो गया था कि फीले ने बात घर पर कर दी है।

"लड़के की उम्र क्या है?" अब बात निकल जाने के कारण तापी एक प्रकार से हाकिम बन चुकी थी।

"यही कोई पच्चीस-छब्बीस, अधिक से अधिक सत्ताईस का होगा।"

"अधिक से अधिक चौंतीस-पैंतीस का भी हो सकता है। क्यों, है न?" तापी उसकी फिसलती जबान से भांप गई थी। उसका गुस्सा जाग पड़ा कि क्यों नहीं उन्होंने लड़की की मां से पूछा; माने की भी सलाह क्यों न ली।

"नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है?" कारे ने महसूस किया कि वह बुरी तरह फंस गया है।

"पहले [illegible] बता कि लड़का इतनी देर तक क्यों बढ़ा रहा?" तापी का एक रंग चढ़ रहा था और एक उतर रहा था।

यहां आकर कारे से असली बात छिपानी कठिन हो गई। यद्यपि बात ने दो दिन में सब प्रकट हो जाना ही था। उसने सच ही कहना

ठीक समझा।

"लड़का विधुर है, लेकिन घर में बहुत आराम है।" कारे ने विष खांड में मिलाकर देने का प्रयत्न किया।

"विधुर है!" तापी के सिर पर जैसे सम वाली लाठी लगी हो। उसको चक्कर आ गया और वह सिर पकड़ बैठ गई। उसने बेटी को भी अपने जैसे नरक में फंसा देखा। पश्चात् उसने गम्भीरता से पूछा, "उसके बच्चे कितने हैं?" यह विश्वास हो गया था कि उसका प्रत्येक शब्द ठीक-ठीक उतरेगा।

कारे के मानसिक दुःख का इस समय अनुमान लगाना था। अगर सच कहता तो तापी के मन से उतरता, मगर झूठ तो कल को जूते पड़ सकते थे। अब तो बात को ढके रहने का ही नहीं उठता था। उसने पहली बार यह महसूस किया कि बीच में पड़ा ही क्यों। उसको निश्चय हो गया था कि उसका मुँह काला अवश्य होगा। तापी की कठोर आशा उसकी नंगी कोड़े बरसा रही थी और उसके नियंत्रण से कहीं बाहर होती रही थी।

"बताया नहीं, बच्चे कितने हैं?" कारे को चुप्पी साधे तापी समझ गई थी कि बच्चे भी अवश्य हैं।

"दो हैं—एक लड़का और एक लड़की।" कारा डरते हुए। लड़का छिपा गया। शायद वह यमदूतों द्वारा पकड़ा, धर्मराज सम्मुख भी इतना बुरा न महसूस करता, जितना वह तापी के सा महसूस कर रहा था। उसके अन्दर की दुखी अवस्था को तापी क्या, स्वयं भगवान भी नहीं जान सकते थे।

तापी का चेहरा रणचण्डी की भांति हो गया।

"तुम्हारा सत्यानाश हो, तुम मर जाओ! मेरी लड़की गाय ... चोरी-चोरी सौदा कर आए? जा कारे—हत्यारे दूर [illegible] जा, नहीं तो लहू पी लूंगी!" उसपर देवी सवा ... बस नहीं हो रहा था।

... ऐसी खूंखार और दयनीय अवस्था कभी नहीं देखा था। वह वहीं खड़ा रह गया। उसकी ... मिट्टी हो गई। वह तापी के ... नहीं ... । उसको जीवन में पहले कभी

हीं हुआ था। वह तापी को किसी प्रकार भी दिलासा नहीं दे
कता था। वह बिना कुछ बोले उन्हीं पैरों पमाल वापस लौट
या।

तापी ने गीली घास उठाई और भैंस की खोरी में ला फेंकी।
र वह खाट पर आ गिरी। वह इस तरह निढाल पड़ी थी, जैसे
सकी सारी हड्डियों ने मांस छोड़ दिया हो। उसकी आंखें बर-
ती परनालों की तरह बन्द नहीं होने को आती थीं। मन्नो ने
ससे पूछा, "मां, बात क्या है ?"

तापी सिर फेरकर पुनः रोने लगी। मानो वह कहना चाहती
ी कि मैं जिन्दगी-भर रोई हूं, तू भी जिन्दगी-भर रोने के लिए
यार हो जा। यह नरक कभी नहीं समाप्त होगा। उसको बहुत गया
ुख इस बात का था कि अगर लड़की का विवाह विधुर से ही
रना था तो उसने सारी उम्र मुसीबतें क्यों सही थीं !

दुःखों की बौछार से कण-कण टूटी और निढाल हुई तापी के
न्दर एक सुलगता विरोध शक्ति बन गया। ज्यों-ज्यों वह सोचती,
एक दृढ़ता उसके अन्दर समा जाती।

१०

तापी ने मन्नो के रिश्ते के सम्बन्ध में इधर-उधर खबर भेजकर
सब कुछ मालूम कर लिया। दो के स्थान पर बच्चे तीन साबित हो
गए, जो बारह, नौ और सात साल के थे। प्रत्येक मनुष्य के लिए
झूठ को छिपाए रखना बहुत कठिन होता है, फिर पीले और कारे
के लिए भेद को छिपाए रखना कब तक सम्भव था ? भोला लड़का
नहीं, चौंतीस-पैंतीस का पूरा मर्द था, जो हर सुबह सिर के सफेद
बालों को चिमटी से खींचता रहता। तापी को ठगने द्वारा प्राप्त
ढाई सौ रुपये का भी पता चल गया। जब उसने सब कुछ जान
लिया तब वह बहुत बुरी तरह कलपी।

अपनी मां की शोचनीय हालत से मन्नो ने भी भांप लिया कि
कोई बात अवश्य है। जब उसको सारी बात का पता चला, वह
एकदम स्तम्भित रह गई। जिस जीवनसाथी के उसको रात-भर
सपने आया करते थे, उसके चेहरे पर यह किसने कालिख मल दी ?
सहन पर जोर डालने पर भी उसका चेहरा मन्नो की आंखों के

सामने नहीं आ रहा था। उसकी आंखों की झीलें बह नि
उसके जहन की कितनी ही मैल धुल गई। उसने आंखें बन्द
देखा कि मोदन गारे वाला तसला पकड़े हुए पूछ रहा था-
तेरी क्या सलाह है ? धन्तो चीत्कार कर उठी—वह ऐसा न
देगी। परन्तु वास्तविकता यह थी कि उसको कोई अनजा
बांह पकड़े कहीं और खींचकर ले जा रहा था— जिसके लिए
कभी भी नहीं सोचा था। वह मां को धैर्य देना चाहती थी,
उसको स्वयं को सम्हालना कठिन हो गया था। उसने कभी
सोचा था कि उसका बाप उसका रुपयों की खातिर सौदा भी
सकता है—चाहे वह लाख ऐबी था।

धन्तो ने स्वयं को सम्हाला और मां का कंधा दबाया। "
तू रो मत, मैं जो कहती हूं।"

तापी एक पल मुस्कराई, जैसे कहना चाहती हो कि अन
आने वाले तूफान को क्या जाने !

"तू बेटी, चुप होने को कहती है, मेरा तो कुछ खाकर मरने
जी करता है।" तापी यह अचानक कह गई। उसे यह ध्यान
रहा कि लड़की पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

"मां ! अपनी भाई पर मैं स्वयं कर लूंगी। तूने बहुत दुःख
लिया है। अब मुझसे देखा नहीं जाता।" लड़की आंसू रोक न स
तथा उसकी आंखें भर आईं। उसने भरी आंखों से प्यारो को रेल
पटरी पर कटे देखा था—सुहाग की दो चूड़ियों वाली बांह अब
तड़पी जा रही थी।

उनको पता न चला कि कब फौजा आया और उनकी
सुनकर कब वापस मुड़ गया। मां-बेटी की यह हालत उससे
नहीं गई।

"मरें तेरे दुश्मन, तू क्यों मरना चाहती है ? मेरा तो वैसे ही म
मर आया था।" तापी ने लड़की की आंखें पोंछी और उसे छाती
लगा लिया। मां की छाती में कितना सुख था ! धन्तो की आंखें बं
हो गईं और लम्बी सांस भरते उसने कहा, "मां ! तू बापू से साफ
दे, मैंने किसी हालत में वहां नहीं जाना। चाहे मुझे मरना ही
पड़ जाए।" उसका विचार था कि प्यारो को अपने विवाह
मर जाना चाहिए था।

चुप कर जा। गुरु भली करेंगे।" तापी ने धन्तो को अपनी तरफ पूर्ण आश्वासन दिया।

"चुप रहने से किसी गुरु ने भली नहीं करनी, तू माने को लवा ले।" धन्तो ने मानो अपने दिल की बात कह डाली, जिसको पी ने शायद समझ लिया।

धन्तो को कहे बिना ही तापी माने को बुलाने वाली थी, क्योंकि ह समझती थी कि मंझर में पड़ी नाव को उसकी पतवारों के बिना किनारा नहीं मिलता।

फीले को भी प्रतीत हो रहा था कि वह एक गुनाह कर रहा है। उसको धन्तो का सम्बन्ध करने से पहले भी पता था कि वह लत स्थान से रुपये पकड़ रहा है। फीले को उसी समय ज्ञात हो या था कि वह लड़की को कुएं में धक्का दे रहा है, लेकिन उसके दिल की हालत कोई नहीं पूछ रहा था कि आखिर एक बाप अपनी बेटी के पैसे क्यों लेता है!

वह बहुत कम घर आता था। रोटी और चाय के अलावा वह [illegible] पर पड़ा रहता था। जगने के साथ शतरंज खेलता रहता। मां-बेटी की नजरों में वह कसाइयों से भी बुरा बन चुका था, जिसने बेटी का जीवित मांस बेच दिया था। वह अब घर में आंखें ऊंची नहीं कर सकता था। वह महसूस कर रहा था कि उसने तापी को सारी उम्र जाट के बैलों की तरह जोता है। उसने उसकी रात-दिन [illegible] दसों नाखूनों की कमाई, शराब और अफीम में डकार दी है। उसने तापी के दाने बेचे, कपड़ा बेचा, उसके पाले हुए पशु बेचे और अब उसकी बेटी भी बेच दी…। शायद मेरी तो वह बेटी नहीं थी। अगर होती तो इस प्रकार भूल न करता। वह सोच रहा था कि अब किसीकी आंतें खींच ली जाएं तो वह कैसे नहीं शोर मचाएगा। वह बड़बड़ा उठा, "तापी, तू मुझे क्षमा कर! मैं कितना नीच हूं, चंडाल [illegible] काश, मैं जहर पीकर मर जाऊं!"

फीला माने के आने तक अपनी गलती पर बहुत पश्चात्ताप कर चुका था, किन्तु उसको ऐसे किसी छुटकारे का मार्ग नहीं दिखाई देता था जो हर पल से उसको अपनी बिरादरी की बातों से निजात दिला सकता।

माने ने आकर सबसे अधिक गिला तापी से किया कि उसने उसको शीघ्र खबर क्यों न दी। तापी अपनी जगह सच्ची थी कि

भी मैं देख लूंगा।"

"बस, ठीक है फिर।" फीले की दिली इच्छा थी और मत सताओ, जो चाहो करवा लो।

"अब रिश्ते मेरे हाथों में तीन हैं।" माने चलाई, "मेरे गांव के नारायण का लड़का, जो भर्ती हुआ है, मैं जो कह दूंगा, उस बात को वे . एक रिश्ता रूमी है। मान वे भी जाएंगे, पर लोभी हैं। तीसरा है। तुम्हारा देखा-भाला है। लड़का गरीब जरूर है, पर कारीगर हो गया है और किसी बात की कमी भी नहीं। भगवान झूठ न लड़के की इज्जत गांव में मुझसे अधिक हो गई है। बता लो। तीनों में जो जगह अच्छी लगे, वहीं रुपया हथेली पर रखे" माने ने देखे हुए घरों की सभी बातें सुनाईं।

"मैंने कहीं नहीं जाना मानू।" फीले ने बात खत्म करते कहा, "जहां तुझे अच्छा लगे, रुपया हाथ पर रख देना। मेरी तुझसे ज्यादा नहीं।" वह इतना कहकर उठ खड़ा हुआ चला गया।

"शुक्र भगवान का, अब तो सीधा हुआ।" तापी ने फीले जाने के बाद धरती को नमस्कार करते हुए कहा।

धन्तो का एक तरफ से तो गला फंसने से निकल गया, उसके दिल की बात अभी पूरी नहीं हुई थी, और दिल की धड़कन भी पहले से कहीं अधिक तेज हो चुकी थी। उसके लिए अंदर समाप्त नहीं हुए थे।

"अब तू बता? फिर न कहना कि फलां जगह अच्छी थी।" माने ने तापी से सलाह पूछी।

"मेरे मन की पूछते हो तो मोहन अच्छा लड़का है। हाथों का भी साफ है, किसी तरह का ऐब नहीं।" तापी ने दिल की बात कह दी। वह भी बराबर का रिश्ता चाहती थी। "लौंडिया कोई लूली लंगड़ी नहीं, दोनों प्राणी काम करेंगे और अच्छे दिन बिताएंगे।" तापी के सामने राह बताने के लिए अपने जीवन का कड़वा अनुभव तापी था।

"राय मेरी भी यही है कि मोहन से अच्छा लड़का हमें और नहीं मिलना। मैं केवल अपने मुंह से नहीं था। लड़के

मां सारी उमर तुम्हें आशीष देगी। यही जानती है कि किस
ार पीस-पकाकर लड़के को उसने पाला है।" मानो सुध था कि
के दिल की मुराद पूरी हो गई।

धन्तो को खुशी ने पागल बना दिया। उसने दोनों हाथ अपनी
ती में दबा लिए और आंखें बंद कर भगवान का शुक्र करने लगी,
सका उसे कभी खयाल ही नहीं आया था।

११

माघ का महीना था। वीरो दिन छोटे होने के कारण केवल
क बार घास के लिए आया करती थी। उसके मुहल्ले की लड़कियां
सके साथ जाने के लिए ललचाती, क्योंकि उसके साथ होने से यदि
िसी जाट के गन्ने अथवा भुट्टों आदि का नुकसान हो जाता, तो
ाधारणतया वह कुछ न कहता था। जाट लड़के तो वीरो को देख-
र धक्कर-पानी हो जाते थे। उनको लाभे की आशिकी का अच्छी
रह पता था। दिलेर लोगों का प्यार शराब की महक की तरह
ल्दी फैल जाता है। सहेलियों में जाती वीरो को जाट के लड़के हीर
हते। जब वीरो के मन में कुछ आता तो वह बिना बताए सहे-
लियों से अलग हो जाती। कभी-कभी बहाना भी बना लेती और
ूमकर अपने दिल की राह चल देती।

उसके दिल का रास्ता लाभे के कुएं की तरफ जाने वाली पग-
डंडी थी। आज भी वह अपनी सहेलियों से पिंड छुड़ा आई थी।
जब वह रास्ते के मध्य में आई तो उसने धन्तो को भट्ठी के ईंधन की
गांठ उठाए देखा। दो खेतों पीछे उसकी मां को भी गन्ने की सूखी
पत्तियों की गांठ उठाए हुए देखा। धन्तो को देखकर वीरो की
अपने-आप हंसी निकल गई। पास आकर धन्तो भी हंसी न रोक
सकी। उसको पता था कि वीरो आदत के अनुसार कुछ न कुछ
गड़बड़ अवश्य करेगी। जब वह वीरो के सामने आकर एक क्षण के
लिए रुकी, उसने जोर से गठरी पर हाथ मारा। गठरी बहुत भारी
नहीं थी। वह एक खाली पानी की नाली में जा गिरी। वीरो ने
एक होंठ नजाकत से ढीला छोड़ा हुआ था और धन्तो के भीतर की
हंसी आंखों की राह से प्रकट हो रही थी। उसकी छेड़छाड़ से पास
आती ताबी मुस्करा पड़ी।

"कैसी बिगड़ी भैंस की तरह शैतानी कर रही है।
महसूस हो रहा था कि शायद बीरो हाथापाई भी करेगी।
"शैतानी मैं कर रही हूं ?" बीरो की सांस चढ़ी हुई थी
"अरी, उस हट्टे-कट्टे
"ऐसे ही मुंह मत, मां आ रही है।" धन्तो
से बचाते हुए कहा।
"आती रहे, मुझे उसका डर पड़ा है !" बीरो ने ताई
ताज के लिए देखा।
"सौंकिया, रुक क्यों गई ?" ताई ने पास आकर पूछा
"चाची, तू चल। मैं इसे माटी-पोतों वाली बनाकर
हूं।" बीरो ने ताई को भेजने की नीयत से कहा।
"नहीं बीरो, अभी भट्ठी गर्म करनी है।"
"बस चाची, तुझे जोहड़ तक नहीं पहुंचने दूंगी।"
जाने के लिए हाथ से इशारा किया।
"धन्तो, देरी मत करना, मेरी बेटी !" ताई को इनकी
का एक प्रकार से मान था। उसने छोटी-मोटी बात के लिए
को कभी मना नहीं किया था। वह जल्दी-जल्दी चल पड़ी
देखकर धन्तो भी शीघ्र चल दे।
बीरो ने धन्तो की गर्दन में पहलवानों की तरह हाथ मार
उसको साथ लेकर नाली में गांठ पर गिर पड़ी। वे दोनों
दबकर उभरीं, तत्पश्चात् हंसी में लोटपोट हो गईं। बीरो ने
के गाल पर हल्की थपत लगाते हुए कहा, "क्यों री कमजात, [redacted]
तरफ आई है ?"
"इस तरफ का क्या तूने बैनामा करवाया हुआ है ?"
"ऐसा क्यों नहीं कहती कि तुझे मेरा साथ सहन नहीं होता
अरी, अब तो तेरे दिल की भी हो गई !"
"अपने प्रियतम को छिपाकर रख। बिजली गिराने को फिर
है।" धन्तो ने साथी के काले रंग पर व्यंग्य किया।
"जब तक मैं जीती हूं, बिजली बेचारी की क्या मजाल जो आंख
मिला जाए !" बीरो को अपने साथी के काले रंग पर अभिमान था।
"क्या कहने इस रंग के जो काले रंग [redacted] नाग की तरह फुंकारते
. . है !" धन्तो ने एक जलती लकड़ी और लगा दी।
रंग की क्या बात करती है, अरी भड़भूंजन ! यह ऐसे

ही नहीं मिलता।" वीरो होंठों पर जीभ फेरते हुए बोली, "इस रंग को मत्था नवाया कर, यह रंग तो कृष्ण भगवान का है।"

"अपने कान्ह से कहना कि भगवान के वास्ते मेरी भट्ठी के सामने मत बैठा करे।" धन्तो की आंखों में अब भी शरारत थी।

"तू और मुरमुरे तोड़कर दिया कर मोदन को। वह तो अब जरूर बैठा करेगा।" वीरो ने एक हिलोर से सिर हिलाया। "अरी कुतिया, तू जो उसके कुएं पर चक्कर काटती फिरती है।"

"तू अपने चन्द्रभान को सम्हालके रख, खेत की तरफ आने आ रहे हैं।"

"अरी भड़भूंजन, खून हो जाएंगे इस कुएं पर।" वीरो ने बायां हाथ धन्तो की जांघ पर मारा।

"तेरी बोलती बन्द न करवा दूं नम्बरदार से कहकर!"

"नम्बरदार तेरा, सरपंच तेरा, गवरमेण्ट तेरी, जैसी मर्जी हो, नचा ले उंगली पर।" धन्तो आज हावी हो रही थी।

"धन्तो की बच्ची, अब कह ले, क्योंकि अब तेरे मन की बात तो पूरी हो गई! अब क्या मुझे बातें न आएंगी?" वीरो ने आगे की ओर आकर घेरा डाला।

"तेरी मुरादों को आग तो नहीं लगी! तूने भी तो चोटी का बेर तोड़ा है।" धन्तो ने गन्ने की पत्ती को मुंह में दबाकर उसको मध्य से चीर डाला।

"तोड़ा तो ऊंचाई का बेर ही था, पर उसके लक्षण बताते हैं कि वह खट्टा निकलेगा।" वीरो इतना कहकर उदास हो गई।

"क्यों?" धन्तो इस बात से हैरान थी।

"आदमी बातों से ही जाना जाता है। जब जो टोहती-टोहती हूं, खाली बर्तन जैसी आवाज करता है।" उन दोनों की एकसाथ हंसी निकल गई। "कोई बात नहीं, वीरो से सामना हुआ है। एक बार को तो बता दूंगी।"

"वीरो, ऐसा तो नहीं दिखाई देता।"

"हां, वैसे तो उसके अच्छे होने में कोई शक नहीं, चाहे उसको इतना-इतना काट लूं, आह तक नहीं करता। बस, उसको यही खलती है।" वह एक पल चुप होकर मुस्करा पड़ी, "तू मेरी बैरी तो दिल अपनी जगह है ना?"

धन्तो हंसती आंखों से वीरो को देखती रही, परन्तु उसने उत्तर

[illegible]

[illegible]

[illegible] थोड़ दिया।

[illegible]

"तू [illegible] के [illegible] और [illegible]।" [illegible] देकर चीनी को नाक [illegible] दिया।

चीनी ने देखा, [illegible] बाहर, [illegible] और [illegible] रंग का [illegible] है। [illegible] कारण चीनी [illegible] को [illegible] अभी, [illegible] एक तरह [illegible] इसी कारण वह [illegible] अपनी नाक के [illegible]

[illegible] चीनी की [illegible] से प्यार [illegible]

"[illegible], उसकी बातें मैं समझता हूँ और तू किस की बात है ?" मोते ने सिर उठाकर चारों ओर देखा, "बीरो, ... है।"

"का रहते है !" बीरो आराम से बैठी रही। ... मोते ... बीरो ने उसका हाथ और से पकड़ लिया।

"... [illegible] !" मोते ने ... हुए हाथ खींच लिया।

... भी ..., ... देखती हो कि कितने ... हैं ...

"यह कोई ... देखने वाली बात है ! ... देखनी ... है !" मोते धीरे-धीरे ... हुए निकल गया।

बीरो ... मुस्कराती रही और ... बातों में ... लगी, जैसे पहले से बड़ी ... रही थी।

१२

मोते को जब पता चला कि ... की ... ... गई है, तो वह ... रह गया। उसको ... को ... का बहुत ... नहीं था, ... दुःख इस बात का था कि अब ... किसी रिश्ते के पाने की सम्भावना नहीं रही थी। उसने ... गांव के ... मिए और ... ... के ... की ... इकट्ठी कर ली। ... का ..., मनोहर का ... ... का ... उसकी बिरादरी के मुख्य व्यक्ति थे।

मोते ने ... को भी ... से ... लिया। ... को ... दूसरी जगह सगाई होने का कोई दुःख नहीं था। फीते के ... और पछताते मन को उसने पहचान लिया था। फिर ... ने ... उसको बहुत बुरा-भला कहा था। वह भी समझता था कि मां बेटी ... नरक में पड़े देखकर ... न देगी तो ... कहेगी ! ... ने तय कर लिया था कि ... वालों से कौन-सा ... देना जाएगा। वह भी फीते की तरह ... ...-मोटी बात पर फीते के नाराज होने के पक्ष में ... भी पता था कि फीते के बिना मुझे भी किसी ...

... बिरादरी की पंचायत गांव के दूसरी ओर ... ... का ... विवाह हुआ था और

...ने से उसका लिया और उसके साथ घर चल पड़ा। ...
...हुए होने के कारण निक्का पहले भी इस गांव आया ...
..., परन्तु फीके से उसका विशेष मेल-मिलाप नहीं था। उसने ...
उसके घर आकर पन्नो को देखा तो उसके मन में कई ...
जागी हुईं। उसने पहले भी नाड़ी को कई बार देखा था, लेकिन ...
देखकर उसे बड़ी हैरानी हुई। अब उसने पन्नो का एकतरफ ...
और स्वरूप देखा। उसकी तीखी दृष्टि ने दोनों की नाड़ी के ...
समझा। अब उसकी पूर्ण सहानुभूति फीके के साथ थी। उसने ...
लिया कि पन्नो को फीके से छीनी करना बिल्कुल ...
जबरदस्ती होगी।

"अब बता, इससे कैसे पिण्ड छुड़ाएं?" निक्के ने ...
बैठते हुए कहा, "मैं जानबूझकर तुम्हें यहां से उठाकर लाया ...
कि अपना हमारी बिरादरी का और प्रधान बन बैठे थे।" निक्के ...
फीके के साथ नाली का हृदय जीतने के लिए चतुराई बरती।

"भाई, चाय बना दूं?" नाली ने शिष्टाचार के नाते पूछा।

"नहीं बहन, कोई जरूरत नहीं, अभी पी है।"

"रुपया कहीं सो उसको देना है, आषाढ़ की फसल पर उसे दे दूंगा।" फीके को रुपये का पाने की तरफ से पूर्ण भरोसा था।

"तू कहे तो रुपया मैं दे दूं?" निक्के ने झूठा रोब देना चाहा।

"नहीं, मेहरबानी भइया।" फीके ने मना कर दिया।

"बस उठ, अब उससे पीछा छुड़ाएं।" निक्का हमदर्दी जताने का पूरा प्रयत्न कर रहा था। उसने उठते हुए एक बार पन्नो को गहरी नजरों से देखा। और फिर उसने सोचा कि क्या फीके की मदद करके अच्छा काम कर रहा है?

फीके ने जाते-जाते अपने को भी दुकान से उठा लिया था, क्योंकि एकत्रित लोगों में उसके आदमी थोड़े थे। पंचायत उसकी होती है जिसके आदमी अधिक होते हैं। निक्के ने आषाढ़ में फीके की तरफ से रकम वापस करने का इकरार बताया तथा रिश्ते वाली बात हमेशा के लिए खत्म कर दी।

एक आदमी फौरन बोला, "पहले रिश्ते के लिए ...
यदि रुपये से मुकर गए तो इनका ...
पर लिखवा दो।"

संवारते हुए कहा, "अबे खासा ...

उसने भी किया। कटाई के दिनों में खेत में मशक से पानी डालने के एवज जो अनाज मिला, उसे वह एक स्थान पर इकट्ठा करता रहा। इस प्रकार कुछ फीले ने प्राप्त किया और कुछ मां-बेटी की चुनी बालियों को एक स्थान पर गाहने से मिला। परन्तु इस सारी मेहनत के वही बारह-तेरह मन दाने थे जो भोले की रकम भी नहीं पूरी कर सकते थे। पंडित ने दाने खींचने का बड़ा दांव लगाया। उसने कारे से भी आग्रह किया, परन्तु फीका हर बार कहता कि जिस प्रकार भोले के पैसे देने के बाद ही उसका प्रबन्ध हो सकेगा। बा[illegible] को यह बात शुरू से ही अच्छी नहीं लगती थी, क्योंकि रुपया [illegible] भोले के लिए भी पूरा नहीं हो सकता था। फिर सरकारी किश्तें भी निकट आ गई थीं, जो गर्मी-सर्दी के मौसम की तरह नहीं टाली जा सकती थीं। ब्राह्मण ने जब देखा कि नरमी से काम नहीं चलता तो उसने गिला और धमकियां देनी आरम्भ कर दीं। जब इसका भी फीले पर कोई असर न देखा तो उसने मित्रता को ताक पर रखकर पंचायत में दावा करने की धमकी दे दी।

सिधवां वाले जाट ने नरयाणसिंह जाट द्वारा आकर रुपये मांगे। फीले ने एक सौ पचास उसके सामने रखते हुए कहा, "ये हाजिर हैं, बाकी के लिए भैंस मण्डी ले जाऊंगा।"

नरयाणसिंह के साले ने नाक-भौं चढ़ाते हुए कहा, "तेरा इकरार सारे देने को था, हमें नहीं मालूम, पूरा कर।"

"अरे सरदारजी!" कारा बोल पड़ा, "सीधे सामने करने वालों को तो शेर भी नहीं खाता। बिना बहाना और टाल-मटोल के एक सौ पचास तुम्हारे सामने रख दिए हैं। एक-आध महीने के बाद बाकी के भी मिल जाएंगे। और तुम्हें क्या चाहिए?"

"हमें चाहिए रुपये जो झोली में डलवाकर लाया था।"

"एक-आध महीने के लिए परस्पर क्यों तल्खी बढ़ाते हो?" फीले ने कहा।

"तुम फेरे डाल दो। बताओ, और कितना चाहिए?" भोले ने मन की बात आखिर कह डाली। यही बात वह नरयाणसिंह के साले को सारे रास्ते समझाता आया था।

"इस बात का अब नाम न लो।" फीले को यह बात कैसे लगती थी।

?" नरयाणसिंह ने जल्दी मचाई, "अब भी बिगरे

... उतरकर खजूर पर लटक गया था।

अब कठिनाई यह आन पड़ी थी कि ... आवश्यकता पड़ती थी तो वह जगने से पैसे नहीं ले सकता था। ... लगभग सभी बेचे जा चुके थे। भट्ठी के दानों से मुश्किल से घर की रोटी और चाय का काम ही चलता था। वर्षा के कारण भट्ठी भी सावन में ठीक प्रकार से नहीं रखी जा सकती थी। दूसरी कठिनाई यह आ गई थी कि मकानों के जोड़ों में वर्षा के कारण मिट्टी गिर चुकी थी। ठीक न होने के कारण मकान का गिरना भी सम्भव ... गरीब का जीना कम और मिन्नत ही अधिक होती है। ताषी के ... पर उसने भैंस भी बेच दी। शहर से सीमेंट लाकर तारे मिस्त्री ... आवाज़ लगाई। वह मन्दे के कारण पहले से ही तैयार बैठा था। ... के कारण घर में फिर रौनक आ गई। तारे ने मोदन को याद कि... किन्तु मंगेतर होने के कारण वह बड़ोवाल नहीं आ सकता था।

फीले के पास थोड़े पैसे बच गए थे जो कुछ दिनों में ही समाप्त होने वाले थे। पैसे होते उसे शराब पीने से नहीं हटाया जा सकता था। यद्यपि वह इस नशे को हद से ज़्यादा गाली देता था और नफरत भी करता था।

गर्मी की फसल के बाद ताषी फीले से दो बार झगड़ चुकी ... कि लड़के को बुलाकर जोड़िया के हाथ पीले कर दिए जाएँ और उसे भेज दिया जाए, परन्तु फीला कहता कि एक ही लड़की ... बिरादरी में कम से कम मुँह रखने वाला तो ब्याह करना चाहिए ... विवाह के लिए वह रुपयों के बारे में समझता था कि जैसे वह पहले मुश्किलों में प्रबन्ध करता रहा है, इस बार भी कोई धर्मात्मा ... हो जाएगा, लेकिन लड़की के विवाह के खर्च के लिए धन करने को भी कोई धर्मात्मा तैयार नहीं हो रहा था।

१४

भादों आषाढ़ में ही खेतों में जवानी पूरी तरह से छाई हुई थी। सावन की फसल का इस बार कहीं भी दाना डाला गया था, ... बेकार नहीं गया था। जीरो उन दिनों ताषी के खेत पर नहीं जाती थी, जिन दिनों किसी कपास बीनी जाती थी। उसको इस... ... लग चुका था कि ताषी की भाभी ...

ग्रौर चौथी तरफ सन हिलोरें ले रहा था। वहां पर किसी पुरुष को देखना एक प्रकार से असम्भव था। सन फूलों से लदा था, जिसमें खट्टा-मीठा सौरभ उठ रहा था बहाना बनाकर लेटे लाभे की जांघ पर जोर की लात वह 'सी' करता सिकुड़ गया।

"क्यों मारती है ज़ालिम !" लाभा पहले से ही पड़ा था।

"जाट जहां भी मिले, काट ही दो।" बीरो ने पक पकड़कर खींचना चाहा।

"बैठ जा, आई बड़ी काटने वाली !" लाभे ने पकड़कर हिलाया।

बीरो ने बांह छुड़ाने का यत्न किया, परन्तु लाभे ने उस दबा ली। उसकी सिन्दूरी चूड़ी टूट गई जो तीज की एक निशानी थी। उसने क्रोध से सांस भरी, पर बना [illegible] नहीं आखिर एक औरत थी और लाभा मर्द था। जब उसने अप जोर से खींचा तो बीरो उसपर आ पड़ी, लेकिन उस शेरनी ने गिरते समय अपने दोनों गोड़े जोड़ लिए और लाभे के मारकर उसकी एक बार धड़कन बन्द कर दी।

"अरी छिनाल, मार डाला !" लाभे की हाय निकल गई इतनी ज़ालिम क्यों है ?"

"तू बहुत सीधा है ?" बीरो ने पीड़ायुक्त शब्दों में लेकिन वह उसको बिलकुल न समझ पाया। बीरो उसके पा शहतूत के तने का सहारा लेकर बैठ गई। वह खीझती हुई रही थी कि मर्द झट ही औरत के दिल की बात क्यों नहीं जाते !

"जैसा हूं, हाज़िर हूं दारोग़ाजी !" लाभे ने बनते हुए मारी।

बीरो की हंसी निकल गई; और डोल की घास के एक ति चूड़ी के स्थान पर कलाई पर लपेटने लगी।

"तेरी क्या सलाह है ?" बीरो एकदम संजीदा हो गई।

"क्यों, सब कुशल तो है ?" लाभा हैरान हो गया।

"बैरी जो चढ़े आते हैं !"

"कौन बैरी ?" लाभा कुछ न समझा था।

"यह तू जानती है कि मैं जाटों का लड़का हूं, और
"मैं किसीकी बेटी नहीं ?" हीरो बात काटकर उ
गई ।

"मैं कब कहता हूं कि तू किसीकी बेटी नहीं ? मेरा
"मैं यह सब नहीं जानती । तूने मुझे ले चलना है
हीरो उसकी बात काटकर अड़ गई । अब वह तत्काल फैस
थी । "बहुत बातों की अब आवश्यकता नहीं ।"

"हीरो, मैं ऊंची जाति का जाट माना जाता हूं । तु
जाकर मेरा बहुत निरादर होगा ।" लाभा एक प्रकार से
रहा था, "जिसने छड़ी पकड़कर भी नहीं देखी, वह भी
मारेगा कि लाभे ने जाट होकर छोटी जाति की लड़की भगा
कटवा दी ।"

हीरो ने निःश्वास छोड़ते हुए बड़ी बेबसी से सिर हिला
इस प्यार से दुलराए सिर को लाभे के सिर से टकराकर चूर
लेना चाहती थी । उसका रोम-रोम स्वयं को फटकार रहा
तूने प्यार करने के लिए कैसे कायर को चुना । लाभे की
से उसका हृदय छलनी हो गया था । वह दर्द की असह्य
कारण बोल न सकी, केवल उसके होंठ कांपकर रह गए ।
उसकी यह दयनीय अवस्था देखी न जा सकी । वह हमदर्दी
पड़ा, "हीरो, मुझे कोई काम बता, अपनी जान न्योछाव
दूंगा ।"

"बस-बस !" हीरो ने एक ठण्डी सांस लेते हुए अपने होंठ
सी लिया । अगर वह कुछ कह नहीं सकती थी तो सुनना भी
खाने जैसी बात थी ।

"नहीं, तू जरूर बता ।" ऐसा लगता था, जैसे वह फरहाद
तरह पहाड़ खोदने के लिए पूरी तरह तैयार है ।

"मैंने तुझे गांव का सूरमा समझकर प्यार किया था, पर तु
तो औरतें भी ताकतवर हैं ।" चाहे हीरो ताने मारने पर
आई थी, परन्तु वास्तव में वह लाभे से सौ दर्जे दिलेर और बहा
थी ।

"यह कहां की बहादुरी है, गांव की लड़की भगा ले जाना
उठा था कि हीरो उसके दिल की बात और दलीलों
को क्यों नहीं समझती । वह समझता था कि जो ना

हो गया। उसके भीतर का सारा बल नष्ट हो चुका था
बीरो को रोक नहीं सकता था और न ही आगे बढ़कर
पकड़ सकता था। उसके अन्दर का मया रक्त शरीर
मिट्टी-सी बना रहा था। प्यार के मैदान में
की लड़की ने पछाड़ दिया था। उसके दिल की धड़कन
दौड़ रहे इन्जिन की तरह ऊपर-नीचे हो रही थी। वह
समय तक शहतूत के नीचे मिट्टी पकड़कर बैठा रहा।

बीरो घूमकर कुएं पर चली गई। उसने जगत पर
नीचे देखा और धन्नो की कुएं में छलांग मारने वाली बात
दुःख के बाहुल्य के कारण उसकी सिसकियां निकल गई। प्या
कोई इतना बुरा क्यों हो जाता है, यह सोच उसको
कर लिपट गई। ये मर्द क्या बेवफाई और छल करने के
प्यार करते हैं? वह सोच रही थी कि बैलियों-सा भी
होता है? ऐ दुखी मन, उसने तेरे साथ ऐसा ही करना था
फिर रो पड़ी।

उसने घर जाकर देखा कि धन्नो पीढ़े पर बैठी अपने-
वाला पंखा काढ़ रही थी। उसने सहम में खड़ी बीरो को नहीं
था। बीरो जान गई थी कि इस समय धन्नो अपनी रंगीन
में डूबी हुई है। परन्तु एक लड़की के दिल की बात और भाव
लड़की से कैसे छिप सकते हैं, जबकि वे सहेलियां बहनों की
हों और उसके दिल की धड़कनें भी एक हों! वही प्यार का
गीत धन्नो की आत्मा को आनन्दित कर रहा था। बीरो ने सह-
एक पल सोचा, मैं वापस चली जाऊं? इस खुशी के मौके पर
का दिल दुखाने से क्या लाभ! मगर दूसरे ही क्षण वह धन्नो
गले चिपटकर रोने लगी।

मग्न धन्नो ने पास आई बीरो को पहचाना। वह बीरो को
हालत में देखकर हैरान हुई। हंसती, व्यंग्य करती और कूदती
रो भी सकती है, ऐसा उसने सोचा भी न था। उसने बड़ी कठिना
से बीरो को गले से अलग किया। पीढ़ा छोड़कर खाट पर आ बैठी
धन्नो को उसने गले लगा रखा था और स्वयं वह कटे वृक्ष की तरह
.ी बांहों में झूम रही थी। वह बार-बार कन्धे पर सिर रखकर

"... कोई बात भी हो!" धन्नो ने पूछा, "तुम्हें किसने मार

पर उतर आई थी।

"मैं कुछ नहीं जानती।" धन्नो ने आँसें पोंछते हुए क
तुम्हें तब तक नहीं जाने दूँगी जब तक तू इस बुरे ख्याल
छोड़ती।"

"धन्नो, कल का क्या भरोसा।"

"फिर तू मेरे पास आई क्यों जो मेरी बात माननी नहीं

वीरो सोचने लग गई। अब आत्महत्या का प्रश्न कमज़ोर
शुरू हो गया, क्योंकि बुनियादी तौर पर ही यह अप्राकृति
है। इसलिए साधारणतया यह बहुत समय तक कायम न
सकता।

"अच्छा, जैसे तू कहे।" वीरो महसूस कर रही थी कि
मरने का ठीक समय नहीं आया। शायद ब्याह आगे पड़ जाए।
उसके हाथ को धन्नो ने इतने प्यार से पकड़ा था, जिसका वी
पहले कभी एहसास नहीं हुआ था। वह भाभी के प्यार मैं
मस्त और बावली थी कि किसी और पर उसने विश्वास क
यत्न ही नहीं किया था।

"नहीं, तू मेरी सौगन्ध खा।" धन्नो को अभी यकी
आया था।

"तेरी सौगन्ध।"

"भाई की सौगन्ध खा।" धन्नो ने फिर कहा।

"भाई की सौगन्ध।" वीरो ने सच्चे दिल से सौगन्ध
और धन्नो के आज के व्यवहार ने उसपर एक नया अधिकार
लिया।

धन्नो ने उसे प्यार से गले लगा लिया।

"सच ही तू मेरी धर्म बहन है।" धन्नो के अन्दर का
धमकने लगा। उससे अपनी खुशी संभाली नहीं जाती थी।

"बहन, तेरे प्यार ने आज मुझे मरने से बचा लिया। मु
कि तू मुझे इतना प्यार करती है। मेरी तो
थी।" वीरो स्वाभाविक ही दिल की बातें

पर उतर आई थी।

"मैं कुछ नहीं जानती।" बन्नो ने आँखें पोंछते हुए क
मुझे तब तक नहीं जाने दूँगी जब तक तू इस बुरे ख्याल
छोड़ेगी।"

"बन्नो, कल का क्या भरोसा!"

"फिर तू ऐसे काम आई क्यों जो मेरी बात माननी नहीं

बीरो सोचने लग गई। उस आत्महत्या का पक्ष कमज़ोर
शुरू हो गया, क्योंकि दुनियावी और पर [illegible] वह मनःस्थिति
है। इसलिए साधारणतया वह बहुत समय तक कायम नह
सकता।

"अच्छा, जैसे तू कहे।" बीरो महसूस कर रही थी कि
मरने का ठीक समय नहीं आया। शायद ब्याह आगे पड़ जाए।
उसके हाथ [illegible] बन्नो ने इतने प्यार से पकड़ा था, जितना बी
पहले कभी एहसास नहीं हुआ था। वह मरने के प्यार में
मस्त और बावली थी कि किसी और पर उसने विश्वास कर
कारण [illegible] नहीं किया था।

"नहीं, तू मेरी सौगन्ध खा।" बन्नो को अभी यकीन
आया था।

"तेरी सौगन्ध।"

"भाई की सौगन्ध खा।" बन्नो ने फिर कहा।

"भाई की सौगन्ध।" बीरो ने उसके दिन
और बन्नो के बाद के व्यवहार ने उसपर
लिया।

बन्नो ने उसे प्यार से गले लगा

"सच ही तू मेरी धर्म
तड़पने लगा। उससे अपनी

मति ही

"डेढ़ सौ रुपये से काम हो जाएगा।" फौजे ने आवश्य
अधिक रुपये मांग लिए। वह अपने पीने-पिलाने के
प्रबन्ध कर लिया करता था।

"दो सौ पहले के और डेढ़ सौ यह—साढ़े तीन सौ। और
डालकर साल-भर तक चार सौ रुपये हो जाते हैं।" निक्के ने
लगाया। "ये वापस कब करोगे?" देने वाला रकम लौट
विषय में पहले सोचता है।

फौजे का पहले के टंटों से पीछा छूटा नहीं था कि भविष्य
फन्दा तैयार किए खड़ा था।

"हम जल्दी से जल्दी वापस करने का यत्न करेंगे।"

"मैं भी तो जानूं, कैसे वापस करोगे?"

"तुम्हें इस बात से क्या मतलब? चाहे काले चोर से
तुम्हारे पैसे लौटा देंगे।" कारा मस्त में बोल ही पड़ा।

"रुपये तुम वापस नहीं कर सकते, जब तक किस्तें देनी
निक्के ने स्वयं को अक्लमन्द दर्शाते हुए उनको समझाने का
किया।

"तूने चार रुपये लेने हैं कि हमारी जान लेनी है?" कारा
बोल पड़ा, "निःशंक होकर नावां हमारे दोनों के नाम लिख लो।
तुम्हें यकीन न हो तो।"

"नावां लिखाने से तुम भागे नहीं, पहले मेरी बात सुन
यह तुम्हारे ही लाभ की है। मेरा क्या, तुम्हें नहीं किसी और
रकम उठा दूंगा, पर फौजे से बिरादरी होने के कारण हमदर्दी
अतः ऐसा कुछ करो कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे;
मेरा मतलब, कर्जा भी उतर जाए और मकान भी रह जाए।" निक्के
ने बात समाप्त करते हुए पूरी हमदर्दी में सिर हिलाया।

फौजे को निक्के की बातें जादू बनकर कील गईं। इस
चारों तरफ से उसको चिन्तारहित कर देने वाली विधि उसकी
समझ से बाहर थी। उसने उत्तर दिया, "भैया, ऐसी बात मेरी समझ
में तो नहीं आती, अगर तू सोच सकता है तो बता।"

निक्का सोचने लगा कि कैसे बात चलाए।

"एक तरकीब मेरी समझ में आती है, तुम ज़रा ध्यान से सोचो,
जल्दी मत करो। साथ ही…।" निक्के ने इतना कहकर बात
बीच में छोड़ दी। वह उनके मन की तब्दीली उनके चेहरे से भांपता

है। बाहर निकलने से हमारी बदनामी होगी। तुम स्वयं सोच लो, वक्त हाथ फिर नहीं आता।" निक्के ने बड़ी सफाई और नरमी के साथ दिल को हिला देने वाली बातें कीं। कारा कभी निक्के की ओर देखता, कभी फीले की ओर। वह नहीं समझ पा रहा कि यह क्या तमाशा हो रहा है। परन्तु कुछ कहने योग्य वह नहीं

"निक्के, लड़की की सगाई हो चुकी है।" फीले ने निक्के को समझाने का यत्न किया। "हमारी पहले भी बदनामी हो चुकी है। अब और मुंह काला नहीं करवाना। दूसरी बात यह कि तेरा लड़का अभी छोटा है।"

"लड़का तेरहवें साल में है और छठी जमात में पढ़ता है। लौंडों-लपारों को जवान होने में क्या देरी लगती है, जबकि घर खाने-पीने और दूध की कमी नहीं!" निक्के ने एक नया दांव चलाया।

परन्तु फीले को उसकी कोई भी चतुर दलील बांध न सकी और दुपट्टा झाड़कर उसने कंधे पर रख लिया।

"तू मेरी बात को बेकार जानकर कुएं में न फेंक देना। दोनों घर बसे रह जाएंगे। पड़ोस के सम्बन्ध होने के कारण तुमको भी बुढ़ापे में सहारा रहेगा।" निक्का उनको गांव के बाहर छोड़ने और बहकाने के लिए कुछ न कुछ कहता ही गया। अन्त में फीले ने उसको नमस्कार किया और उससे विदा ली।

फीले का मन निक्के की बातों से उदास हो गया था। वह घर जाने की बजाय कारे के साथ पमाल को चल पड़ा। उदासी और बिताकुल होने के कारण गांव के रास्ते तक दोनों चुप रहे। अन्त में फीले ने चुप्पी तोड़ी, "कारे, हम रुपये मांगने गए थे तभी उसने लड़की का रिश्ता मांगा। नहीं तो उसका साहस कैसे हो सकता था?"

"मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि निक्का साला शैतान की खोपड़ी है। साहब कहता था कि कर्ज़ा खानदानी साहूकारों से लेना चाहिए।" कारा फीले के बराबर तक आने के लिए एक पग बढ़ा। "वैसे तो हमने भी घाट-घाट का पानी पिया, पर यह तो पूरा धोखिया निकला! आज कोई चलकर बन्दोबस्त कर, नहीं तो रात को नींद नहीं आने की।" फीले ने जम्हाई लेकर नशे की कमी महसूस की।

कारा कहीं से शराब का अद्धा उधार ले आया।

जगने की भीतरी शरारत का किसीको पता न चल सका। पंडि
को अब पूरा विश्वास था कि अब वह फीले से रुपये लेने की बा
चलाएगा।

परन्तु फीले ने उससे कोई बात न पहले चलानी थी और न ही
अब चलाई। उसका दिल ब्राह्मण की तरफ से बुरी तरह खट्टा हो
चुका था। इस कारण वह उससे भी कोई आशा नहीं कर सकता
था। कारे ने फीले पर फिर जोर डाला कि वह अपनी कोठरी
गिरवी रख देगा, परन्तु फीला इस बात से भी राजी न हो स
उसको यह बात मार देने वाली लगती थी। फीले के मन का
इस सीमा तक बढ़ गया कि वह मकान छोड़ने के लिए सोचता, प
मकान उसको अब नहीं छोड़ रहा था। उसको अब माने की ब
खरी बातें याद आ रही थीं। फिर उसने माने द्वारा तय कि
पूरा करने के लिए सोचा। वह सोचने लगा कि मकान नहीं र
तो न रहे, परन्तु इज्जत नहीं जानी चाहिए। वह अब मि
सम्बन्धियों को और कष्ट नहीं देना चाहता था।

जगने की तरह निक्के की भी चोरी-चोरी साजिश चल र
थी। फीला शिकार था और शिकारी उसपर अलग-अलग जा
फेंक रहे थे। निक्के का आदमी बद्दोवाल आता था और पूरी जा
खबर रखता था। जब निक्के ने बारात वाली बात सुनी तो वह स
फीले के गांव आया। उसने फीले को गांव के बाहर पीपल के
नीचे बुलवा भेजा।

फीला चलने को तैयार हो गया और साथ ही उसने कारे को
से लिया। उसे कारे का बहुत भरोसा रहता था। निक्के ने उनके
आने के पहले सोचा था कि दबाव डालने वाली बातों की अपे
नर्मी और सहानुभूति अधिक काम आ सकती है। उसने बहुत
अनुनय-विनय के साथ बात चलाई।

"देख बड़े भाई! मैं प्रार्थना करता हूं, तू जिद न कर। बे
बारात का मुझे भी दुःख है। तू अपना अपमान मत करवा। मैं
बेटी को अपनी बेटी समझूंगा। उसको ससुराल में किसी प्रकार
दुःख न होगा। घर का सब कुछ उसके हाथ में रहेगा। यदि हमारा
घर संभल जाए तो तुम्हारा लड़की का भार समाप्त हो जाएगा
और तुम कर्ज से मुक्त हो जाओगे। हम पड़ोसी गांव के हैं, हर
प्रकार के दुःख-सुख में साथ रहेंगे, हर प्रकार से एक-दूसरे की बात

पास में चीले ने बारे से पूछा, "तेरी क्या सलाह है ?"

"ना, ना, मेरी कोई सलाह नहीं।" उसने झट से कानों पर [illegible] लगाते हुए कहा, "यह आदमी मुंह का मीठा है और दिल का [illegible] निकलेगा। साला, आज कैसी मीठी-मीठी बातें कर रहा था [illegible] उसे फौरन रिश्ता मिल ही जाएगा !" इस समय यदि उसे [illegible] मालूम कि तारी कहीं और रिश्ता करने को तैयार नहीं, तो [illegible] कर उसका साथ देता।

चीले ने सारी बात अपने तक ही और सारा दिन [illegible] से किसी को न बताया। जब रात पड़ गई तो उसने [illegible] के सम्मुख तारी दास रख दी और उसने सारी बातें [illegible] दी जो निक्के ने उसको समझाई थी।

जैसे-जैसे तारी उसको सुनती रही, वैसे-वैसे वह [illegible] गई। उसने हाथ जोड़ते हुए चीले से कहा, "देख, मैं तारी [illegible] यहाँ नहीं बोली, तेरी पूरी पुजारी की है। परमात्मा के लिए [illegible] यह काम मत कर। तारी इस बात की आत्मा कलपा देगी।"

"यह बात तो मेरा भी मन मानता है, पर कोई मुसीबत [illegible] क्या उसे सुझाया जाए ?" चीला बड़ी नर्मी के साथ बोला।

"जीवन का भी इसमें क्या दोष ! इतने अच्छे [illegible] छोड़कर, इस छोटे लड़के के साथ शादी करके, अच्छे के [illegible] दूसर कर जाए। मैं तुम्हें यह खोटी बात कर [illegible] कर दूंगी। [illegible] देख मैं तेरे हाथ जोड़ती हूँ।"

[illegible] की बात [illegible] कोई [illegible] के साथ [illegible] वह गई। [illegible] [illegible] में कई-कोई [illegible] में कानें सुनने लगी।

"तारी, यदि कोई बात बने तो हम यह बात क्यों करें ? [illegible] ही गरीब की भी शान है। फिर लड़के को [illegible] होने में किस [illegible] सकता है।"

"चाहे कुछ भी हो, मैं इस [illegible] के लिए [illegible] नहीं [illegible] [illegible] !" [illegible] के [illegible] कोई [illegible] का [illegible] के [illegible]

"तुम्हें देख [illegible] तो देख सकती है न ! [illegible] में तो कोई और [illegible] [illegible]। तू भी [illegible] के साथ [illegible] देखना !" [illegible] [illegible] हो गई थी।

[illegible] इस [illegible] का [illegible] [illegible] देती। वह [illegible] [illegible] फिर [illegible] के [illegible], "तारी, मेरा [illegible] हुआ है। [illegible]

ढोल-धमाकों में अपशकुन न हो जाए और बनी बना
बिगड़ न जाए। वास्तव में दोनों चोर थे, और चोरी का
दोनों लोगों से छिपाना चाहते थे।

१७

पन्नो अब इतनी छोटी उम्र की नहीं थी जो घर में
दौली को न समझती। उसकी मां भी चुपचाप-सी हो गई
हृदय जीवन-भर आघात सहते-सहते कठोर हो चुका था।
सोचकर चुप हो गई थी कि मर्द हमेशा औरत को बला
इच्छा मनवाता है। उसको अनपढ़ होने के बावजूद जीवन
ही अनुभव सिखा दिए थे। उसका जीवन आरम्भ से लेकर
एक दर्द की लम्बी कहानी थी। स्वाभाविक था कि उसके
पर भूतकाल की छाया ही होती। फीले के वारण्ट और जेल
बात से उसने सोचा कि शायद उसके बाप को भी कुछ
कठिनाइयों ने घेर लिया होगा, नहीं तो भला कोई अपनी
इस तरह बेचता है! उसने सोचा कि यदि उसका बाप
सकता है तो पन्नो का बाप अपनी बेटी को क्यों नहीं बेच
क्रोधी और शक्तिशाली पुरुष के सम्मुख प्रार्थना ही की जा
जो वह स्वीकार नहीं करता। वह सच्ची और कमाऊ होते
फीले के सामने नहीं बोल सकती थी।

फिर तापी के मन में एक कमज़ोर विचार आया। उसने
की शरण लेनी चाही। उसने सोचा कि वह स्वयं लड़की को
धक्का दे डाले और वह भी साथ में कूद जाए; परन्तु झट
प्रश्न उसके सम्मुख आन खड़ा हुआ। वह सोच रही थी कि
विवाह के समय ही क्यों न मर गई? अब लड़की के समय
मरना और मारना चाह रही है? मरने के ख्याल के साथ
भावना शिथिल नहीं पड़ जाती। वास्तव में उसें बेटी का मोह
पड़ा था। मोह जैसा सच्चा मित्र मनुष्य का कोई नहीं, उसे
के कष्ट में भी जिन्दगी का चुम्बन प्रदान करता है।

तापी सारी उम्र परास्त होती रही थी। उसकी मेहनत
रही थी। उसने तमाम उम्र काम से जी नहीं चुराया था।
भर स्नेह, प्रशंसा और मीठे बोलों के लिए तरसती रही थी।

आदिकाल से ही रुदन लिखा है, जिनको उनके साथी नहीं अथवा जिनके जीवनसाथी उनसे बेवफाई कर गए। यो प्र कोमल भाव, और मृत्युपर्यन्त निभाने की बात लड़कियों में है, वह पुरुषों में बिलकुल नहीं होती।

"अरी, तू इतने ज़ोर से क्यों रो रही है ?" धन्नो को छि हुए उसने साहस बंधाया।

"और क्या करूं ?" धन्नो ने दोनों हाथों से मुंह ढक लिया

"रोए वह, जिसका प्रियतम बेवफा हो।" बीरो ने अपना दि भी साथ कह डाला।

"क्या पता उसका भी !" धन्नो ऐसा अनुभव कर रही थी, ज़मीने उसका साथ छोड़ दिया हो और सारे उसके शत्रु बन हों।

"नहीं धन्नो, तू भाग्य वाली है। तेरा मोहन नहीं छोड़ेगा, तू विश्वास रख।"

'केवल विश्वास का मैं क्या करूं ? दुश्मन ने तो जाल में दिया है।" उसकी आंखों में मिन्नत उमड़ रही थी।

बीरो सोचने लगी। फिर उसने दिल मज़बूत करते हुए "तू मोहन को यहां बुला।"

"मैं कैसे बुला सकती हूं ? मैं डूबी जमी हूं, अब जान हो गई।" धन्नो ने सचेत होते हुए कहा। फिर उसने अनजान [illegible] बीरो से पूछा, "परन्तु वह यहां आकर क्या करेगा ?"

"अरी, तू उसकी मंगेतर है। वह यहां आकर पंचायत करेगा कि फेरे उसके साथ होने चाहिए।"

"ये सब बातें चाचे के साथ थीं। वह मर गया और वे मुश्किलें बड़ी [illegible] गईं।" धन्नो ने एक लम्बी सांस ली, "जो मुसीबत अब है, वह अवश्य कुछ कर गुज़रेगी। उस बेचारे की यहां क्या पंचायत ने सुननी है ? जिसका ज़ोर चढ़ा, खींचकर ले जाएगा।"

धन्नो की इस बात से बीरो को गुस्सा आ गया।

"तू ऐसी निठल्ली है कि कुछ भी करने की कोशिश नहीं करती !"

धन्नो ने 'नहीं' में सिर हिला दिया।

"बीरो, अब तो भाग्य में रोना ही लिखा है, अब कुछ नहीं हो सकता। लड़की तो दीवी-वारी लाश है। जिसको एक बार उठा

हूं। किसी पत्र को बुलाने
के साथ तू चली जाइयो।" इतना कहकर उसने खाट का दूसर
सम्हाल लिया।

"बस, मुकने को कितनी देर है! तुम्हें हंसी सूझ रही है
मेरा सत्यानाश हो रहा है।"

बीरो की मां पड़ोस में कहीं गई हुई थी और बच्चों को
ने कहीं बाहर भेज दिया था। इस तरह धन्तो का दुःख सुनने की
फुरसत मिल गई थी। उसने क्रोधमिश्रित भाव से साथ के लिए
"उस सूमर को बुलाऊं, जिसने रत्ती-भर मेरी चिन्ता नहीं की
यह बात नहीं कि वह उसकी बात न मानती। ऐसा तो उसने
सान जताने के लिए कहा था।

"तेरा उसको बुलाने से कुछ नुकसान नहीं, वह वहां पहले
जाता रहता है। वहां के लड़कों को भी जानता है। तू मेरा यह का
कर दे। मैं तुम्हें जीवन-भर आशीष देती रहूंगी।"

धन्तो को इस बात का पूरा यकीन था कि लाभा बीरो की बा
को मना नहीं करेगा, इसलिए उसने सोचा कि एक बार प्रयत्न करके
देख लिया जाए, अन्यथा देखा जाएगा, जो होगा।

"ले सुन, कल को मक्खी मत बन जाना।" बीरो ने मस्तमन्दी
की भांति उससे कहा, "तेरी खातिर मैं उस निर्दयी को बुला लेती हूं
और वह चला भी जाएगा। अगर वह न भी गया तो मैं मां को भेज
दूंगी। अगर वह भी न गई तो चाहे कुछ हो जाए, मैं स्वयं जाऊंगी।
यदि कल को तूने पीठ दिखानी है तो अभी से कह दे।" बीरो को
वीरता दिखाने का अवसर बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुआ था। साथ में
वह धन्तो को भी दृढ़ करना चाहती थी।

"बीरो, तू चिन्ता न कर। यदि वह न आया, तो प्यारो की तरह
मेरा भी सिर रेल की पटरी पर देखना। बस, और कुछ मत कहो।"
बीरो को मरने वाली बात से रोकना याद नहीं रहा था।

वह धन्तो की इस बात से और भी भड़क उठी।

"अब तूने अपनी बारी मरना तय कर लिया। मेरी बारी तू
मुझसे भइया की सौगन्ध उठवाती थी। अरी, अपने दिल को लगने
वाली आग होती है, अन्य के लिए वह आग वसन्त। मैंने किसी
के घर आदमी नहीं भेजना। पहले तू मरकर दिखा।"

भगवान मेरे, पहले तू उसे बुलवा तो सही! यदि तू सच्चे

के लिए अचम्भा अवश्य था। कारा मन मारकर वही काम
रहा जो उसे फौला कहता था; परन्तु इस नीरवता में का
हमदर्दी तापी के साथ थी। वह भी गिरती-पड़ती काम को
रही थी। यह सब कुछ देखने वालों को एक गम की तस्वीर
था। घर में थोड़ा-बहुत जो सचेत था, तो वह था अकेला
क्योंकि उसे रकम लेने की जल्दी थी। उसने तय कर लिया
सुबह लड़की भेजने के बाद पहला काम सरकारी कर्जा
वाला करेगा।

इसमें सन्देह नहीं कि बन्तो सामने होकर बोल नहीं
थी। वह अपने बापू का सामना करती यदि उसने मोदन' को
बुलाया होता। वह तो क्रोध से भरी हुई दो दिनों से इन काली
बुतों को देख रही थी, जिनके खुले मुंह पर राख डालने का
फैसला कर चुकी थी। लेकिन एक चिन्ता उसे भीतर ही भीतर
रही थी, क्योंकि लामा अपने वायदे के अनुसार मोदन को कल
गया, अब तक न लाया था और न ही स्वयं आकर खबर दी
बीरो का क्रोध पागल बनकर सीमा लांघ चुका था। कल शाम
लाभे आदि को देखने गई थी। वे रात की गाड़ी से भी नहीं
थे। फिर बीरो ने सुबह और दोपहर की गाड़ियों की बाट जोही
किन्तु कोई न आया। उसने बस वाले रास्ते को भी देखा, परन्तु
भी कोई न आया। अन्त में उसने शाम की गाड़ी की ओर प्रतीक्षा
करने का निश्चय कर लिया। वह हर प्रकार की लाज व शर्म त्याग
स्टेशन पर पहुंची। गाड़ी आई और यात्री उतरकर अपनी राह
दिए। बीरो नीले-काले कुलियों को आंखें फाड़कर देख रही थी।
उसने लाभे को इतनी गालियां दीं कि उसके आगे-पीछे के किसी भी
सम्बन्धी को न छोड़ा। उसने यह नहीं सोचा था कि कुछ आफत
पड़ सकती है, कोई विवशता भी हो सकती है। वह इतने तैश
की थी कि जो काम हो, उसे तुरन्त निपटा दो।

हारी, निराशा से भरी और अर्द्ध-मूर्च्छित बीरो ने बन्तो के पास
आकर आंखें भर लीं। वह उसे कैसे मुंह दिखाए और कैसे कहे कि
आने वाले आए नहीं? वह यह भी जानती थी कि बन्तो के लिए अब
मौत ही है, जिसको वह किसी प्रकार टाल नहीं सकती।
ने बीरो के उड़े चेहरे से ही अनहोनी का अनुमान लगा
उसका दिमाग बिलकुल खाली हो गया था। वह कुछ न

सुनी। उसने लेटे ही लेटे खिड़की के टाट को, जो पर्दे के स्थान पर था, हटाकर देखा। निक्का सहन में नोट गिनकर उसके बापू को पकड़ा रहा था। यह देखकर धन्तो एक बार ही पछाड़ खाकर गिर पड़ी। उसने दोनों हाथों से मुंह दबा लिया। उसका मन हुआ कि वह अपना मुंह नोच ले, मिट्टी का तेल छिड़ककर स्वयं को आग लगा ले। आह! अब कोई नहीं आएगा। उसको अब मृत्यु ही दृष्टिगत होती थी।

"ये नोट सम्हाल लेना।" उसने खिड़की के आगे बापू की आवाज सुनी।

"मैं तो इनको हाथ भी नहीं लगाती।" उसकी मां की आवाज में गुस्सा था। उसने पहली बार मां को इस तरह जोश में बोलते सुना था।

"अभी तो तेरे बाप वाले भी पूरे नहीं हुए।" धन्तो का बापू भी गुस्से में आ गया था।

"नहीं पूरे हुए तो मुझे भी बेच दे।"

फिर उसका बापू ताथी को गालियां देता नारे के साथ बाहर चला गया। उसकी मां ने लालटेन अन्दर की खूंटी पर फिर टांग दी। धन्तो एक कोने में पड़ी रही। उसने आंखें बन्द कर लीं। थोड़े समय बाद ही बाहर सहन में उसके बापू रोटी खा रहे थे। कुछ समय बाद उसके मन में विचार आया और उसने बोरी को थोड़ा सरका कर देखा। वह अब अपने भावी पति को देख रही थी। वह अपनी किस्मती पर फिर पछाड़ खाकर गिर पड़ी। अबोध बालक की तरह उसकी आंखों में फिर आंसू आ पड़े, जो कुछ समय पश्चात् पानी-पानी हो गए। मृत्यु के अतिरिक्त अब उसके पास अन्य कोई चारा नहीं था।

यदि धन्तो को सहारे के लिए अपने प्रियतम का एक भी शब्द मिला होता तो वह इस अनहोनी का डटकर मुकाबला करती; परन्तु अब वह बिलकुल निराश हो चुकी थी। अंदर केवल दुःख ही दुःख रह गया था और मरण क्षण के अतिरिक्त अब कुछ दिखाई नहीं देता था। उसने उठकर बाहर देखा—वहां बिलकुल सुनापन था। उसको मां के बाहर जाने पर आश्चर्य हुआ। उसने आसपास देखा, कहीं नहीं थी। गांव का नाई भी रोटी खिलाकर जा चुका था। भी 'नहीं!' वह बाहर के दरवाजे तक आ गई। धीरे

"माँ, तू कैसे आ गई यहाँ ?"

"हाँ बेटी, पीछे अकेली छोड़ती भी क्या ?" उसने जोर से धन्नो को दबा लिया। "जो आज तक तेरे सहारे जीती रही है, वह तेरे बाद कैसे जीवित रहेगी ?"

तापी धन्नो की परेशानी और व्याकुलता [illegible] देख रही थी। उसने धन्नो का [illegible] नजदीक से दृष्टि रखी हुई थी। रसोई वाली अंधेरी कोठरी में धन्नो को तापी दिखाई नहीं पड़ी थी, परन्तु उसने दस्तूर कदम रखा, वह भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी थी। वह भी जानना चाहती थी कि धन्नो क्या करती है; लेकिन रेल की पटरी देखते ही उसके होश-हवास उड़ गए, क्योंकि सामने से गाड़ी भी आ रही थी।

"माँ, तेरे हाथ जोड़ती हूँ, तू चली जा, मुझे नरक [illegible] छुटकारा पा लेने दे।"

"मैं तेरे साथ इससे भी खराब नरक भोग सकती हूँ, पर—" उसने बात बीच में ही छोड़ दी।

गाड़ी की रोशनी रेल की पटरी पर पूरी पड़ने लगी। उसका आकार प्रतिक्षण बढ़ता ही जा रहा था। तापी धन्नो को छोड़कर स्वयं पटरी पर जाने लगी। धन्नो ने उसे पकड़ते हुए कहा, "माँ! यह क्या ?"

"कोई माँ बेटी को पहले मरते नहीं देख सकती।"

रेल भी गड़गड़ाहट करती आ गई। धन्नो को कुछ होश नहीं था। उसके पाँव धरती के साथ मानो जकड़ चुके थे। जब तापी लाइनों के बीच खड़ी [illegible] गई तब होशियार ड्राइवर ने [illegible] से किसी को खड़ा देखकर सीटी बजा दी। गाड़ी की चीख के साथ धन्नो के शरीर में बिजली-सी दौड़ गई। फिर गाड़ी चीखी, परन्तु तापी उससे अनजान बन चुकी थी।

"माँ! मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगी।" धन्नो चिल्लाई और उसने माँ को परे खींच लिया। तापी धन्नो के पकड़ते ही गिर पड़ी। वह पत्थर के समान बन गई थी और धन्नो उसके सम्मुख काँपती जा रही थी।

गाड़ी धीमी होकर रुकती-रुकती आगे गुजर गई।

रहे हो।"

"हम घर तो नहीं उठा लाए।" बचने ने व्यंग्य करते हुए

"आओ, शहर चलते हैं। कपास का ठेला मण्डी में गय जल्दी वापस आ जाएंगे।" नछत्तर ने लाभे को शहर ले जा नीयत से कहा।

"यहां पहले मेरी बात सुन लो। मुझे तो पहले ही … है।" लाभे ने अपनी सफाई पेश की। साथ ही वह धड़कर … पर बैठ गया। फिर कहने लगा, "भइयो, बात यह है कि गांव की महरी तुम्हारे यहां आने को उतावली है…।"

"कौन-सी?" बचने ने मुंह छूटते ही बात पकड़ ली।

"वही तुम्हारे मोदन वाली।"

"उसकी तो मोदन से सगाई हो चुकी थी। क्या तुम उसे ही गांव रख लेना चाहते हो?" नछत्तर व्यंग्य करके हंस पड़ा

"वैसे तुम हमारी मर्जी के बिना कैसे ले आओगे?" आगे मनक्ख ने ललकारा।

"हम अपनी चीज को सात किलों से निकाल लाएंगे।"

"आगे भी मर्द हैं।" लाभे ने सीना ठोंककर उत्तर दिया।

"याद रखियो, सरहन्द की ईंट-ईंट कर देंगे।" नछत्तर एकदम गर्म हो गया था।

"अरे भाई, धीवरी बड़ी मुश्किल में है।" लाभे ने बात च चलाई, "उसका बाप उसके पैसे बटना चाहता है और वह कह है कि वह घड़ी कब आएगी, जब उसको मोदन अपने घर ले लेगा।"

"हम क्या मर गए हैं? पैसे हमसे नहीं बट सकता?" बचन भी बैलियों की तरह बात करने लग पड़ा।

"यह बात नहीं होगी बचने, यहां शाम-सवेरे में काम होने वाल है। मैं तो मोदन को लेकर वापस चला आऊंगा।"

"इतनी जल्दी!" नछत्तर हैरानी में सोचने लगा। "अकेले को ले जाना ठीक रहेगा? जो लोगों ने उसे दबा दिया तो? मोदन लड़का अपना ही है। उसने मेरा कुआं लगाया था, तभी से बहुत गहरी हो गई है। तेरी महरी से बोलचाल कैसे हो?"

"कैसे हो गई, तू यह बात छोड़।" लामा बीरो की छोटी बात

सकती है, मगर उसे कोई और ले जाता है तो?" माना भी नहीं था।

मछत्तर माझे की बात पर हंस पड़ा। उसने बचने का कथ्यास कर महसूस किया। मसमसी से उसकी मारी के बल पर कुछ भी कर लो, परन्तु बखान् वह किसी का कुछ नहीं करने वाला था। वह मारकर गोद को चल पड़ा और माझा तथा मछत्तर मण्डी को चल पड़े।

जब वे मण्डी पहुंचे, तीन बज चुके थे। मछत्तर को अपने दलाल से पता चला कि कपास की बोली हो चुकी है। उसने हिस्से को गाड़ी के साथ घर वापस रवाना कर दिया और आप आढ़तियों को जल्दी मोचने के लिए आटों जैसे झटके [redacted] लगे; परन्तु व्यापारी के आए बिना कपास तोली नहीं जा सकती थी। इन दोनों ने शहर में घूमते और चाय पीते सारा दिन गंवा दिया। जब तोल खतम हुआ, गहरा अंधेरा पड़ चुका था।

अन्धेरे में मछत्तर ने गांव जाना ठीक न समझा, क्योंकि वे लोग, जिनका आदमी उसने मारा था, वे भी उसको काटने के लिए फिरते थे। इसीलिए मछत्तर को होशियार रहना पड़ता था। आज भी उसे विश्वास था कि मेरे शहर आने का दुश्मनों को पता है। इसलिए हो सकता है कि मार्ग में ही बैठे हों। इसलिए उसने गांव लौटना उचित न समझा। माझा लौटने की जल्दी मचा रहा था, परन्तु वह ठेके से एक बोतल ले आया और इस प्रकार उसने माझे को बहका दिया।

रात की शराब के थके सुबह आठ बजे से पहले न उठ सके। आवश्यकतानुसार उन्होंने आढ़ती से पैसे लिए, शेष उन्हीं के पास जमा करा दिए। रात की गालियों के लिए उन्होंने उनसे माफी मांगी।

वे वहां से हंसते-हंसते उठकर चाय वाली दुकान पर गए। फिर दस बजे तक बगरायों से ही न निकल सके। राह में मछत्तर बहुत आहट लेता हुआ आ रहा था। वैसे आसपास कोई व्यक्ति नजर नहीं आता था, इसलिए खतरे की बात कम थी; परन्तु फिर भी थोड़ा छिपकर माझा दो खेत आगे जाकर तसल्ली कर लिया करता था। इस प्रकार वे लगभग बारह बजे अपने गांव में पहुंचे। बचना अभी तक नहीं आया था, परन्तु मोदन दो-तीन चक्कर काट

"मैं तो कल ही तुम्हारे पीछे जगरावों आ रहा था, लें
अपना अम्मां से कह गया था कि कहीं जाए नहीं। मुझे मि
होता तो मैंने कभी साइकल उठा लेना था।" साभे ने मोदन
बातों से जान लिया कि वास्तव में वीरो इसके बारे में ठीक
कहती थी।

"मेरी बात सुनो भाई नछत्तर!" साभे को वीरो की बा
याद आ रही थी, "लौटना तो मुझे वायदे के अनुसार कल को
चाहिए था, लेकिन हम दोनों शाम की गाड़ी से जाते हैं, तुम
की गाड़ी से आ जाना। उधर कहीं काम खराब ही न हो जाए।

२०

मोदन, साभे और नछत्तर को आधा घण्टा लेट हो जाने
कारण गाड़ी मिल न सकी। बचने को उन्होंने घोड़ी पर आग
भेज दिया। जब वे बद्दोवाल स्टेशन पर पहुंचकर साभे के डेरे
पहुंचे तो ग्यारह बज चुके थे। साभे ने देखा कि वीरो का बापू
रहट चला रहा था। वह नछत्तर आदि के लिए घर से चाय का प्र
करने चला गया। उसने सोचा था कि अभी रोटी पकने में देर
सकती है, इसलिए पहले चाय का प्रबन्ध ही ठीक समझा। वह वीरो
वीरो को भी खबर करना चाहता था कि वह तेरा काम कर आ
और अब धन्तो को बाहर लाने की जिम्मेवारी तू संभाल।
नछत्तर आदि का गांव में आना जाहिर नहीं करना चाहता था,
न ही उसने धन्तो के सम्बन्ध में वीरो के अतिरिक्त किसी और
बातचीत करनी थी।

मोदन धन्तो की तरफ से कुशल-क्षेम के लिए व्याकुल
उसका जी चाहा कि कहीं तारा मिस्तरी ही उसको भूला-भ
मिल जाए।

नछत्तर ने खाट सम्हाल ली। मोदन चरी पर बहुर बैठा
रहा। उसका दिल धड़क रहा था, मैं धन्तो को कैसे मिलूंगा?
बात करूंगा? वह भावनाओं में डूबा हुआ कभी मुस्करा पड़ता,
भय महसूस करने लगता। वह आज सवेरे बकरे की बलि दी
... चला था। वह इस समय चादर के नीचे कितने
हुआ था! उसकी आंखें बन्द थीं, फिर भी वह धन्तो

पर न आती, परन्तु उसे मोदन का लिहाज था कि सारी उमर रखेगा कि मेरी बात तक नहीं पूछी।

बीरो निर्भय मोदन के पास आ गई और बिना कुशलक्षेम वह लाभे की तरह उसके गले भी पड़ गई।

"अब क्या तुम राख फांकने आए हो?"

"इसमें मेरा क्या दोष है!" मोदन अपने टूटे दिल के हमदर्दी के दो शब्द चाहता था, परन्तु बीरो ने सूपें से मिट्टी का शुरू कर दी।

अन्त में बीरो ने दुःख से पीड़ित होकर कहा, "तूने मेरी को मारने में कोई कसर नहीं उठाई और अब भी उसका अप ही रक्षक है।"

"बीरो! तुझे दिल चीरकर दिखाऊं? अब तो बस...।"

असह्य पीड़ा से मोदन ने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

बीरो मोदन का पीड़ायुक्त चेहरा देखकर पिघल गई। "हाय मैंने क्यों न इस तरह का दुःख बंटाने वाला चुना!" वह मन के में कह गई।

दोनों अपनी-अपनी तरह से दुखी थे। दोनों ही इस अनहोन पर शिकवे करते रहे। अन्त में जाने की नियत से बीरो ने कह "वह आएगी तो मैं तुझे खबर भेज दूंगी।"

२१

ससुराल पहुंचकर पम्मो ने घूंघट उठाकर अपनी अनहोनी को देखने का प्रयत्न किया। सहन में आड़े के कारण छंटी हुई नीम के नीचे एक भैंस, एक बछिया और एक बूढ़ा बैल खड़ा था। बैल से निक्का चार बीघे खेत लेकर जोत लिया करता था। बैल भैंस और बछिया की तरफ वाली खुट्टी में मुंह मारने का प्रयत्न करता रहता, परन्तु बछिया उसको मारकर पीछे हटा देती। घर की अगली दीवार पक्की थी। रसोई के ऊपर से सीढ़ियां जाती थीं। सहन आवश्यकतानुसार चौड़ा था और घर में जरूरत की सभी वस्तुएं मौजूद थीं; परन्तु पम्मो को क्यों हर चीज बेगानी और काटती नजर आती थी!

ब्याह वाली वहां भी कोई ऐसी बात न थी, न कोई रिश्तेदार

आवाज़ में गालियाँ देने लगा। अन्त उसने किसी न कि
से गाय को बांध ही दिया और फिर दरवाज़े के आगे
वापस करने आ गया।

"यह रही बत्ती, पकड़ ले, कितना तंग किया है साली ने
धन्तो दूसरी बार फिर खड़ी हो गई, और सांकल उतार
बत्ती पकड़ने के लिए हाथ बाहर निकाला। जैसे ही उसने
पकड़ी, निक्के के हाथ ने उसकी कलाई पकड़ ली और दू
से एक तरफ़ का दरवाज़ा खोल दिया। धन्तो को हैरानी में प
लगा कि कब उसे लालटेन समेत खींच लिया गया। इस अन
लिए उसकी बुद्धि चकरा गई। निक्का बिना कुछ सोचे
पशुओं वाले घेर में खींच रहा था। धन्तो ने होश संभाल
बत्ती ज़मीन पर रख दी और सहम में पैर गाड़कर खड़ी हो
वह बड़ी जल्दी होशियार हो गई थी। निक्के ने धन्तो का
पहला बोल सुना, "देख, तू बाप बनकर कंजर मत बन!"
अंदर जमा हुआ क्रोध एकदम पिघल उठा।

"चुप कर आ सोहिया, बोल नहीं।" निक्का उसका और
कर भयभीत हो रहा था, लेकिन कांपते हुए उसको खींचने
प्रयत्न भी कर रहा था।

"भलामानुस है तो अपनी इज़्ज़त रख ले।" धन्तो ने
छुड़ाने के लिए झटका दिया; लेकिन निक्के ने छोड़ी नहीं, बल्कि
पग उसको और अपनी तरफ़ खींच लिया। धन्तो का क्रोध के
भय भी जाग पड़ा। उसने कर्कश आवाज़ में फिर ललकारा, "
भी कुछ नहीं बिगड़ा, तू बांह छोड़ दे!"

धन्तो को अकड़ता देखकर निक्के को गुस्सा आ गया।
रुपया लगाकर वह धन्तो पर हर तरह से अपना पूरा अधिका
समझता था, चाहे लोगों की नज़र में उसका कुछ भी हक नहीं था।
उसने एक बांह छोड़कर अधखुले द्वार की बाहर से सांकल लगा दी।
ऐसा लगता था, मानो वह धन्तो को अपने बिस्तर पर खींचकर ले
जाने के लिए तुल गया है।

"बारह सौ तेरी ही ख़ातिर लगाया है।"

"अच्छा, अब बारह सौ रुपये की ख़ातिर ही मुझे तू अपनी
रखैल बनाना चाहता है?"

"रखैल तो मैंने अपनी ही बनाकर रखनी है, अब तक बड़ा

आवाज़ में गालियां देने लगा। अन्त में उसने किसी न कि
से गाय को बांध ही दिया और फिर दरवाज़े के आगे
वापस करने आ गया।

"यह रही बत्ती, पकड़ ले, कितना तंग किया है साली"

धन्तो दूसरी बार फिर खड़ी हो गई, और सांकल उतारक
बत्ती पकड़ने के लिए हाथ बाहर निकाला। जैसे ही उसने
पकड़ी, निक्के के हाथ ने उसकी कलाई पकड़ ली और
से एक तरफ का दरवाज़ा खोल दिया। धन्तो को हैरानी में प
लगा कि कब उसे लालटेन समेत खींच लिया गया। इस अन
लिए उसकी बुद्धि चकरा गई। निक्का बिना कुछ बोले
पशुओं वाले घेर में खींच रहा था। धन्तो ने होश संभा
बत्ती ज़मीन पर रख दी और सहन में पैर गाड़कर खड़ी हो
वह बड़ी जल्दी होशियार हो गई थी। निक्के ने धन्तो का
पहला बोल सुना, "देख, तू बाप बनकर कंजर मत बन!"
अंदर जमा हुआ क्रोध एकदम पिघल उठा।

"चुप कर जा लौंडिया, बोल नहीं।" निक्का उसका शोर
कर भयभीत हो रहा था, लेकिन कांपते हुए उसको खींचने
प्रयत्न भी कर रहा था।

"भलामानुस है तो अपनी इज़्ज़त रख ले।" धन्तो ने
छुड़ाने के लिए धक्का दिया; लेकिन निक्के ने छोड़ी नहीं, बल्कि
पग उसको और अपनी तरफ खींच लिया। धन्तो का क्रोध के
भय भी जाग पड़ा। उसने कर्कश आवाज़ में फिर ललकारा, "
भी कुछ नहीं बिगड़ा, तू बांह छोड़ दे!"

धन्तो को अड़ता देखकर निक्के को गुस्सा आ गया। इ
रुपया लगाकर वह धन्तो पर हर तरह से अपना पूरा अधिका
समझता था, चाहे लोगों की नज़र में उसका कुछ भी हक नहीं था
उसने एक बांह छोड़कर अचानक द्वार की बाहर से सांकल लगा दी
ऐसा लगता था, मानो वह धन्तो को अपने बिस्तर पर खींचकर
आने के लिए तुल गया है।

"बारह सौ तेरी ही खातिर लगाया है।"

"अच्छा, अब बारह सौ रुपये की खातिर ही मुझे तू अपनी
दर्शन बनाना चाहता है?"

"दर्शन तो मैंने अपनी ही बनाकर रखनी है, इस तरह नहीं

खींच गई; परन्तु अंधेरे का मुख विशाल होने के कारण वह उसी में लोप हो गई।

२२

घबराया हुआ निक्का छत से नीचे उतरा। सहन का दरवाजा खोलने में उसको अपने सिरहाने के नीचे मुश्किल से ताली मिली। जब वह गली वाले दरवाजे का ताला खोल रहा था, उसके हाथ कांप रहे थे और ताली ठीक स्थान पर नहीं लग रही थी। किसी बुरे काम के करने के बाद एक बेचैनी हो जाती है, जो अगर संयम से न दबाई जा सके तो वह कोईभी काम पूरा नहीं होने देती। सहन में लालटेन का प्रकाश निक्के का जरा भी साथ नहीं दे रहा था; परन्तु अब तो उसके लिए अंधेरा दूना-चौगुना हो गया था। ताला खोलने में उसको पर्याप्त समय लग गया और जब वह धन्तो के गिरने वाले स्थान पर पहुंचा, तब वह सकपका गया। धन्तो वहां नहीं थी। उसने इधर-उधर गली में भागकर देखा। वह भागकर दूर तक भी हो आया, परन्तु धन्तो तो जैसे अंधेरे में समा गई थी। अन्त में उसने चाल सोचते हुए गली मे ऊंचा शोर मचा दिया, "मैं लुट गया लोगो! मेरे घर की बहू भाग गई!"

पहले उसने अपने नैतिक पतन के कारण शोर नहीं मचाया था। उसको विश्वास था कि गली से धन्तो को किसी न किसी प्रकार मनाकर घर ले आऊंगा। जब उसने बात जड़ से ही उखड़ी देखी, तब वह शोर मचाए बिना न रह सका।

"ओ सरदारिया, अरे भगतू! उठो रे, मैं उजड़ गया!" वह लोगों के दरवाजों पर ठोकरें मार रहा था। उसको धन्तो के बचे जाने व छिप जाने की तनिक आशा न थी, परन्तु अब इस सम्बन्ध में उसे शक कोई नहीं रहा था।

उसकी चीखें सुनकर मकानों में लोग सिरहानों में से जाग पड़े, और निक्के की बहू के निकल भागने पर आश्चर्य प्रकट करने लगे। यह तो सभी जानते थे कि उसने लड़की पैसे देकर ब्याही है, तथा बहुत-से लोग इस बात की भी मीन-मेख निकाल रहे थे कि उसको पैसे देकर लड़के की शादी की इतनी जल्दी क्या पड़ी थी। . . यह देखकर निक्का लोगों की नजरों में 'जोकर' बना हुआ था।

कर रहे हैं। इससे पूर्व [redacted] बदनामी होने के लिए लड़की क
देने के लिए तैयार हो चुका था। उसने बड़े कातर स्वर में
"तुम अन्दर आ जाओ।" उसका कहने का अर्थ था कि तुम
तरफ से अपनी तसल्ली कर लो।

"बाहे को ठण्डी रात में बढ़ और भाकर कहां जाएं
निक्के ने कहा।

ये अन्दर सहन में आ गए। निक्के की नजर प्रत्येक छिपने
स्थान को घूर रही थी; परन्तु उसकी आसामी को धरती नि
गई थी।

तापी को भी पता लग चुका था कि बाहर लोगों ने क्यों
बुलाया है; परन्तु असली बात अभी तक उसे पता नहीं थी।
जब उसने निक्के की आवाज सुनी, वह पागलों की तरह उठ
हुई। उसको पिछले तीन दिनों में शोक और चिन्ताओं ने घ
तरह घुन दिया था। बाहर सहन में आकर उसने प्रश्न कि
"क्या हुआ है ?" वह वास्तव में घबराई हुई थी, मानो कोई
सपना देख रही थी।

"हुआ है सूअर की बच्ची, तेरा सिर। वह मुंह काला क
गई।" फीले ने अपनी दाढ़ी नोच ली।

"हाय, मर गई !" तापी भी सिसक पड़ी, "हाय भगवान, व
कहीं नहीं गई, वह तो किसी कुएं या गड्ढे में कूदकर मर गई। हा
दे दुश्मनो ! तुम लोगों ने मेरी बेटी मार डाली !" वह खड़ी न र
सकी। वहीं बैठ गई।

तापी से रोना रोका न गया। उसका दृढ़ विश्वास था कि सन्तो
किसी कुएं आदि में गिरकर मर गई है। सन्तो के मरने का अभी
तक किसीने भी नहीं सोचा था। यह एक नई विपत्ति थी, जिसने
सबके प्राण खींच लिए। निक्के ने एक क्षण के लिए सोचा कि यदि
वह वास्तव में मर गई तो पुलिस वालों ने उसपर खून का मुकदमा
बना लेना है। रकम गई तो गई, अब उसे स्वयं की चिन्ता सताने
लगी। फीले ने भी उनको यकीन दिलाया कि मेरी बेटी निकलकर
नहीं जा सकती। कोई बाप अपनी औलाद से बुराई की आशा नहीं
करता। तापी की सिसकियां बन्द नहीं हो रही थीं।

"ये दोनों हमें बना तो नहीं रहे ?" उनमें से एक चौधरी ने
के कान में मुंह लगाकर पूछा।

२३

पन्नी जब कल के [illegible] [illegible] [illegible] उसके पाँव का [illegible]
हुए [illegible] इसी कारण उसकी चीख निकल गई थी। वह भय के
[illegible] करती जा रही थी। ऐसी [illegible] की कोई [illegible]
उसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। [illegible] भय ने
[illegible] उसका पथ-प्रदर्शन किया। गेहूं की पीड़ा के [illegible]
उसके दो [illegible] [illegible] जा रही थी। उसके पैर की [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] रही थी। उसने [illegible] फेंक दी। [illegible]
[illegible] होने के कारण उसकी पीड़ा सहन कर सकती थी। [illegible]
[illegible] और दिन की तेज [illegible] के [illegible] उसको [illegible]
[illegible] [illegible] रहा था। वह उसी तरफ जा रही थी जिधर वह [illegible]
के साथ [illegible] [illegible] जाती थी।

तार की [illegible] पर जाकर उसको अपने [illegible] के अतिरिक्त
न सूझा। वह पीछे घूमकर देखती और फिर भाग उठती।
उसको इस बात का विश्वास था कि उसका पीछा अवश्य कि
जाएगा। उसको भागते हुए रत्ती-भर खयाल नहीं था कि उसके
पर चुन्नी भी है या नहीं। कोई अज्ञात शक्ति उसको संकेत कर
थी कि यही समय है, वह अपने को बचा सकती है, वरना [illegible]
उसका जीना मुश्किल हो जाएगा। उसको अपने नंगे पैरों की
चिन्ता नहीं थी, क्योंकि इन्हीं नंगे पैरों से उसने कई खेतों को
कर लिया था। उसके एक पांव में कांटा भी चुभ गया था; परन्तु
उस कांटे को निकालने के लिए भी न रुकी। सांस तो उसकी [illegible]
[illegible] हाथापाई के कारण चढ़ रही थी, जो एक पल के लिए भी [illegible]
न हो सकी थी। अंधेरे में भागते हुए वह कांटेदार तार में उलझ
कर गिर गई। उसके मुंह से 'हाय [illegible] मां!' निकल गया; परन्तु
शीघ्र उसने मुंह बन्द कर लिया। वह डरती कि कहीं उसकी आवाज
शत्रुओं के कानों में न पड़ जाए। तार [illegible] तीखे घुमावदार कांटे
उसके शरीर के कई स्थानों पर चुभ गए। उसने सारी पीड़ा को
मूक बन सहन कर लिया और तार के बीच में से होकर गुजर गई।
आगे किसी किसान ने गेहूं को पानी दे रखा था। जब पन्नो उसमें
गुजरी, खेत का गारा उसके घुटनों तक लिपट गया। जब उसने खेत
किया, उसकी एड़ी में जबरदस्त चीस आन पड़ी। भागती [illegible]

वह फिर पीड़ा सहन करती चुपचाप उठी। ठिठुरन और द
अणु-अणु टूट गई थी; परन्तु उसने पीड़ा की तरफ ध्यान
कदम आगे बढ़ाने शुरू कर दिए। अंधेरे में ही उसने किसी
तट पर लगने का निश्चय कर लिया। उसने ऊपर तारों
देखा; किन्तु वह न जान पाई कि रात कितनी गुजर चुकी है
वह भगवान के आगे हाथ जोड़ रही थी कि आश्रय मिलने
दिन न चढ़े।

थकी-टूटी होने के बावजूद धन्तो कभी की अपने
सीमा में प्रवेश कर चुकी थी, जिसके
और जहां वह पलकर जवान हुई थी।

वह असह्य पीड़ा झेलती वीरो के घर के दरवाज़े पर
आवाज़ लगाने के लिए उसके पास शब्द समाप्त हो चुके थे।
बायें हाथ से एक तख्ते को तीन बार धकेला; परन्तु अन्दर
को कुछ पता न चल सका। फिर उसने ज़ोर-ज़ोर से किवा
पीटना शुरू कर दिया।

"कौन है ?" अन्दर से वीरो की मां बस्सो की आवाज़

"ताई !" दुःखों से टूटी धन्तो केवल इतना ही कह सकी
आंसुओं के वेग के साथ उसने अपना सिर दरवाज़े के
मारा।

पहले अन्दर का साकल बजा, फिर पैरों की आवाज़
आई जो चलती-चलती बाहर के दरवाज़े तक आ गई।

"कौन है ?" बस्सो ने दरवाज़े की दरारों में से देखते हुए

"ताई, मैं धन्तो !" बेचारी सिसकियों में फिर डूब गई।

धन्तो को दरवाज़े पर रोते देख बस्सो के हाथ-पैर फूल
वह कांपने लगी और झट उसने दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़े
सहारे वह अन्दर तो आ गई; परन्तु जब वह आंगन में आई
स्वयं को न संभाल सकी और निढाल होकर ज़मीन पर बुरी त
गिर पड़ी। उसके होंठों ने वीरो के सहन की पवित्र मिट्टी चूम ली
बस्सो ने जब धन्तो को गिरे देखा तो वह घबराहट में सांकल
न लगा सकी। वह चीख-सी उठी, "अरी वीरो !"

"आई अम्मां !" कहकर वीरो भी अन्दर से भागी आई।

जब वीरो बाहर आई तो उसकी मां ने धन्तो को उठा लिय
था। जैसे ही धन्तो ने सामने वीरो को देखा, वह बस्सो को छोड़

न छुपा लिया।

"क्या कहा!" बस्सो आश्चर्यचकित हो गई और नि
गालियां निकालने लगी, "बेड़ा गरक हो उसका! गोली मा
को!" बस्सो के क्रोध की कोई सीमा नहीं थी।

"धन्तो, जरा गर्म हो ले, फिर बताना।" बीरो ने गुस्से
पीते हुए धन्तो की आंखें पोंछीं।

"पहले मेरे साथ हाथापाई की, फिर···मैं वहां से भाग
तो और क्या करती!" धन्तो ने कुछ क्षण बलात् आंसू रो
अपने सिर पर टूटे पहाड़ की संक्षिप्त कथा उनको कह सुनाई

धन्तो से उसकी आप-बीती सुनकर बस्सो ने निक्के के
पुनः गालियों की बौछार लगा दी। बीरो का मन करता था
अभी जाकर लाभे से कहे कि अब तभी जी सकती हूं जो निक्के
गोली मारकर आए, या उसके हाथ-पैरों को चूर-चूर करके आ
फिर उसके मन में आया कि मोहन आदि के आने की बात क
परन्तु बस्सो की उपस्थिति में कैसे कहती! उसने झट बहाना सो
कर कहा, "अम्मां! यह अब भी कांप रही है, थोड़ी चाय ब
दे।"

"नहीं ताई, मत बनाना, कोई आवश्यकता नहीं।" धन्तो
इस कुसमय उसको कष्ट न देने के लिए सोचा।

"नहीं अम्मां, इसे क्या समझ, ठण्ड लग जाएगी। भयंकर बा
में से होकर आ रही है।" बीरो ने उसके मुंह पर हाथ रख
उसको चुप करा दिया।

"अरी, इसकी मां को बता आऊं?" बस्सो ने कुछ सोच
बीरो से पूछा।

"न ताई!" बीरो के बोलने से पूर्व उसने बस्सो की बां
पकड़ ली। "वह कंजर घर में आदमी लेकर बैठा होगा।"

बस्सो अन्दर से उठकर चूल्हे में आग जलाने लगी; त
पड़ोस से मुर्गे ने पहली बांग दी।

धन्तो ने बीरो को जोर से गले लगा लिया। उसने रो-रोकर
आंखों का बुरा हाल कर लिया था। दोनों सहेलियों ने यह कभी
नहीं सोचा था कि उनकी हाल जिन्दगी में सुखों की बजाय दुःखों
वास्ता पड़ जाएगा। धन्तो की आंखें पोंछते-पोंछते उसकी चुन्नी
आधी भीग गई थी। बीरो ने उसको रोने से रोकते हुए कहा—

वाले भय से कांप रही थी। बीती हुई बातों के घावों में
खून नहीं रिसता जितना भविष्य की अनहोनी रक्त सुखाती
बीरो के हाथ से चाय वाला भगोना छूट गया। चाय
से तो उसने बचा ली; परन्तु गर्म चाय से उसका हाथ जल
"ऐसा कर।" धन्तो ने उठकर बैठते हुए कहा, "अग
मेरी धर्म की बहन है तो ताई से कह, मुझे आज ही चाची के
गालब छोड़ आए। वहां से मैं वापस नहीं आऊंगी और वहीं
को भी बुलवा लूंगी।"

बस्सो रोड़े चूल्हे में रखकर अन्दर आ गई। वह भी चाय
घूंट पीकर कुछ गर्मी चाहती थी। दूसरे बच्चे सभी सोए
उनको कुछ पता नहीं था, घर में क्या हो रहा है। बीरो ने छल
में चाय डालते हुए कहा, "अम्मां, एक काम तेरे लिए भी है,
करना भी जरूर है।"

"क्या काम है?"

"धन्तो को इसकी चाची के पास गालब छोड़कर आना है
सुबह की गाड़ी से।" बीरो ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें बस्सो के चेह
पर गाड़ दीं। धन्तो भी आकुल दृष्टि से ताई को विधाता के रूप
देख रही थी कि पता नहीं, क्या निर्णय देती है।

"भगवान का नाम ले बेटी! गांव में मेरी चुटिया खिंचवानी
है? तेरा बापू तो मुझे काट ही डालेगा। ऐसी बात न कहना फि
से।" बस्सो ने भय से मुंह खोलते हुए चाय का बर्तन नीचे रख
दिया।

"गांव क्या बिगाड़ लेगा? पहले भी करके खाते थे, आगे भी
करने पर ही मिलेगा। गरीबों के घर कोई वैसे खाने को नहीं डाल
देगा।" बीरो को अपनी हाथ की मेहनत पर गर्व था। "बापू पीट
ही तो लेगा, जान से मारने से रहा। यह तो सारी उमर आशीष
देगी।" वह हर प्रकार के खतरे से दो-दो हाथ करने को तैयार
थी।

"बस ताई, तू आगे मत आना, मुझे अगले स्टेशन से गाड़ी
चढ़ा आ, मैं खुद ही गालब चली जाऊंगी। अगर यहां मुझे देख
लेंगे तो जीवन-भर के लिए गले में फंदा पड़ जाएगा।" धन्तो ने
बस्सो की इस प्रकार मिन्नत की कि किसी न किसी प्रकार उसको
दया आ जाए।

अब तेरी हवा की तरफ भी कोई नहीं देख रहा।"

[redacted] कुछ समय तक उनको जाते हुए देखती रही, फिर उ
आंखों में आंसू भर आए। जब वे दिखाई देनी बन्द हो गईं, [redacted]
सांस लेकर उसने अपने आंसू पोंछ डाले। जब वह गांव की
लौटी तो सोच रही थी, 'मैं तो डूबी ही हूं, तुझे तो किनारा मि

धन्तो के पैर में बहुत दर्द था और वह लंगड़ाती चल रही
लेकिन बस्सो को दर्द बता वह रुकना नहीं चाहती थी। वह द
तले जबान दबाकर पीड़ा सहती तथा बस्सो के साथ-साथ च
का प्रयत्न करती जा रही थी।

"अब बहुत अंधेरा नहीं, तू जल्दी कदम उठा।" बस्सो के लि
यह नेकी का काम नहीं था; परन्तु औरों ने उसके गले में यह जब
दस्ती का ढोल बांध दिया था, उसको बजाना पड़ रहा था। बस
को उसकी पिछली रामकहानी का पता था और अब [redacted] चाह
थी कि जल्दी रेल का स्टेशन आ जाए और उसको विदा करके स
निश्चिन्त हो जाए।

"हाय ताई, कम्बख्त मेरा पैर जमीन पर नहीं लगता!" धन्
हर क्षण बढ़ती तकलीफ को न सह सकी।

"ला, मैं कपड़ा और कस दूं, ताकि 'कैरों' टेशन तक पहुं
जाएं।" वह बैठकर धन्तो का पैर बांधने लगी। सुजन पहले [redacted] कहीं
अधिक थी और घुटने तक चढ़ आई थी। अब उसने धन्तो को छुआ
तो बोल उठी, "अरी बिटिया, तुझे तो बुखार चढ़ा हुआ है!"

"ताई, तभी मेरा सारा शरीर टूटता जा रहा है।"

"अब क्या करेगी?"

"ताई, मुझे कुछ नहीं होता, तू घबरा नहीं।" धन्तो ने बस्सो
का हतोत्साह होना जान लिया था, इसलिए उसके अन्दर भी धीरे
जैसे साहस ने स्थान ले लिया था। उसकी पीड़ा भी अब दुगुनी हो
गई थी; परन्तु अब उसमें सहन करने की शक्ति आ गई थी। धन्तो
लंगड़ाती हुई और तेज चल पड़ी।

बस्सो ने घूमकर देखा, उसको गाड़ी की रोशनी नजर आने
लगी। स्टेशन यहां [redacted] आधा मील रह गया था। इस अन्तिम फासले
में धन्तो निढाल [redacted] चुकी थी। बुखार के कारण वह हलका-हलका
लगी। और यहां [redacted] तो मानो हजारों शूल बींध दे

होंगी कि एक मोटर की रोशनी चमक पड़ी।

बस्सो उठकर पहले सड़क पर आ गई, और धन्तो भी कराह संगड़ाती बड़ी कठिनता से शीशम के नीचे आ गई। जब रोश निकट आ गई, बस्सो ने मोटर खड़ी करने के लिए हाथ दिय ड्राइवर ने गाड़ी खड़ी कर दी। परन्तु वह बस की जगह ट्र निकला और बस्सो यह देखकर मायूस हो गई; पर गाड़ी वाले पूछ ही लिया, "माई, कहां जाना है?"

"अरे भइया, गालब की राह तक जाना है।"

"माई, जगरांव तक जाना है तो बैठ जा, बारह आने सवारी के लगेंगे।" क्लीनर ने आगे की खिड़की खोलते हुए कहा।

बस्सो ने हामी भरने से पूर्व धन्तो की ओर देखा। उसने शीघ्रता करने के लिए सिर हिलाया कि यह अवसर तो भगवान ने दिया है, देर क्यों लगाती है।

ट्रक खाली था। धन्तो पीछे से न चढ़ सकी, तब बस्सो ने उनसे मिन्नत की, "अरे भइया, तू हमें अगली सीट पर बिठा ले।" क्लीनर को तरस आ गया। वह पीछे जाने के लिए आगे की सीट से उतर आया। वे ताई-भतीजी आगे की सीट पर बैठ गईं और ट्रक चल पड़ा।

जगरांव पहुंचकर जब वे गालब की तरफ जाने वाली बस पकड़ने गईं, तब धन्तो ने ताई के हाथ पकड़ते हुए विनय की, "ताई! गालब गई तो पता नहीं कोई और मुसीबत खड़ी हो जाए! यहां तूने इतना कष्ट उठाया, थोड़ा और कष्ट कर। मुझे यहां से सीधी काउकी गांव ले चल।" धन्तो बड़ी आतुर और असहाय-सी खड़ी थी। बस्सो से उसकी भरी आंखें फिर न देखी जा सकीं। उसने दिल न मानते हुए भी 'हां' कर दी। वे धीरे-धीरे पूछती शहर से बाहर आ गईं और काउकी के मार्ग पर चल दीं। धन्तो अब अपने को किसी भय से मुक्त समझती थी। दर्द यद्यपि उसको रह-रहकर उठ पड़ता था; लेकिन अन्दर की एक खु उसकी पीड़ा को दबा रही थी।

जब वे आधे रास्ते में पहुंचीं, तब खेत से गांव को जाते हु उन्होंने एक बैलगाड़ी को आते देखा। बस्सो ने उसको हाथ हिला हुए पुकारा, "अरे भाई गाड़ी वाले! मेरी बीमार बेटी को बिठ लो।"

ने सिर नहीं उठाया। मोदन ने 'सत् श्री अकाल' कहा, धन्तो जवाब भी न दिया गया। खुशी, धड़कन, शंका और भय की सम्मिलित भावुकता ने उसको उस समय मासूम बना दिया था।

"तू ताई को साथ नहीं लाया?" धन्तो के आंसू छलछला आये थे और वह कांप रही थी।

"मैं जानकर उसको घर छोड़ आया हूं। तू उठ, घर को चलें।" मोदन के शब्दों में अपनत्व और भरोसा था।

"नहीं।" धन्तो ने सिर हिला दिया।

"क्यों?" मोदन निराश हो गया था और उसके उल्लसित हृदय को अकस्मात् आघात पहुंचा। धन्तो के आने की खुशी में उसके पैर जमीन पर नहीं लगते थे।

"तुझे पता है, मेरे साथ क्या-क्या बीता है?" धन्तो ने अभी तक सिर ऊपर नहीं उठाया था, पर मोदन के शब्द उसके सारे घावों में शहद भर गए थे।

"जो बीत गया, उसे भुला दे और मेरे साथ घर चल।" मोदन उसको घर ले जाने के लिए जल्दी कर रहा था।

"जो मेरे साथ बीती है, उसे मैं भूल नहीं सकती।" आंसू उसके पैरों के मध्य आ गिरे।

"अब चलो, अब क्या बात है?"

"बस, एक ही बात है।"

"बताओ तो सही!" मोदन उस समय धन्तो के लिए सूली चढ़ने तक के लिए तैयार था।

"जो तूने मुझे रखना है, तो तू मेरी बांह पकड़ ले, नहीं तो भलेमानुस, तू यहीं से घर लौट जा।" धन्तो से अपना रोना न रोका जा सका और उसने अपने हाथों से मुंह ढक लिया।

"बस, इतनी ही बात थी! तू उठ, रो मत। तेरी खातिर अब मैं मरूंगा। तू तो नासमझ ही रही। यदि तू साहस करके मेरे गांव आ सकती है, तो क्या मैं इतना गया-गुजरा हूं कि तुझे रख भी नहीं सकता? उठ, अब तू रो मत, मैं अपनी जान तुझ पर वार दूंगा। अब तू फिकर काहे का करती है!" मोदन भावुक होकर बोल रहा था।

मोदन ने उसको बांह पकड़कर हिलाया। वह चुन्नी के साथ मुंह पोंछकर उठ खड़ी हुई और पीछे-पीछे चल पड़ी।

"यह धीवर दक्षिणा कितनी दे सकता है ?"

"दक्षिणा तो देगा; परन्तु औरत तो उसको मिल जाए।"

"नम्बरदार, बता, औरत गई किस दुख से ?" थानेदार ने टटोलना चाहा।

"मुझे तो शक है कि लौंडा अभी अनजान है, इस कंजर सौंकिया को अवश्य छेड़ा होगा। लोग भी यही कहते हैं, इसने का नहीं; बल्कि अपना ब्याह किया है।" नम्बरदार ने जैसी में बातें होती थीं, उन्हींके आधार पर थानेदार को बता दिया।

नम्बरदार की कही बात थानेदार को भी कुछ दिल लगी।

"अच्छा, तू इससे पहले बात कर ले।" थानेदार उनको अकेला छोड़कर आप अन्दर दफ्तर में चला गया।

थानेदार के चले जाने के बाद नम्बरदार ने निक्के के साथ बात की कि वह नांवे बिना काम नहीं करेगा। नांवे की बात सुनकर निक्के के गले में सांस अटक गई। अन्त में मना करते हुए भी वह दो सौ रुपये पर राजी हो गया। उसने बारह सौ की कबूतरी पर दो सौ रुपये और दांव पर लगा दिए।

तीसरे दिन निक्के को सन्देसा मिला कि बन्तो तो कांउकी में मोदन के घर पर है, जहां उसकी पहले सगाई हुई थी। उसने मोदन की अन्य बातों के सम्बन्ध में भी चोरी-चोरी पता चलाया। तब उसे पता चला कि मोदन फीसे के घर बलघाते समय आया था; इसलिए अब उसे विश्वास हो गया था कि सौंकिया का मोदन से पहले भी प्यार था और उसका फौले तथा कारे पर शक करना फिजूल था। वह नम्बरदार के पास भागा-भागा गया और थानेदार के पास आकर सारी बात बताई।

निक्का आज पूरे उत्साह के साथ थानेदार के यहां से वापस आ रहा था।

शाम के तीन बजे थे, जब मोदन के घर पुलिस ने छापा मारा। मोदन घर में नहीं था, बल्कि पास ही कहीं ताश खेल रहा था। उस समय उसकी मां और बन्तो घर पर थीं। निक्के ने आते ही बन्तो की तरफ इशारा किया, "हुजूर, यह बैठी है!" निक्के को खबर करने वाला व्यक्ति भी पास में था। चार सिपाही और गांव का नम्बरदार—सभी घर में घुस गए थे।

झगड़ा क्या ? कोई मुसीबत मेरे पीछे पड़ जाएगी । क्यों न मैं भाग जाऊं !

[illegible] और बन्तो [illegible] की [illegible] सिपाहियों के पीछे [illegible] । [illegible] [illegible] हुई पर [illegible] थी, पर [illegible] अब [illegible] [illegible] [illegible] है ।

"बीबीजी, मामला बहुत संगीन, बड़ा सरकारी मामला है । [illegible] तो सरकार की ड्यूटी पूरी करनी है ।" थानेदार अब भी [illegible] हुआ था ।

"जी, जब तक मेरा मालिक नहीं आ जाता, मैं नहीं जाऊंगी [illegible] की [illegible] नहीं थी । "मैंने किसीकी क्या चोरी की है ? मुझे क्यों पकड़ा जा रहा है ?" वह विलाप करने के साथ [illegible] रही थी ।

"बीबीजी, मुझे कुछ पता नहीं, मेरे पास अदालत की तरफ [illegible] वारण्ट है । मैंने तुम्हें पकड़कर इस अदालत में एक बार पेश [illegible] देना है । मेरा इसके अतिरिक्त कोई काम नहीं और न ही मुझे [illegible] और पता है ।" थानेदार ने बड़े शिष्ट ढंग से उसे समझाते [illegible] कहा ।

बन्तो ने सोचा, उसके बापू के भी वारण्ट निकले थे, फिर इसके बाद [illegible] जेल भेज दिये होंगे । मुझे भी क्या जेल भेजेंगे ? जेल के ख्याल से वह कांपने लगी । घर में और तमाशा देखने वाले आ गए । मोहन भी भागा-भागा घर पहुंचा । वह घबरा रहा था कि पुलिस का क्या किया जाए । उसने झट नम्बरदार को याद किया और मां को उसके घर भेज दिया । मोहन ने थानेदार के आगे होते हुए कहा, "जी, मुझे ले चलिए, जहां ले जाना है; इसे तो मैं जाने नहीं दूंगा ।"

"तेरे घर की हुकूमत है ? तू पकड़ने क्यों नहीं देगा ? मैं पकड़कर दिखाता हूं ।"

सरदार ताव खाकर झट थानेदारी वाले रौब में आ गया था ।

"नहीं जी, आप पकड़ तो सकते हैं, मेरा मतलब है, मुझे ले चलो, इस बेचारी का क्या दोष है ?" मोहन एक [illegible] डांट में ढीला [illegible] गया था ।

"इसके वारण्ट हैं, इसको अदालत में पेश करना है, तुझे [illegible] का शौक है तो तू भी चल ।" फिर थानेदार ने बन्तो को भी

बहुत देर नहीं लगाई। वह जानते थे कि वहीं पर अधिक सख्ती है था। के बराबर पकड़े ही गए और पुलिस के तारों के बेरन दूर क्या जल्द पहुंचे पहुंच गए। थोड़ी उनको देखकर कुछ हो गया। उसमें सभी के हुए एक कोने पर मिलाया हुआ था।

मुख्तार ने एक परिचित सिपाही से कहा, "सरदार साहब को कहो, बाहरी गांव से मुख्तार आया है।"

"अभी आता हूं।" सिपाही थानेदार के कमरे की तरफ मुड़ गया।

मिस्त्री भी तरह तरह कि वे कोई उनका मौजूद की हिफाजत को ही आए हैं। वह बहुत खुश था कि बच्चों को उसका मिल गया है। उसके बाद भी उसे बार बार तारीख बुलाते मजबूर था रहे थे; परन्तु कई लोगों ने उसे विश्वास भी दिया कि यदि बच्चों ने उसके हक में बयान नहीं दिया तो उनकी पुलिस भी उसे हाथ नहीं लगेगी।

थानेदार ने जैसे ही मुख्तार को देखा, उसकी हंसी न रुक सकी।

"आ भाई, बड़े बदमाश!"

"बड़ा बना दो, छोटा बना दो, यह तो आपके ही हाथों में है सरकार!" फिर उसने थानेदार को अभिवादन किया जिसको देखकर उसने भी अपने हाथ जोड़ दिए।

फिर थानेदार ने प्रत्युत्तर में अभिवादन कर, आने का कारण पूछा।

"कारण किसे बताएं, तुम हमारे आदमी घेर लाए हो। कम से कम हमसे भी थोड़ा-बहुत पूछ लेते।" मुख्तार थानेदार को जिता देना चाहता था कि हमारी एक तरह से नाक में नाक कट गई।

"पूछने वाली उसमें कोई बात नहीं थी, दफा सौ का वारंट था। उसकी तामील होनी जरूरी थी।" थानेदार ने मुख्तार को हमदर्दी के साथ समझाया। वैसे वह समझता था कि इस वारंट को भी वह कई तरीकों से टाल सकता था। "तुम चाहते क्या हो?"

"हम लड़की वापस चाहते हैं, आपसे छिपाना क्या!" मुख्तार ने दिल की बात सरदार के सामने रख दी।

"लड़की तुम्हारे कहने के उलट तो नहीं जाती?"

"उलट तो वह मरने पर भी नहीं जा सकती।" मुख्तार ने पूर्ण विश्वास के साथ कहा। वह समझता था कि जो स्वयं चलकर आ गई है, वह अब कैसे बदल जाएगी।

गई थी, वह भी डर जाती रही।

"सुबह भाइयों को कह देना, चिन्ता के मारे घबराएँ नहीं। घर के लिए पक्का कर देना।" अकालियों ने गुस्से से हाथ हिलाते हुए कहा।

"मुझे तो ये मारने पास नहीं आने देते।" मोहन कुछ जल्दी बोला।

"तू चिन्ता मत कर, रात को थानेदार तुम्हें सभी से मिला देगा, हमने उसे मना लिया है।" नछत्तर ने मोहन को कर आश्वासन दिया।

"सुबह चार रुपये लेते आना, मेरे पास तो यहां कानी कौड़ी भी नहीं।"

"तू घबरा मत, सब प्रबन्ध हो जाएगा। हम रात भी यहीं भाइयों के पास सोएँगे।" उसने जाते-जाते फिर कहा, "तुम्हारा खाना बसन्तो लेकर आएगी।"

जब नछत्तर और बचना थाने से बाहर निकल गए, तब मोहन ने सीने पर हाथ रखकर दूर बैठी बन्तो को समझाया कि वह घबराए नहीं, सब ठीक-ठाक है। बन्तो ने भी वापसी इशारे में समझा दिया कि दिल ठिकाने पर है—घबराने की कोई बात नहीं।

२५

आज जिला कचहरी में बहुत रौनक थी, परन्तु इतनी भीड़ होते हुए भी मानवता के लिए वहां कोई स्थान नहीं था। पैसे और स्वार्थों के आधार पर वहां मित्रता थी, और परस्पर मनचाहा गत था।

थानेदार ने दोनों फरीकों के लोगों को बन्तो के निकट नहीं आने दिया था। आदमी दोनों तरफ से ही इकट्ठे होकर आ गए थे। नछत्तर ने बचने को रात की गाड़ी से साले के पास भेज दिया था कि सुबह चार-पांच हैकड़ लौंडों को साथ लेकर आ जाए। वह आशा से अधिक मदद ले आया था। थानेदार को शंका थी कि शायद लौंडिया के बयान के बाद कहीं दोनों फरीकों में झगड़ा न जाए।

निधके ने अपना खूंटा पक्का करने के लिए फीले के साथ अपना

दुखी था, क्योंकि न वह घर का रहा था न घाट का।

"उनकी सारी बातों को मैं कैसे ठीक समझता हूं? मैंने सौगन्ध दी है मेरे लड़के के साथ ब्याह दिल से।" फीके ने एक तरह से ही खत्म कर दी। कारा पूरा समय दोनों की बातें सुन रहा था, अन्दर ही अन्दर उसे निक्के की बातों पर गुस्सा भी आ रहा था।

"अब तू लड़की के बारे कुछ मैं बयान करवाकर बर्बाद कम। कचहरी वाले न ले जाएं।" फिर निक्का यह जान ही गया कि पम्मो ने उसके हक में बयान नहीं देना। हां, फीका अगर उसे प्यार से समझाकर बहोशाल ले जाए तो बात बन सकती है। इससे मेरी भी बच बन जाएगी।

"निक्के, जब तेरे बस में था, मैंने सब कुछ किया। अब तो विवश हूं; लड़की मेरी तरफ मुंह करके भी नहीं देखती। मैं क्या कर सकता हूं!" फीके ने वास्तविक स्थिति समझा दी।

निक्का यह समझता था कि फीका कुसाथ की बात नहीं करता किन्तु बारह सौ रुपये डूब जाने से उसके प्राण सूख रहे थे।

"अगर लड़की मेरे साथ न चली तो बारह सौ रुपये तैयार रखना।" निक्के ने एक तरह से धमकी दी।

"रुपये तो नहीं, हां, जोड़ तैयार करके रखे हैं तेरे वास्ते।" कारे ने गुस्से से कहा। "तू तो कहता था कि हमने तुझे ठग लिया है और लड़की को किसी और घर में बिठा दिया है।"

"तुमने रुपये नहीं लिए?" निक्का क्रोध में कह तो गया परन्तु वह कचहरी में उनसे झगड़ना नहीं चाहता था, क्योंकि धन्ने के बा... पर इसका विपरीत असर पड़ सकता था।

"हमने तुमसे एक तिनका तक नहीं लिया और न ही तेरा हमने कुछ देना है। जो तेरा जोर लगता है, लगा ले।" कारे ने निक्के को साफ-साफ कह सुनाई। उसने फौजी आंखों से ... दिया था कि निक्का अब रुपये वापस नहीं ले सकता, चाहे वह अब हाईकोर्ट तक का जोर लगा ले। कारा यह भी सोचता था कि यदि निक्के का पक्ष मजबूत होता तो वह फीके के पास जाकर 'रीं-रीं' करता। दूसरी बात यह भी थी, उसे निक्के द्वारा निकाली हुई गालियों का दुःख था। यही कारण था कि वह फीके की चिन्ता किए बिना ही बोल पड़ा था। उसने फीके से भी कह दिया कि अगर तू मेरा

निक्का और उसका वकील इस बात से सुन्न हो गए। फिर निक्के के वकील की बारी आई।

"श्रीमान, धन्तो ब्याहता स्त्री है, उसका स्वामी उपस्थित है, लड़की के साथ तो गुण्डागर्दी हुई है।"

धन्तो ने एक क्षण के लिए क्रोध से आंखें ऊपर उठाई; पर वहां कौन ऐसा था, जो उसके मन की स्थिति को समझता मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा, "इसका स्वामी कौन है?"

वकील ने गुरमेलू को आगे कर दिया। मजिस्ट्रेट औंदे। देखकर हंस पड़ा।

"वाह वकील साहब! लड़का तो बड़ा जवान ढूंढकर ला हो!"

"जी, गांव में इस प्रकार चलता रहता है।" वकील ने लज्जित होकर कहा।

"अगर गांव में ऐसा ही होता रहता है, तो फिर शिकायत क्यों करने आते हैं?" शायद मजिस्ट्रेट की अन्तरात्मा में ऐसे समाज के प्रति विद्रोह उत्पन्न हो गया था, जिसको वह किसी तरह भी व्यक्त नहीं कर सकता था।

"श्रीमान, कानून का फर्ज है कि मजलूम की रक्षा करे।" वकील ने अपने अधिकार की बात पर जोर दिया।

"बिलकुल दुरुस्त! कानून अन्धा नहीं, उसने यही तो देखना है कि वास्तव में मजलूम है कौन।" मजिस्ट्रेट अपनी बात पर फिर अड़ गया।

इसी बात को मोदन के वकील ने पकड़ लिया, जो मजिस्ट्रेट साहब की पहली धमकी से हतोत्साह हो गया था। वह बोला, "सही अर्थों में मजलूम धन्तो है श्रीमानजी, जिसको इसके गरीब और अफीमची बाप ने बारह सौ रुपये में बेच दिया। सबूत के लिए आप धन्तो के पति को देख सकते हैं। गुरमेलू के नाबालिग होने के कारण कानूनी तौर पर यह ब्याह किसी प्रकार भी जायज नहीं। इसके अतिरिक्त मैं श्रीमानजी का ध्यान एक आवश्यक बात पर दिलाना चाहता हूं।" वकील ने एक क्षण रुककर मजिस्ट्रेट का ध्यान खींचते हुए कहा, 'धन्तो पति की अल्पायु के कारण घर बैठ नहीं निकलती, वरन् उसका ससुर बनाम निक्का आधी रात को उसके साथ बलात्कार करना चाहता है। उसका ससुर निक्का ...

उसका दम तक पीछा करता है। श्रीमान, धन्नो उस समय अपने सतीत्व की रक्षा के लिए गली में छलांग लगा देती है, जिस कारण उसका गट्टा टूट जाता है। श्रीमान यह देख सकते हैं।"

धन्नो मुंह पर हाथ रखकर रो पड़ी। वह चाहती थी कि अदालत का फर्श फट जाए और वह उसमें समा जाए। अदालत के अन्दर और बाहर निस्तब्धता थी। मजिस्ट्रेट भी गुस्से में अत्यन्त क्रोधित हो उठा; परन्तु फिर अपने कर्तव्य को देखकर गम्भीर हो गया। भोला और काका भी यह सुनकर अदालत के दरवाजे से परे हट गए। उनके दुःख का अनुमान लगाना अत्यन्त कठिन था। सीने के अन्दर सोया फणियर जाग पड़ा, जिसने उनके रोम-रोम को काटना शुरू कर दिया था।

निक्के के वकील ने अपने विरोधी वकील की छोड़ी हुई बात को पकड़ते हुए कहा, "मेरे साथी वकील ने एक झूठी कहानी बड़े दिलचस्प ढंग से बयान की है; पर वास्तव में घटना····।"

"ठहरो !" मजिस्ट्रेट ने मेज पर हाथ मारते हुए सबको रोक दिया। शायद इस कहानी ने उसकी भावनाओं को गहरी ठेस पहुंचाई थी। उसने रोती और कांपती जा रही धन्नो को ध्यान से देखा, उसको लड़की के निर्दोष होने में रत्ती-भर भी सन्देह न रहा। फिर उसने पूछा, "इसका कसूर कहां है ?"

"श्रीमानजी, उपस्थित हूं।" निक्का हाथ जोड़े हुए था और अपने हर गुनाह को मुख पर गम्भीरता की गहरी पर्त चढ़ाकर ढकने का प्रयत्न कर रहा था।

मजिस्ट्रेट ने तीक्ष्ण नजरों से निक्के को देखा। एक सूक्ष्म घबराहट निक्के में विद्यमान थी, जो समय [illegible] हाकिम से छुपी न रह सकी थी। अगर निक्का अबोध बालक होता तो वह बलात् कायम किया हुआ संयम कब का टूट जाता। फिर मजिस्ट्रेट ने धन्नो की तरफ मुंह किया।

"क्यों बीबी, जो आप वकील ने कही है, वह ठीक है ?"

धन्नो ने भरी आंखों से सिर नीचा किए हुए 'हां' कह दी। उसको इस वकील ने जितना कुछ समझाया था, वो वह घबराकर भूल चुकी थी।

गलत हामी भर रही है और···।"

"मोदन कौन है ?" मजिस्ट्रेट ने सिर ऊपर किया।

"श्रीमानजी, मैं हूं।" मोदन ने सम्मान करते हुए झुककर कहा, "एक साल पहले हम दोनों की मंगनी हो चुकी थी। इस साथ तो जबरदस्ती हुई है। इसने तो मेरे पास आकर अपनी जा बचाई है श्रीमान् !"

"अच्छा, यह सब बन्द करो। दफा सौ का वारण्ट इतनी बह नहीं मांगता है।" मजिस्ट्रेट ने निक्के के वकील को भी बोलने मना कर दिया। "बीबी ! अब तू बता, किसके साथ जाना है ?"

घन्तो ने साहस करके भरी अदालत में मोदन का हाथ पक लिया, और फिर कहा, "जी···जी मैंने इसके साथ जाना है।"

मजिस्ट्रेट की आत्मा खुश हो गई; परन्तु उसने गम्भीरता फिर पूछा, "बीबी, सोच ले तू, इसके डर या धमकी के कारण तो ऐसा नहीं कर रही है ?"

"नहीं जी, मैं अपनी इच्छा के साथ इसके पास रहना चाहती हूं।" अब घन्तो में एक ऐसी शक्ति जाग पड़ी थी, जिसका उसे खुद भी पता नहीं था।

"जा बीबी, फिर तुझे इससे कोई नहीं छीन सकता।" मजि- स्ट्रेट ने अपना निर्णय संक्षेप में कह सुनाया।

"श्रीमान, एक और प्रार्थना है।" चुपचाप खड़े थानेदार ने मजिस्ट्रेट का ध्यान खींचते हुए कहा, "बाहर दोनों फरीकों में लड़ाई होने का खतरा है।"

"आप लड़की की गांव तक रक्षा करें। बात बिगड़ती देख फौरन गिरफ्तारी कर लें। आप किस वास्ते हैं, यदि लड़ाई भी हो जाती है !" मजिस्ट्रेट ने थानेदार को हिदायत देते हुए कहा।

थानेदार ने हामी में सिर हिलाया और अभिवादन करके विदा ली।

घन्तो मोदन को अदालत से जीतकर बाहर आ गई। उसकी प्रसन्नता आज प्रच्छन्न रूप में प्रकट होना चाहती थी; परन्तु लोगों की भीड़ में उसकी आंखें जमीन में गड़ी हुई थीं और [illegible] लज्जा के कारण मरी जा रही थी।

बीरो बिना पूर्व वायदे के शाम की गाड़ी के लिए स्टेशन पहुंची

उसकी शुभ चिन्ता कर रहा।" दीदी उसकी प्रत्येक क्रिया को ध्यान कर देख रही थी।

"दीदी, मैं तेरा अनुमान कैसे लौटाऊँगी?" कहते कहते वे उसके आँसुओं से भरी भरी हुई थी। उसने पुनः उसके हाथों को अपने हाथों में दबा लिया।

□

कुछ अन्य लोकप्रिय उपन्यास

शतरंज के मोहरे	अमृतलाल नागर	४·००
अपने खिलौने	भगवतीचरण वर्मा	५·००
तीन वर्ष	"	४·००
महाकाल	गुरुदत्त	६·००
भैरवी चक्र	"	६·००
वयं रक्षामः	आचार्य चतुरसेन	५·००
गोली	"	५·००
घरौंदा	रांगेय राघव	३·००
राई और पर्वत	"	३·००
पुष्पगंधा	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	४·००
सोने का पिंजरा	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	३·००
प्रेमिकाएं	विश्वम्भर मानव	३·५०
चढ़ती धूप	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	४·००
कलाकार का प्रेम	मानकसिंह	३·००
अजीब आदमी	इस्मत चुग़ताई	२·५०
प्रीत और पैसा	सोहनसिंह सीतल	३·००
एक चादर मैली सी	राजेन्द्रसिंह बेदी	३·००
तीन पहिये	ख्वाजा अहमद अब्बास	४·००
बिन ब्याही मां	गुरबख्शसिंह	३·००

•

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी॰ टी॰ रोड, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

हिन्द पॉकेट बुक्स

करता है, आपने इस पुस्तक को पसंद किया और आप चाहेंगे कि ऐसी ही रोचक तथा अ न्य पुस्तकें आपको पढ़ने के लिए मिलें। पॉकेट बुक्स द्वारा उपन्यास-कहानी, कविता-ना नाटक, संस्मरण, यात्रा, हास्य-व्यंग, स्वास्थ्य-वि तथा आत्मविकास आदि विभिन्न विषयों पर विदेश के प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इन पुस्तकों की साज-सज्जा और छपाई सुन्दर है, इसके बावजूद मूल्य इतना कम कि पाठक इन्हें आसानी से खरीद सकता है।

हिन्द पॉकेट बुक्स सभी अच्छे पुस्तक-विक्रेता समाचारपत्र-विक्रेताओं, रेलवे बुक-स्टालों और रो वेज बुक-स्टालों से मिलती हैं। यदि आपको कि तरह की कठिनाई हो तो आप सीधे हमें लिखि दस रुपये मूल्य की पुस्तकें एकसाथ मंगाने पर डा व्यय नहीं लगता।